

1 राजा

1 इस समय दाऊद बहुत अधिक बूढ़ा हो गया था। वह अपनी गरमाई खो चुका था। उसके सेवक उसे कम्बल ओढ़ाते थे किन्तु वह फिर भी ठंडा रहता था। इसलिये उसके सेवकों ने उससे कहा, “हम आपकी देखभाल के लिये एक युवती की खोज करेंगे। वह आपके समीप लेटेगी और आपको गरम रखेगी।” इसलिये राजा के सेवकों ने इम्राएल प्रदेश में चारों ओर एक युवती की खोज आरम्भ की। वे राजा को गरम रखने के लिये एक सुन्दर लड़की की खोज कर रहे थे। उन्हें अबीशग नाम की एक लड़की मिली। वह शूनेमिन नगर की थी। वे युवती को राजा के पास ले आए। लड़की बहुत सुन्दर थी। उसने राजा की देख-रेख और सेवा की। किन्तु राजा दाऊद ने उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं किया।

5-6 राजा दाऊद का पुत्र अदोनियाह बहुत घमण्डी हो गया। उसने घोषणा की, “मैं राजा बँगाँगा।” अदोनियाह की माँ का नाम हग्गीत था। अदोनियाह राजा बनने का बहुत इच्छुक था। इसलिये वह अपने लिये एक रथ, घोड़े और आगे दौड़ने वाले पाँच सौ व्यक्तियों को लाया। राजा ने अपने पुत्र अदोनियाह को कभी सुधारा नहीं। दाऊद ने उससे कभी यह नहीं पूछा, “तुम ये कार्य क्यों कर रहे हो?” अदोनियाह वह पुत्र था जो अबशालोम के बाद उत्पन्न हुआ था। अदोनियाह एक बहुत सुन्दर व्यक्ति था।

7 अदोनियाह ने सरयाह के पुत्र योआब और याजक एब्यातार से बातें कीं। उन्होंने उसकी सहायता की। किन्तु बहुत से लोग उन कामों को ठीक नहीं समझते थे जिन्हें अदोनियाह कर रहा था। वे नहीं समझते थे कि वह राजा होने के योग्य हो गया है। ये लोग याजक सादोक, यहोयादा का पुत्र बनायाह, नातान, नबी, शिमी, रेई और राजा दाऊद के विशेष रक्षक थे। इसलिये ये लोग अदोनियाह के साथ नहीं हुए।

9 तब अदोनियाह ने कुछ जानवरों को मेलबलि के लिये मारा। उसने कुछ भेड़ों, कुछ गायों और कुछ मोटे बछड़ों को मारा। अदोनियाह ने एनरोगेल के पास जोहेलेत की चट्टान पर ये बलियाँ चढ़ाईं। अदोनियाह ने इस विशेष उपासना में अपने साथ आने के लिये अनेक व्यक्तियों को आमन्त्रित किया। अदोनियाह ने

अपने सभी भाईयों, (राजा के अन्य पुत्रों) तथा यहूदा के सम्स्त राज्य कर्मचारियों को आमन्त्रित किया। किन्तु अदोनियाह ने नातान नबी, या बनायाह या अपने पिता के विशेष रक्षक या अपने भाई सुलैमान को आमन्त्रित नहीं किया।

11 जब नातान ने इसके बारे में सुना, वह सुलैमान की माँ बतशेबा के पास गया। नातान ने उससे पूछा, “क्या तुमने सुना है कि हग्गीत का पुत्र अदोनियाह क्या कर रहा है? उसने अपने को राजा बना लिया है और वास्तविक राजा दाऊद इसके बारे में कुछ नहीं जानता। 12 तुम्हारा जीवन और तुम्हारे पुत्र सुलैमान का जीवन खतरों में पड़ सकता है। किन्तु मैं तुम्हें बताऊँगा कि अपने को बचाने के लिए तुम्हें क्या करना चाहिए। 13 राजा दाऊद के पास जाओ और उससे कहो, ‘मेरे राजा, आपने मुझे वचन दिया था कि आपके बाद मेरा पुत्र सुलैमान अगला राजा होगा। फिर, अदोनियाह राजा क्यों बन गया है?’ 14 तब, जब तुम उससे बात कर ही रही होगी, मैं अन्दर आऊँगा। जब तुम चली जाओगी तब मैं जो कुछ घटित हुआ है उसके बारे में राजा को बताऊँगा। इससे यह प्रदर्शित होगा कि तुमने अदोनियाह के बारे में जो कुछ कहा है, वह सत्य है।”

15 अतः बतशेबा राजा के सोने के कमरे में अन्दर उससे मिलने गई। राजा बहुत अधिक बूढ़ा था। शूनेमिन से आई लड़की अबीशग वहाँ उसकी देख-रेख कर रही थी। 16 बतशेबा राजा के सामने प्रणाम करने झुकी। राजा ने पूछा, “तुम क्या चाहती हो?”

17 बतशेबा ने उत्तर दिया, “मेरे राजा, आपने अपने परमेश्वर, यहोवा का नाम लेकर मुझसे प्रतिज्ञा की थी। आपने कहा था, ‘तुम्हारा पुत्र सुलैमान मेरे बाद राजा होगा। मेरे सिंहासन पर सुलैमान शासन करेगा।’ 18 किन्तु अब अदोनियाह राजा हो गया है और आप इसे जानती भी नहीं। 19 अदोनियाह ने मेलबलि के लिये कई जानवरों को मार डाला है। उसने बहुत से बैलों, मोटे बछड़ों और भेड़ों को मारा है और उसने आपके सभी पुत्रों को आमन्त्रित किया है। उसने याजक एब्यातार और आपकी सेना के सेनापति योआब को भी आमन्त्रित किया है। किन्तु उसने आपके पुत्र सुलैमान को आमन्त्रित नहीं किया, जो आपकी सेवा करता है। 20 मेरे राजा, इम्राएल

के सभी लोगों की आँखें आप पर लगी हैं। वे आपके इस निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि आपके बाद कौन राजा होगा। 21जब आप मरेंगे तो आप अपने पूर्वजों के साथ दफनाये जायेंगे। उस समय लोग यहीं कहेंगे कि मैं और सुलैमान अपराधी हूँ।”

22जब बतशेबा राजा से बातें कर रही थी, नातान नबी उससे मिलने आया। 23भेककों ने राजा से कहा, “नातान नबी आये हैं।” अतः नातान ने प्रवेश किया और राजा के पास गया। नातान राजा के सामने धरती तक झुका। 24तब नातान ने कहा, “मेरे राजा, क्या आपने यह घोषणा कर दी है कि आपके बाद अदोनियाह नया राजा होगा? क्या आपने यह निर्णय कर लिया है कि आपके बाद अदोनियाह लोगों पर शासन करेगा। 25आज उसने घाटी में विशेष मेलबलियों भेंट की हैं। उसने कई बैलों, मोटे बछड़ों और भेड़ों को मारा है और उसने आपके अन्य सभी पुत्रों, सेना के सेनापति और याजक एब्यातार को आमन्त्रित किया है। अब वे उनके साथ खा रहे हैं और पी रहे हैं और वे कह रहे हैं, ‘राजा अदोनियाह दीर्घायु हो।’ 26किन्तु उसने मुझे या याजक सादोक, यहोयादा के पुत्र बनायाह या आपके पुत्र सुलैमान को आमन्त्रित नहीं किया। 27क्या यह आपने किया है? हम आपकी सेवा और आपकी आज्ञा का पालन करते हैं। आपने हम लोगों से पहले ही क्यों नहीं कहा कि आपने उसे अपने बाद होने वाला राजा चुना है?”

28तब राजा दाऊद ने कहा, “बतशेबा से अन्दर आने को कहो!” अतः बतशेबा अन्दर राजा के सामने आई।

29तब राजा ने एक प्रतिज्ञा की: “यहोवा परमेश्वर ने मुझे हर एक खतरे से बचाया है और यहोवा परमेश्वर शाश्वत है। मैं तुम से प्रतिज्ञा करता हूँ। 30मैं आज वह कार्य करूँगा जिसका वचन मैंने इसके पूर्व तुम्हें दिया था। मैंने यह प्रतिज्ञा यहोवा इब्राएल के परमेश्वर की शक्ति से की थी। मैंने प्रतिज्ञा की थी कि तुम्हारा पुत्र सुलैमान मेरे बाद राजा होगा और मेरे बाद सिंहासन पर मेरा स्थान वही लेगा। मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करूँगा।”

31तब बतशेबा राजा के सामने प्रणाम करने धरती तक झुकी। उसने कहा, “राजा दाऊद दीर्घायु हों।”

32तब राजा दाऊद ने कहा, “याजक सादोक, नातान नबी और यहोयादा के पुत्र बनायाह से यहाँ अन्दर आने को कहो।” अतः तीनों व्यक्ति राजा के सामने आये। 33तब राजा ने उनसे कहा, “मेरे अधिकारियों को अपने साथ लो और मेरे पुत्र सुलैमान को मेरे निजी खच्चर पर बिठाओ। उसे गीहोन सोते पर ले जाओ। 34उस स्थान पर याजक सादोक और नातान नबी, इब्राएल के राजा के रूप में उसका अधिकार करें। तुम लोग तुरही बजाओगे और यह घोषणा करो, ‘यह सुलैमान नया राजा है।’ 35तब इसके बाद उसके साथ यहाँ लौट आओ। सुलैमान मेरे सिंहासन पर बैठेगा और हमारे स्थान पर

नया राजा होगा। मैंने सुलैमान को इब्राएल और यहूदा का शासक होने के लिये चुना है।”

36यहोयादा के पुत्र बनायाह ने राजा को उत्तर दिया, “आमीन! यहोवा परमेश्वर ने स्वयं यह कहा है! 37मेरे स्वामी राजा, यहोवा ने हमेशा आपकी सहायता की है। यहोवा सुलैमान की भी सहायता करे और राजा सुलैमान आपसे भी बड़े राजा बनें।”

38अतः सादोक, नातान, बनायाह और राजा के अधिकारियों ने राजा दाऊद की आज्ञा का पालन किया। उन्होंने सुलैमान को राजा दाऊद के खच्चर पर चढ़ाया और उसके साथ गीहोन के सोते पर गये। 39याजक सादोक ने पवित्र तम्बू से तेल लिया। सादोक ने, यह दिखाने के लिये कि सुलैमान राजा है, उसके सिर पर तेल डाला। उन्होंने तुरही बजाई और सभी लोगों ने उद्घोष किया, “राजा सुलैमान दीर्घायु हों!” 40सभी लोग नगर में सुलैमान के पीछे आए। वे बीन बजा रहे थे और उल्लास के नारे लगा रहे थे। वे इतना उद्घोष कर रहे थे कि धरती काँप उठी।

41इस समय अदोनियाह और उसके साथ के सभी अतिथि अपना भोजन समाप्त कर रहे थे। उन्होंने तुरही की आवाज सुनी। योआब ने पूछा, “यह शोर कैसा है? नगर में क्या हो रहा है?”

42जब योआब बोल ही रहा था, याजक एब्यातार का पुत्र योनातन वहाँ आया। अदोनियाह ने कहा, “यहाँ आओ! तुम अच्छे व्यक्ति हो। अतः तुम मेरे लिये शुभ सूचना अवश्य लाये होगे।”

43किन्तु योनातन ने उत्तर दिया, “नहीं! यह तुम्हारे लिये शुभ सूचना नहीं है! हमारे राजा दाऊद ने सुलैमान को नया राजा बनाया है। 44और राजा दाऊद ने याजक सादोक, नातान नबी, यहोयादा के पुत्र बनायाह और राजा के सभी अधिकारियों को उसके साथ भेजा है। उन्होंने सुलैमान को राजा के निजी खच्चर पर बिठाया। 45तब याजक सादोक और नातान नबी ने गीहोन सोते पर सुलैमान का अभिषेक किया और तब वे नगर में गये। लोगों ने उनका अनुसरण किया और अब नगर में लोग बहुत प्रसन्न हैं। यह शोर जो तुम सुनते हो, उसी का है। 46सुलैमान अब राजा के सिंहासन पर बैठा है। 47राजा के सभी सेवक राजा दाऊद से यह कहने आये हैं कि आपने यह अच्छा कार्य किया है। वे कह रहे हैं, ‘राजा दाऊद, आप एक महान राजा हैं और अब हम प्रार्थना करते हैं कि आपका परमेश्वर, सुलैमान को भी महान राजा बनाएगा। आपका परमेश्वर सुलैमान को आपसे भी अधिक प्रसिद्ध राजा बनाए और उसे आप जितने महान राजा थे उससे भी अधिक महान राजा होने दे।’ यहाँ तक कि राजा दाऊद भी वहाँ थे, और राजा दाऊद अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे। 48राजा दाऊद ने कहा, ‘इब्राएल के परमेश्वर यहोवा की स्तुति

करो। यहोवा ने मेरे पुत्रों में से एक को मेरे सिंहासन पर बिठाया है और इसे मुझे देखने दिया है।”

49तब अदोनियाह के सभी अतिथि डर गए और शीघ्रता से चले गए। 50अदोनियाह भी सुलैमान से डर गया था। इसलिये वह वेदी तक गया और वेदी के सींगों को उसने पकड़ लिया। * 51तब किसी ने सुलैमान से कहा, “अदोनियाह तुमसे बहुत भयभीत है। अदोनियाह वेदी के पास है। उसने वेदी के सींगों को पकड़ रखा है और छोड़ने से इन्कार करता है। अदोनियाह कहता है, ‘राजा सुलैमान से यह प्रतिज्ञा करने को कहो कि वह मुझे मारेगा नहीं।’”

52इसलिये सुलैमान ने उत्तर दिया, “यदि अदोनियाह यह प्रमाणित करता है कि वह एक अच्छा आदमी है तो मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि उसके सिर का एक बाल भी बाँका नहीं होगा। किन्तु यदि वह कुछ बुरा करेगा तो मार दिया जायेगा।” 53तब राजा सुलैमान ने कुछ व्यक्तियों को अदोनियाह को लाने के लिये भेजा। वे व्यक्ति अदोनियाह को सुलैमान के सामने ले आए। अदोनियाह राजा सुलैमान के सामने आया और झुककर प्रणाम किया। तब सुलैमान ने कहा, “घर जाओ।”

2 दाऊद के मरने का समय लगभग आ पहुँचा। इसलिये दाऊद ने सुलैमान से बातें कीं और उससे कहा, “मेरे मरने का समय निकट आ गया है। जैसे हर एक व्यक्ति का आता है। लेकिन तुम एक शक्तिशाली पुरुष बन रहे हो। 3उन सभी आदेशों का सावधानीपूर्वक पालन करो जिन्हें यहोवा परमेश्वर ने हमें दिया है। सावधानीपूर्वक उसके सभी नियमों का पालन करो, और वे कार्य करो जो उसने हमें कही हैं। सावधानी से उन नियमों का पालन करो जो मूसी की व्यवस्था की किताब में लिखी हैं। यदि तुम इन सभी का पालन करोगे तो तुम जो कुछ करोगे और जहाँ कहीं जाओगे, सफल होंगे। 4और यदि तुम यहोवा की आज्ञा का पालन करते रहोगे तो यहोवा मेरे लिये की गई प्रतिज्ञाओं का पालन करेगा। मेरे लिये यहोवा ने जो प्रतिज्ञा की, वह यह है, ‘तुम्हारे पुत्रों को मेरी आज्ञा का पालन करना चाहिये और उन्हें वैसे रहना चाहिये जैसा रहने के लिये मैं कहूँ। तुम्हारे पुत्रों को पूरे हृदय और आत्मा से मुझमें विश्वास रखना चाहिये। यदि तुम्हारे पुत्र यह करेंगे तो तुम्हारे परिवार का एक व्यक्ति सदा इज्राएल के लोगों का शासक होगा।’”

5दाऊद ने यह भी कहा, “तुम यह भी याद रखो कि सरुयाह के पुत्र योआब ने मेरे लिये क्या किया। उसने इज्राएल की सेना के दो सेनापतियों को मार डाला।

वेदी के सींगों को पकड़ लिया यह प्रकट करता था कि वह दया की भीख माँग रहा है। यदि कोई व्यक्ति निरपराध होता था और वह पवित्र स्थान में भाग कर जाता था और वेदी के कनों को पकड़ता था तब उस व्यक्ति को दण्ड नहीं मिलता था।

उसने नेर के पुत्र अब्नेर और येतेर के पुत्र अमासा को मारा। तुम्हें याद होगा कि उसने उन्हें बदले की भावना से प्रेरित होकर शान्ति के समय इसलिये मारा क्योंकि उन्होंने दूसरों को युद्ध में मारा था। इन व्यक्तियों के रक्त का दाग उसकी तलवार की मूठ और उसके पहने हुए सैनिकों के जूतों पर लगा हुआ था। इसलिये मैं उसे अवश्य दण्ड दूँगा। 6किन्तु अब राजा तुम हो। अतः तुम्हें उसे इस प्रकार दण्ड देना चाहिये जिसे तुम सबसे अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण समझो। किन्तु तुम्हें यह निश्चय कर लेना चाहिये कि वह मार डाला जाये। उसे बुढ़ापे की शान्तिपूर्ण मृत्यु न पाने दो!

7“गिलाद के, बर्जिल्लै के बच्चों पर दयालु रहो। उन्हें अपना मित्र होने दो और अपनी मेज पर भोजन करने दो। उन्होंने मेरी तब सहायता की, जब मैं तुम्हारे भाई अबशालोम से भाग खड़ा हुआ था।

8“और याद रखो गेरा का पुत्र शिमी तुम्हारे साथ यहाँ है। वह बहुरीम के बिन्थामीन परिवार समूह का है। याद रखो कि उसने, उस दिन मेरे विरुद्ध बहुत बुरी बातें की, जिस दिन मैं महनैम को भाग गया था। तब वह मुझसे मिलने यरदन नदी पर आया था। किन्तु मैंने यहोवा के सामने प्रतिज्ञा की थी, ‘शिमी मैं तुम्हें नहीं मारूँगा।’ 9परन्तु शिमी को दण्ड दिये बिना न रहने दो। तुम बुद्धिमान व्यक्ति हो, तुम समझ जाओगे कि उसके साथ क्या करना चाहिये। किन्तु उसे बुढ़ापे की शान्तिपूर्ण मृत्यु न पाने दो।”

10तब दाऊद मर गया। वह दाऊद नगर में दफनाया गया। 11दाऊद ने इज्राएल पर चालीस वर्ष तक शासन किया। उसने हद्रोन में सात वर्ष और यरूशलेम में तैंतीस वर्ष तक शासन किया। 12अब सुलैमान अपने पिता दाऊद के सिंहासन पर शासन करने लगा और इसमें कोई सन्देह नहीं था कि वह राजा है। 13इस समय हग्गीत का पुत्र अदोनियाह सुलैमान की माँ बतशेबा के पास गया। बतशेबा ने उससे पूछा, “क्या तुम शान्ति के भाव से आए हो?”

अदोनियाह ने उत्तर दिया, “हाँ! यह शान्तिपूर्ण आगमन है। 14मुझे आपसे कुछ कहना है।” बतशेबा ने कहा, “तो कहो।” 15अदोनियाह ने कहा, “तुम्हें याद है कि एक समय राज्य मेरा था। इज्राएल के सभी लोग समझते थे कि मैं उनका राजा हूँ। किन्तु स्थिति बदल गई। अब मेरा भाई राजा है। यहोवा ने उसे राजा होने के लिये चुना। 16इसलिये मैं तुमसे एक चीज माँगता हूँ। कृपया इन्कार न करें।”

बतशेबा ने पूछा, “तुम क्या चाहते हो?”

17अदोनियाह ने उत्तर दिया, “मैं जानता हूँ कि राजा सुलैमान वह सब कुछ करेंगे जो तुम कहोगी। अतः कृपया उनसे शर्नेमिन स्त्री अबीशग को मुझे देने को कहो। मैं उससे विवाह करना चाहता हूँ।”

18तब बतशेबा ने कहा, "ठीक है, मैं तुम्हारे लिये राजा से बात करूँगी।"

19अतः बतशेबा राजा सुलैमान के पास उससे बात करने गई। राजा सुलैमान ने उसे देखा और वह उससे मिलने के लिये खड़ा हुआ। तब वह उसके सामने प्रणाम करने झुका और सिंहासन पर बैठ गया। उसने सेवकों से, अपनी माँ के लिये दूसरा सिंहासन लाने को कहा। तब वह उसकी दायीं ओर बैठ गई।

20बतशेबा ने उससे कहा, "मैं तुमसे एक छोटी चीज़ माँगती हूँ। कृपया इन्कार न करना।" राजा ने उत्तर दिया, "माँ तुम जो चाहो, माँग सकती हो। मैं तुम्हें मना नहीं करूँगा।" 21अतः बतशेबा ने कहा, "शूनेमिन स्त्री अबीशग को, अपने भाई अदोनियाह के साथ विवाह करने दो।"

22राजा सुलैमान ने अपनी माँ से कहा, "तुम अबीशग को उसे देने के लिये मुझसे क्यों कहती हो? तुम मुझसे यह क्यों नहीं कहती कि मैं उसे राजा भी बना दूँ क्योंकि वह मेरा बड़ा भाई है? याजक एब्द्यातार और योआब उसका समर्थन करेंगे।"

23तब सुलैमान ने यहोवा से एक प्रतिज्ञा की। उसने कहा, "मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मुझसे यह माँग करने के लिये मैं अदोनियाह से भुगतान करारिँगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि उसे इसका मूल्य अपने जीवन से चुकाना पड़ेगा। 24यहोवा ने मुझे इज़्राएल का राजा होने दिया है। उसने वह सिंहासन मुझे दिया है जो मेरे पिता दाऊद का है। यहोवा ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की है और राज्य मुझे और मेरे परिवार को दिया है। मैं शाश्वत परमेश्वर के सामने, प्रतिज्ञा करता हूँ कि अदोनियाह आज मरेगा।"

25राजा सुलैमान ने बनायाह को आदेश दिया। बनायाह बाहर गया और उसने अदोनियाह को मार डाला।

26तब राजा सुलैमान ने याजक एब्द्यातार से कहा, "मुझे तुमको मार डालना चाहिये, किन्तु मैं तुम्हें अपने घर अनातोल में लौट जाने देता हूँ। मैं तुम्हें अभी मारूँगा नहीं क्योंकि मेरे पिता दाऊद के साथ चलते समय तुमने पवित्र सन्दूक को ले चलने में सहायता की थी जब तुम मेरे पिता दाऊद के साथ थे और मैं जानता हूँ कि उन सभी विपत्तियों के समय में मेरे पिता के समान तुमने भी हाथ बटायी।" 27सुलैमान ने एब्द्यातार से कहा कि तुम याजक के रूप में यहोवा की सेवा करते नहीं रह सकते। यह सब वैसे ही हुआ, जैसा यहोवा ने होने के लिये कहा था। परमेश्वर ने याजक एली और उसके परिवार के बारे में शीलो में यह कहा था और एब्द्यातार एली के परिवार से था।

28योआब ने इस बारे में सुना और वह डर गया। उसने अदोनियाह का समर्थन किया था, किन्तु अबशालोम का नहीं। योआब यहोवा के तम्बू की ओर दौड़ा और वेदी के सींगों को पकड़ लिया। 29किसी ने

राजा सुलैमान से कहा कि योआब यहोवा के तम्बू में वेदी के पास है। इसलिये सुलैमान ने बनायाह को जाने और उसे मार डालने का आदेश दिया।

30बनायाह यहोवा के तम्बू में गया और योआब से कहा, "राजा कहते हैं, 'बाहर आओ!'"

किन्तु योआब ने उत्तर दिया, "नहीं, मैं यहीं मरूँगा।"

अतः बनायाह राजा के पास वापस गया और उससे वही कहा जो योआब ने कहा था। 31तब राजा ने बनायाह को आदेश दिया, "वैसा ही करो जैसा वह कहता है। उसे वहीं मार डालो। तब उसे दफना दो। तब हमारा परिवार और हम योआब के दोष से मुक्त होंगे। यह अपराध इसलिये हुआ कि योआब ने निरपराध लोगों को मारा था। 32योआब ने दो व्यक्तियों को मार डाला था जो उससे बहुत अधिक अच्छे थे। ये नेर का पुत्र अब्नेर और येतेर का पुत्र अम्मासा थे। अब्नेर इज़्राएल की सेना का सेनापति था और उस समय मेरे पिता दाऊद यह नहीं जानते थे कि योआब ने उन्हें मार डाला था। इसलिये यहोवा योआब को उन व्यक्तियों के लिये दण्ड देगा जिन्हें उसने मार डाला था। 33वह उनकी मृत्यु के लिये अपराधी होगा और उसका परिवार भी सदा के लिये दोषी होगा। किन्तु परमेश्वर की ओर से दाऊद को, उसके वंशजों, उसके राज परिवार और सिंहासन को सदा के लिये शान्ति मिलेगी।"

34इसलिये यहोवादा के पुत्र बनायाह ने योआब को मार डाला। योआब मरुभूमि में अपने घर के पास दफनाया गया। 35सुलैमान ने तब यहोवादा के पुत्र बनायाह को योआब के स्थान पर सेनापति बनाया। सुलैमान ने एब्द्यातार के स्थान पर सादोक को महायाजक बनाया। 36इसके बाद राजा ने शिमी को बुलवाया। राजा ने उससे कहा, "यहाँ यरूशलेम में तुम अपने लिये एक घर बनाओ, उसी घर में रहो और नगर को मत छोड़ो। 37यदि तुम नगर को छोड़ोगे और किद्रोन के नाले के पार जाओगे तो तुम मार डाले जाओगे और यह तुम्हारा दोष होगा।"

38अतः शिमी ने उत्तर दिया, "मेरे राजा, आपने जो कहा है, ठीक है। मैं आपके आदेश का पालन करूँगा।" अतः शिमी यरूशलेम में बहुत समय तक रहा। 39किन्तु तीन वर्ष बाद शिमी के दो सेवक भाग गए। वे गत के राजा के पास पहुँचे। उसका नाम आकीश था जो माका का पुत्र था। शिमी ने सुना कि उसके सेवक गत में हैं। 40इसलिये शिमी ने अपनी काठी अपने खच्चर पर रखी और गत में राजा आकीश के पास गया। वह अपने सेवकों को प्राप्त करने गया। उसने उन्हें ढूँढ लिया और अपने घर वापस लाया।

41किन्तु किसी ने सुलैमान से कहा, कि शिमी यरूशलेम से गत गया था और लौट आया है। 42इसलिये सुलैमान ने उसे बुलवाया। सुलैमान ने कहा, "मैंने यहोवा के नाम

पर तुमसे यह प्रतिज्ञा की थी कि यदि तुम यरूशलेम छोड़ोगे, तो मारे जाओगे। मैंने चेतावनी दी थी कि यदि तुम अन्य कहीं जाओगे तो तुम्हारे मारे जाने का दोष तुम्हारा होगा और मैंने जो कुछ कहा था तुमने उसे स्वीकार किया था। तुमने कहा कि तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे। 43 तुमने अपनी प्रतिज्ञा भंग क्यों की? तुमने मेरे आदेश का पालन क्यों नहीं किया? 44 तुम जानते हो कि तुमने मेरे पिता दाऊद के विरुद्ध बहुत से गलत काम किये, अब यहोवा उन गलत कामों के लिये तुम्हें दण्ड देगा। 45 किन्तु यहोवा मुझे आशीर्वाद देगा। वह दाऊद के सिंहासन की सदैव सुरक्षा करेगा।”

46 तब राजा ने बनायाह को शिमी को मार डालने का आदेश दिया और उसने इसे पूरा किया। अब सुलैमान अपने राज्य पर पूर्ण नियन्त्रण कर चुका था।

राजा सुलैमान

3 सुलैमान ने मिश्र के राजा फ़िरौन की पुत्री के साथ विवाह करके उसके साथ सन्धि की। सुलैमान उसे दाऊद नगर को ले आया। इस समय अभी भी सुलैमान अपना महल तथा यहोवा का मन्दिर बनवा रहा था। सुलैमान यरूशलेम की चहारदीवारी भी बनवा रहा था। मन्दिर अभी तक पूरा नहीं हुआ था। इसलिये लोग अभी भी उच्चस्थानों पर जानवरों की बलि भेंट कर रहे थे।

सुलैमान ने दिखाया कि वह यहोवा से प्रेम करता है। उसके अपने पिता दाऊद ने जो कुछ करने को कहा था, उसने उन सब का पालन किया किन्तु सुलैमान ने कुछ ऐसा भी किया जिसे करने के लिये दाऊद ने नहीं कहा था। सुलैमान अभी तक उच्चस्थानों का उपयोग बलिभेंट और सुगन्धि जलाने के लिये करता रहा।

4 राजा सुलैमान बलिभेंट करने गिबोन गया। वह वहाँ इसलिये गया क्योंकि वह सर्वाधिक महत्वपूर्ण उच्च स्थान था। सुलैमान ने एक हजार बलियाँ उस वेदी पर भेंट कीं। 5 जब सुलैमान गिबोन में था उसी रात को उसके पास स्वप्न में यहोवा आया। परमेश्वर ने कहा, “जो चाहते हो तुम माँगो, मैं उसे तुम्हें दूँगा।”

6 सुलैमान ने उत्तर दिया, “तू अपने सेवक मेरे पिता दाऊद पर बहुत दयालु रहा। उसने तेरा अनुसरण किया। वह अच्छा था और सच्चाई से रहा और तूने उसके प्रति तब सबसे बड़ी कृपा की जब तूने उसके पुत्र को उसके सिंहासन पर शासन करने दिया। 7 यहोवा मेरा परमेश्वर, तूने मुझे अपने पिता के स्थान पर राजा होने दिया है। किन्तु मैं एक छोटे बालक के समान हूँ। मेरे पास, मुझे जो करना चाहिए उसे करने के लिये बुद्धि नहीं है। 8 तेरा सेवक, मैं यहाँ तेरे चुने लोगों, में हूँ। यहाँ बहुत से लोग हैं। वे इतने अधिक हैं कि गिने नहीं जा सकते। अतः शासक को उनके बीच अनेकों निर्णय लेने पड़ेंगे।

9 इसलिये मैं तुझसे माँगता हूँ कि तू मुझे बुद्धि दे जिससे मैं सच्चाई से लोगों पर शासन और उनका न्याय कर सकूँ। इससे मैं सही और गलत के अन्तर को जान सकूँगा। इस श्रेष्ठ बुद्धि के बिना इन महान लोगों पर शासन करना असंभव है।”

10 यहोवा प्रसन्न हुआ कि सुलैमान ने उससे यह माँगा। 11 इसलिये परमेश्वर ने उससे कहा, “तुमने अपने लिये दीर्घायु नहीं माँगी। तुमने अपने लिये सम्पत्ति नहीं माँगी। तुमने अपने शत्रुओं की मृत्यु नहीं माँगी। 12 इसलिये मैं तुम्हें वही दूँगा जो तुमने माँगा। मैं तुम्हें बुद्धिमान और विवेकी बनाऊँगा। मैं तुम्हारी बुद्धि को इतना महान बनाऊँगा कि बीते समय में कभी तुम्हारे जैसा कोई व्यक्ति नहीं हुआ है और भविष्य में तुम्हारे जैसा कभी कोई नहीं होगा।

13 और तुम्हें पुरस्कृत करने के लिये मैं तुम्हें वे चीज़ें भी दूँगा जिन्हें तुमने नहीं माँगी। तुम्हारे पूरे जीवन में सम्पत्ति और प्रतिष्ठा बनी रहेगी। संसार में तुम्हारे जैसा महान राजा दूसरा कोई नहीं होगा। 14 मैं तुमसे चाहता हूँ कि तुम मेरा अनुसरण करो और मेरे नियमों एवं आदेशों का पालन करो। यह उसी प्रकार करो जिस प्रकार तुम्हारे पिता दाऊद ने किया। यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें दीर्घायु भी करूँगा।”

15 सुलैमान जाग गया। वह जान गया कि परमेश्वर ने उसके साथ स्वप्न में बातें की हैं। तब सुलैमान यरूशलेम गया और यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने खड़ा हुआ। सुलैमान ने एक होमबलि यहोवा को चढ़ाई और उसने यहोवा को मेलबलि दी। इसके बाद उसने उन सभी प्रमुखों और अधिकारियों को दावत दी जो शासन करने में उसकी सहायता करते थे।

16 एक दिन दो स्त्रियाँ जो वेश्यायें थीं, सुलैमान के पास आईं। वे राजा के सामने खड़ी हुईं। 17 स्त्रियों में से एक ने कहा, “महाराज, यह स्त्री और मैं एक ही घर में रहते हैं। हम दोनों गर्भवती हुए और अपने बच्चों को जन्म देने ही वाले थे। मैंने अपने बच्चे को जन्म दिया जब यह वहाँ मेरे साथ थी। 18 तीन दिन बाद इस स्त्री ने भी अपने बच्चे को जन्म दिया। हम लोगों के साथ कोई अन्य व्यक्ति घर में नहीं था। केवल हम दोनों ही थे। 19 एक रात जब यह स्त्री अपने बच्चे के साथ सो रही थी, बच्चा मर गया। 20 अतः रात को जब मैं सोई थी, इसने मेरे पुत्र को मेरे बिस्तर से ले लिया। यह उसे अपने बिस्तर पर ले गई। तब इसने मेरे बच्चे को मेरे बिस्तर पर डाल दिया। 21 अगली सुबह मैं जागी और अपने बच्चे को दूध पिलाने वाली थी। किन्तु मैंने देखा कि बच्चा मरा हुआ है। तब मैंने उसे अधिक निकट से देखा। मैंने देखा कि यह मेरा बच्चा नहीं है।”

22 किन्तु दूसरी स्त्री ने कहा, “नहीं! जीवित बच्चा मेरा है। मरा बच्चा तुम्हारा है!”

किन्तु पहली स्त्री ने कहा, "नहीं! तुम गलत हो! मरा बच्चा तुम्हारा है और जीवित बच्चा मेरा है।" इस प्रकार दोनों स्त्रियों ने राजा के सामने बहस की।

23तब राजा सुलैमान ने कहा, "तुम दोनों कहती हो कि जीवित बच्चा हमारा अपना है और तुम में से हर एक कहती है कि मरा बच्चा दूसरी का है।"

24तब राजा सुलैमान ने अपने सेवक को तलवार लाने भेजा 25और राजा सुलैमान ने कहा, "हम यहीं करेंगे। जीवित बच्चे के दो टुकड़े कर दो। हर एक स्त्री को आधा बच्चा दे दो।"

26दूसरी स्त्री ने कहा, "यह ठीक है। बच्चे को दो टुकड़ों में काट डालो। तब हम दोनों में से उसे कोई नहीं पाएगा।" किन्तु पहली स्त्री, जो सच्ची माँ थी, अपने बच्चे के लिये प्रेम से भरी थी। उसने राजा से कहा, "कृपया बच्चे को न मारें! इसे उसे ही दे दें।" 27तब राजा सुलैमान ने कहा, "बच्चे को मत मारो! इसे, पहली स्त्री को दे दो। वही सच्ची माँ है।"

28इज़्राएल के लोगों ने राजा सुलैमान के निर्णय को सुना। उन्होंने उसका बहुत आदर और सम्मान किया क्योंकि वह बुद्धिमान था। उन्होंने देखा कि ठीक न्याय करने में उसके पास परमेश्वर की बुद्धि थी।

4 राजा सुलैमान इज़्राएल के सभी लोगों पर शासन करता था। 2ये प्रमुख अधिकारियों के नाम हैं जो शासन करने में उसकी सहायता करते थे:

सादोक का पुत्र अजर्याह याजक था। 3शीशा के पुत्र एलीहोरेप और अहिय्याह उस विवरण को लिखने का कार्य करते थे जो न्यायालय में होता था। अहीलूद का पुत्र यहोशापात, यहोशापात लोगों के इतिहास का विवरण लिखता था। 4यहोयादा का पुत्र बनायाह सेनापति था, सादोक और एब्द्यातार याजक थे। 5नातान का पुत्र अजर्याह जनपद- प्रशासकों का अधीक्षक था। नातान का पुत्र जाबूद याजक और राजा सुलैमान का एक सलाहकार था। 6अहीशार राजा के घर की हर एक चीज़ का उत्तरदायी था। अब्दा का पुत्र अदोनीराम दासों का अधीक्षक था।

7इज़्राएल बारह क्षेत्रों में बाँटा था जिन्हें जनपद कहते थे। सुलैमान हर जनपद पर शासन करने के लिये प्रशासकों को चुनता था। इन प्रशासकों को आदेश था कि वे अपने जनपद से भोजन सामग्री इकट्ठा करें और उसे राजा और उसके परिवार को दें। हर वर्ष एक महीने की भोजन सामग्री राजा को देने का उत्तरदायित्व बारह प्रशासकों में से हर एक का था। 8बारह प्रशासकों के नाम ये हैं:

बेन्हूर, एप्रैम के पर्वतीय प्रदेश का प्रशासक था। 9बन्देकेर, माकस, शालबीम, बेशोमेश और

एलोनबेथानान का प्रशासक था। 10बेन्हेसेद, अरुब्बोत, सौको और हेपेर का प्रशासक था। 11बेनबीनादाब, नपोत दोर का प्रशासक था। उसका विवाह सुलैमान की पुत्री तापत से हुआ था। 12अहीलूद का पुत्र बाना, तानाक, मगिदो से लेकर और सारतान से लगे पूरे बेशान का प्रशासक था। यह यिज़्रेल के नीचे, बेशान से लेकर आबेलमहोला तक योकमाम के पार था। 13बेनगेबेर, रामोत गिलाद का प्रशासक था। वह गिलाद में मनश्शे के पुत्र याईर के सारे नगरों और गाँवों का भी प्रशासक था। वह बाशान में अर्गीब के जनपद का भी प्रशासक था। इस क्षेत्र में ऊँची चहारदीवारी वाले साठ नगर थे। इन नगरों के फाटकों में काँसे की छड़ें भी लगी थी। 14इदो का पुत्र अहीनादाब, महनैम का प्रशासक था। 15अहीमास, नप्ताली का प्रशासक था। उसका विवाह सुलैमान की पुत्री बासमत से हुआ था। 16हूशै का पुत्र बाना, आशेर और आलोत का प्रशासक था। 17पारूह का पुत्र यहोशापात, इस्साकार का प्रशासक था। 18एला का पुत्र शामी, बिन्यामीन का प्रशासक था। 19ऊरी का पुत्र गेबेर गिलाद का प्रशासक था। गिलाद वह प्रदेश था जहाँ एमोरी लोगों का राजा सीहोन और बाशान का राजा ओग रहते थे। किन्तु केवल गेबेर ही उस जनपद का प्रशासक था।

20यहूदा और इज़्राएल में बहुत बड़ी संख्या में लोग रहते थे। लोगों की संख्या समुद्र तट के बालू के कणों जितनी थी। लोग सुखमय जीवन बिताते थे; वे खाते पीते और आनन्दित रहते थे।

21सुलैमान परात नदी से लेकर पलिशती लोगों के प्रदेश तक सभी राज्यों पर शासन करता था। उसका राज्य मिश्र की सीमा तक फैला था। ये देश सुलैमान को भेंट भेजते थे और उसके पूरे जीवन तक उसकी आज्ञा का पालन करते रहे।*

22-23यह भोजन सामग्री है जिसकी आवश्यकता प्रतिदिन सुलैमान को स्वयं और उसकी मेज पर सभी भोजन करने वालों के लिये होती थी:

डेढ़ सौ बुशल महीन आटा, तीन सौ बुशल आटा, अच्छा अन्न खाने वाली दस बैल, मैदानों में पाले गये बीस बैल और सौ भेड़ें, तीन भिन्न प्रकार के हिरन और विशेष पक्षी भी।

24सुलैमान परात नदी के पश्चिम के सभी देशों पर शासन करता था। यह प्रदेश तिप्सह से अजा तक था

ये देश ... करते रहें यह प्रकट करता है कि इन देशों ने सुलैमान के साथ, उसकी बड़ी शक्ति के कारण शान्ति-सन्धि की थी।

और सुलैमान के राज्य के चारों ओर शान्ति थी। 25सुलैमान के जीवन काल में इम्राएल और यहूदा के सभी लोग लगातार दान से लेकर बेशबा तक शान्ति और सुरक्षा में रहते थे। लोग शान्तिपूर्वक अपने अंजीर के पेड़ों और अंगूर की बेलों के नीचे बैठते थे।

26सुलैमान के पास उसके रथों के लिये चार हजार घोड़ों* के रखने के स्थान और उसके पास बारह हजार घुड़सवार थे। 27प्रत्येक महीने बारह जनपद शासकों में से एक सुलैमान को वे सब चीज़ें देता था जिसकी उसे आवश्यकता पड़ती थी। यह राजा के मेज पर खाने वाले हर एक व्यक्ति के लिये पर्याप्त होता था। 28जनपद प्रशासक राजा को रथों के घोड़ों और सवारी के घोड़ों के लिये पर्याप्त चारा और जौ भी देते थे। हर एक व्यक्ति इस अन्न को निश्चित स्थान पर लाता था।

29परमेश्वर ने सुलैमान को उत्तम बुद्धि दी। सुलैमान अनेकों बातों समझ सकता था। उसकी बुद्धि कल्पना के परे तीव्र थी। 30सुलैमान की बुद्धि पूर्व के सभी व्यक्तियों की बुद्धि से अधिक तीव्र थी और उसकी बुद्धि मित्र में रहने वाले सभी व्यक्तियों की बुद्धि से अधिक तीव्र थी। 31वह पृथ्वी के किसी भी व्यक्ति से अधिक बुद्धिमान था। वह एज्रेही एतान से भी अधिक बुद्धिमान था। वह हेमान, कलकोल तथा दर्दा से अधिक बुद्धिमान था। ये माहोल के पुत्र थे। राजा सुलैमान इम्राएल और यहूदा के चारों ओर के सभी देशों में प्रसिद्ध हो गया। 32अपने जीवन काल में राजा सुलैमान ने तीन हजार बुद्धिमत्तापूर्ण उपदेश लिखे। उसने पन्द्रह सौ गीत भी लिखे।

33सुलैमान प्रकृति के बारे में भी बहुत कुछ जानता था। सुलैमान ने लबानोन के विशाल देवदारु वृक्षों से लेकर दीवारों में उगने वाली जूफा के विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों में से हर एक के विषय में शिक्षा दी। राजा सुलैमान ने जानवरों, पक्षियों और रेंगने वाले जन्तुओं और मछलियों की चर्चा की है। 34सुलैमान की बुद्धिमत्तापूर्ण बातों को सुनने के लिये सभी राष्ट्रों से लोग आते थे। सभी राष्ट्रों के राजा अपने बुद्धिमान व्यक्तियों को राजा सुलैमान की बातों को सुनने के लिये भेजते थे।

सुलैमान मन्दिर बनाता है

5 हीराम सोर का राजा था। हीराम सदैव दाऊद का मित्र रहा। अतः जब हीराम को मालूम हुआ कि सुलैमान दाऊद के बाद नया राजा हुआ है तो उसने सुलैमान के पास अपने सेवक भेजे। सुलैमान ने हीराम राजा से जो कहा, वह यह है: 'तुम्हें याद है कि मेरे पिता राजा दाऊद को अपने चारों ओर अनेक युद्ध

लड़ने पड़े थे। अतः वह यहोवा अपने परमेश्वर का मन्दिर बनवाने में समर्थ न हो सका। राजा दाऊद तब तक प्रतीक्षा करता रहा जब तक यहोवा ने उसके सभी शत्रुओं को उससे पराजित नहीं हो जाने दिया। किन्तु अब यहोवा मेरे परमेश्वर ने मेरे देश के चारों ओर मुझे शान्ति दी है। अब मेरा कोई शत्रु नहीं है। मेरी प्रजा अब किसी खतरे में नहीं है।

"यहोवा ने मेरे पिता दाऊद के साथ एक प्रतिज्ञा की थी। यहोवा ने कहा था, 'मैं तुम्हारे पुत्र को तुम्हारे बाद राजा बनाऊँगा और तुम्हारा पुत्र मेरा सम्मान करने के लिये एक मन्दिर बनाएगा।' अब मैंने, यहोवा अपने परमेश्वर का सम्मान करने के लिये वह मन्दिर बनाने की योजना बनाई है 6और इसलिये मैं तुमसे सहायता माँगता हूँ। अपने व्यक्तियों को लबानोन भेजो। वहाँ वे मेरे लिये देवदारु के वृक्षों को काटेंगे। मेरे सेवक तुम्हारे सेवकों के साथ काम करेंगे। मैं वह कोई भी मजदूरी भुगतान करूँगा जो तुम अपने सेवकों के लिये तय करोगे। किन्तु मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है। मेरे बड़ई* सीदोन के बड़ईयों की तरह अच्छे नहीं हैं।"

7जब हीराम ने, जो कुछ सुलैमान ने माँगा, वह सुना तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। राजा हीराम ने कहा, "आज मैं यहोवा को धन्यवाद देता हूँ कि उसने दाऊद को इस विशाल राष्ट्र का शासक एक बुद्धिमान पुत्र दिया है।" 8तब हीराम ने सुलैमान को एक संदेश भेजा। संदेश यह था, "तुमने जो माँग की है, वह मैंने सुनी है। मैं तुमको सारे देवदारु के पेड़ और चीड़ के पेड़ दूँगा, जिन्हें तुम चाहते हो। 9मेरे सेवक लबानोन से उन्हें समुद्र तक लाएँगे। तब मैं उन्हें एक साथ बाँध दूँगा और उन्हें समुद्र तट से उस स्थान की ओर बहा दूँगा जहाँ तुम चाहते हो। वहाँ मैं लट्टों को अलग कर दूँगा और पेड़ों को तुम ले सकोगे।"

10-11सुलैमान ने हीराम को लगभग एक लाख बीस हजार बुशल* गेहूँ और लगभग एक लाख बीस हजार गैलन* शुद्ध जैतून का तेल प्रति वर्ष उसके परिवार के भोजन के लिये दिया।

12यहोवा ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सुलैमान को बुद्धि दी और सुलैमान और हीराम के मध्य शान्ति रही। इन दोनों राजाओं ने आपस में एक सन्धि की।

13राजा सुलैमान ने इस काम में सहायता के लिये इम्राएल के तीस हजार व्यक्तियों को विवश किया।

बड़ई वे लोग जो लकड़ी का काम करते हैं। प्राचीन काल में इसका अर्थ यह भी था कि वे पेड़ काटते हैं।

एक लाख बीस हजार बुशल "20,000 कोर्स"

एक लाख बीस हजार गैलन "20,000 बथ" एक बथ लगभग 6 गैलन के बराबर होता है।

चार हजार घोड़ों हिब्रू और लैटिन में चालीस हजार है। किन्तु देखें 2इति. 9:25

14राजा सुलैमान ने अदोनीराम नामक एक व्यक्ति को उनके ऊपर अधिकारी बनाया। सुलैमान ने उन व्यक्तियों को तीन टुकड़ियों में बाँटा। हर एक टुकड़ी में दस हजार व्यक्ति थे। हर समूह एक महीने लवाने में काम करता था और तब दो महीने के लिये अपने घर लौटता था। 15सुलैमान ने अस्सी हजार व्यक्तियों को भी पहाड़ी प्रदेश में काम करने के लिये विवश किया। इन मनुष्यों का काम चट्टानों को काटना था और वहाँ सत्तर हजार व्यक्ति पत्थरों को ढोने वाले थे। 16और तीन हजार तीन सौ व्यक्ति थे जो काम करने वाले व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी थे। 17राजा सुलैमान ने, मन्दिर की नींव के लिये विशाल और कीमती चट्टानों को काटने का आदेश दिया। ये पत्थर सावधानी से काटे गये। 18तब सुलैमान के कारीगरों और हीराम के कारीगरों तथा गबाली के व्यक्तियों ने पत्थरों पर नक्काशी का काम किया। उन्होंने मन्दिर को बनाने के लिये पत्थरों और लट्ठों को तैयार किया।

सुलैमान मन्दिर बनाता है

6 तब सुलैमान ने मन्दिर बनाना आरम्भ किया। यह इज्राएल के लोगों द्वारा मिश्र छोड़ने के चार सौ अस्सीवाँ वर्ष* बाद था। यह राजा सुलैमान के इज्राएल पर शासन के चौथे वर्ष में था। यह वर्ष के दूसरे महीने जिव के माह में था। 2मन्दिर नब्बे फुट लम्बा, तीस फुट चौड़ा और पैतालीस फुट ऊँचा था।

3मन्दिर का द्वार मण्डप तीस फुट लम्बा और पन्द्रह फुट चौड़ा था। यह द्वारमण्डप मन्दिर के ही मुख्य भाग के सामने तक फैला था। इसकी लम्बाई मन्दिर की चौड़ाई के बराबर थी। 4मन्दिर में संकरी खिड़कियाँ थीं। ये खिड़कियाँ बाहर की ओर संकरी और भीतर की ओर चौड़ी थीं।

5तब सुलैमान ने मन्दिर के मुख्य भाग के चारों ओर कमरों की एक पंक्ति बनाई। ये कमरे एक दूसरे की छत पर बने थे। कमरों की यह पंक्ति तीन मंजिल ऊँची थी। 6कमरे मन्दिर की दीवार से सटे थे किन्तु उनकी शहतीरें उसकी दीवार में नहीं घुसी थी। शिखर पर, मन्दिर की दीवार पतली हो गई थी। इसलिये उन कमरों की एक ओर की दीवार उसके नीचे की दीवार से पतली थी। नीचे की मंजिल के कमरे साढ़े सात फुट चौड़े थे। बीच की मंजिल के कमरे नौ फुट चौड़े थे। उसके ऊपर के कमरे दस-बारह फुट चौड़े थे। 7कारीगरों ने दीवारों को बनाने के लिये बड़े पत्थरों का उपयोग किया। कारीगरों ने उसी स्थान पर पत्थरों को काटा जहाँ उन्होंने उन्हें जमीन से निकाला। इसलिये मन्दिर में हथौड़ी, कुल्हाड़ियों और अन्य किसी भी लोहे के औजार की खटपट नहीं हुई।

चार सौ अस्सीवाँ वर्ष यह लगभग ई.पू. 960 था।

8नीचे के कमरों का प्रवेश द्वार मन्दिर के दक्षिण की ओर था। भीतर सीढ़ियाँ थीं जो दूसरे मंजिल के कमरों और तब तीसरे मंजिल के कमरों तक जाती थी।

9इस प्रकार सुलैमान ने मन्दिर बनाना पूरा किया। मन्दिर का हर एक भाग देवदारु के तख्तों से मढ़ा गया था। 10सुलैमान ने मन्दिर के चारों ओर कमरों का बनाना भी पूरा किया। हर एक मंजिल साढ़े सात फुट ऊँची थी। उन कमरों की शहतीरें मन्दिर को छूती थीं।

11यहोवा ने सुलैमान से कहा, 12"यदि तुम मेरे सभी नियमों और आदेशों का पालन करोगे तो मैं वह सब करूँगा जिसके लिये मैंने तुम्हारे पिता दाऊद से प्रतिज्ञा की थी। 13और मैं इज्राएल के लोगों को कभी छोड़ूँगा नहीं।"

मन्दिर का विस्तृत विवरण

14इस प्रकार सुलैमान ने मन्दिर का निर्माण पूरा किया। 15मन्दिर के भीतर पत्थर की दीवारें, देवदारु के तख्तों से मढ़ी गई थीं। देवदारु के तख्ते फर्श से छत तक थे। पत्थर का फर्श चीड़ के तख्तों से ढका था। 16उन्होंने मन्दिर के पिछले गहरे भाग में एक कमरा तीस फुट लम्बा बनाया। उन्होंने इस कमरे की दीवारों को देवदारु के तख्तों से मढ़ा। देवदारु के तख्ते फर्श से छत तक थे। यह कमरा सर्वाधिक पवित्र स्थान कहा जाता था। 17सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने मन्दिर का मुख्य भाग था। यह कमरा साठ फुट लम्बा था।

18उन्होंने इस कमरे की दीवारों को देवदारु के तख्तों से मढ़ा, दीवार का कोई भी पत्थर नहीं देखा जा सकता था। उन्होंने फूलों और कद्दू के चित्र देवदारु के तख्तों में नक्काशी की। 19सुलैमान ने मन्दिर के पीछे भीतर गहरे कमरे को तैयार किया। यह कमरा यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक के लिये था। 20यह कमरा तीस फुट लम्बा तीस फुट चौड़ा और तीस फुट ऊँचा था।

21सुलैमान ने इस कमरे को शुद्ध सोने से मढ़ा। उसने इस कमरे के सामने एक सुगन्ध वेदी बनाई। उसने वेदी को सोने से मढ़ा और इसके चारों ओर सोने की जंजीरें लपेट दीं। 22सारा मन्दिर सोने से मढ़ा था और सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने वेदी सोने से मढ़ी गई थी।

23कारीगरों ने पंख सहित दो करूब (स्वर्गदूतों) की मूर्तियाँ बनाईं। कारीगरों ने जैतून की लकड़ी से मूर्तियाँ बनाईं। ये करूब (स्वर्गदूत) सर्वाधिक पवित्र स्थान में रखे गये। हर एक स्वर्गदूत पन्द्रह फुट ऊँचा था। 24-26वे दोनों करूब (स्वर्गदूत) एक ही माप के थे और एक ही शैली में बने थे। हर एक करूब (स्वर्गदूत) के दो पंख थे। हर एक पंख साढ़े सात फुट लम्बा था।

एक पंख के सिरे से दूसरे पंख के सिरे तक पन्द्रह फुट था और हर एक करूब (स्वर्गदूत) पन्द्रह फुट ऊँचा था। 27ये करूब (स्वर्गदूत) सर्वाधिक पवित्र स्थान

में रखे गए थे। वे एक दूसरे की बगल में खड़े थे। उनके पंख एक दूसरे को कमरे के मध्य में छूते थे। अन्य दो पंख हर एक बगल की दीवार को छूते थे। 28दोनों करूब (स्वर्गदूत) सोने से मढ़े गए थे।

29मुख्य कक्ष और भीतरी कक्ष के चारों ओर की दीवारों पर करूब (स्वर्गदूतों), ताड़ के वृक्षों और फूल के चित्र उकेरे गए थे। 30दोनों कमरों की फर्श सोने से मढ़ी गई थीं।

31कारीगरों ने जैतून की लकड़ी के दो दरवाजे बनाये। उन्होंने उन दोनों दरवाजों को सर्वाधिक पवित्र स्थान के प्रवेश द्वार में लगाया। दरवाजों के चारों ओर की चौखट पाँच पहलदार बनी थी। 32उन्होंने दोनों दरवाजों को जैतून की लकड़ी का बनाया। कारीगरों ने दरवाजों पर करूब (स्वर्गदूतों), ताड़ के वृक्षों और फूलों के चित्रों को उकेरा। तब उन्होंने दरवाजों को सोने से मढ़ा।

33उन्होंने मुख्य कक्ष में प्रवेश के लिये भी दरवाजे बनाये। उन्होंने एक वर्गाकार दरवाजे की चौखट बनाने के लिये जैतून की लकड़ी का उपयोग किया। 34तब उन्होंने दरवाजा बनाने के लिये चीड़ की लकड़ी का उपयोग किया। 35वहाँ दो दरवाजे थे। हर एक दरवाजे के दो भाग थे, अतः दोनों दरवाजे मुड़कर बन्द होते थे। उन्होंने दरवाजों पर करूब (स्वर्गदूत) ताड़ के वृक्षों और फूलों के चित्रों को उकेरा। तब उन्होंने उन्हें सोने से मढ़ा।

36तब उन्होंने भीतरी आँगन बनाया। उन्होंने इस आँगन के चारों ओर दीवारें बनाईं। हर एक दीवार कटे पत्थरों की तीन पंक्तियों और देवदारु की लकड़ी की एक पंक्ति से बनाई गई।

37उन्होंने वर्ष के दूसरे महीने जब माह में मन्दिर का निर्माण आरम्भ किया। इज्राएल के लोगों पर सुलैमान के शासन के चौथे वर्ष में, यह हुआ। 38मन्दिर का निर्माण वर्ष के आठवें महीने बूल माह में पूरा हुआ। लोगों पर सुलैमान के शासन के ग्यारहवें वर्ष में यह हुआ था। मन्दिर के निर्माण में सात वर्ष लगे। मन्दिर ठीक उसी प्रकार बना था जैसा उसे बनाने की योजना थी।

सुलैमान का महल

7 राजा सुलैमान ने अपने लिये एक महल भी बनवाया। सुलैमान के महल के निर्माण को पूरा करने में तेरह वर्ष लगे। उसने उस इमारत को भी बनाया जिसे, "लबानोन का वन" कहा जाता है। यह डेढ़ सौ फुट लम्बा, पचहत्तर फुट चौड़ा, और पैतालीस फुट ऊँचा था। इसमें देवदारु के स्तम्भों की चार पंक्तियाँ थीं। हर एक पंक्ति के सिरे पर एक देवदारु का शीर्ष था। स्तम्भों की पंक्तियों के आर पार जाती हुई देवदारु की शहतीरें थीं। उन्होंने देवदारु के तख्तों को छत के लिये इन शहतीरों पर रखा था। स्तम्भों के हर एक विभाग

के लिये पन्द्रह शहतीरें थीं। सब मिलाकर पैतालीस शहतीरें थीं। बगल की हर एक दीवार में खिड़कियों की तीन पंक्तियाँ थीं। खिड़कियों परस्पर आमने-सामने थीं। शहर एक के अन्त में तीन दरवाजें थीं। सभी दरवाजों के द्वार और चौखटे वर्गाकार थीं।

6सुलैमान ने "स्तम्भों का प्रवेश द्वार मण्डप" भी बनाया। यह पचहत्तर फुट लम्बा और पैतालीस फुट चौड़ा था। प्रवेश द्वार मण्डप के साथ साथ स्तम्भों पर टिकी एक छत थी।

7सुलैमान ने एक सिंहासन कक्ष बनाया जहाँ वह लोगों का न्याय करता था। वह इसे "न्याय महाकक्ष" कहता था। कक्ष फर्श से लेकर छत तक देवदारु से मढ़ा था।

8जिस भवन में सुलैमान रहता था, वह न्याय महाकक्ष के पीछे दूसरे आँगन में था। यह महल वैसे ही बना था जैसा न्याय महाकक्ष बना था। उसने अपनी पत्नी जो मिश्र के राजा की पुत्री थी, के लिये भी वैसा ही महल बनाया।

9ये सभी इमारतें बहुमूल्य पत्थर के टुकड़ों से बनी थीं। ये पत्थर समुचित आकार में आरे से काटे गये थे। वे सामने और पीछे की ओर से कटे थे। ये बहुमूल्य पत्थर नींव से लेकर दीवार की ऊपरी तह तक लगे थे। आँगन के चारों ओर की दीवार भी बहुमूल्य पत्थर के टुकड़ों से बनी थी। 10नींव विशाल बहुमूल्य पत्थरों से बनी थीं। कुछ पत्थर पन्द्रह फुट लम्बे थे, और अन्य बारह फुट लम्बे थे। 11उन पत्थरों के शीर्ष पर अन्य बहुमूल्य पत्थर और देवदारु की शहतीरें थीं। 12महल के आँगन, मन्दिर के आँगन और मन्दिर के प्रवेश द्वार मण्डप के चारों ओर दीवारें थीं। वे दीवारें पत्थर की तीन पंक्तियों और देवदारु लकड़ी की एक पंक्ति से बनी थीं।

13राजा सुलैमान ने हीराम नामक व्यक्ति के पास सोर में संदेश भेजा। सुलैमान हीराम को यरूशलेम लाया। 14हीराम की माँ नप्ताली परिवार समूह से इज्राएली थी। उसका मृत पिता सोर का था। हीराम काँसे से चीज़ें बनाता था। वह बहुत कुशल और अनुभवी कारीगर था। अतः राजा सुलैमान ने उसे आने के लिये कहा और हीराम ने उसे स्वीकार किया। इसलिये राजा सुलैमान ने हीराम को काँसे के सभी कामों का अधीक्षक बनाया। हीराम ने काँसे से निर्मित सभी चीज़ों को बनाया। 15हीराम ने काँसे के दो स्तम्भ बनाए। हर एक स्तम्भ सत्ताईस फुट लम्बा और अट्ठारह फुट गोलाई वाला था। स्तम्भ खोखले थे और धातु तीन इंच मोटी थीं।

16हीराम ने दो काँसे के शीर्ष भी बनाए जो साढ़े सात फुट ऊँचे थे। हीराम ने इन शीर्षों को स्तम्भों के सिरों पर रखा। 17तब उसने दोनों स्तम्भों के ऊपर के शीर्षों को ढकने के लिये जंजीरो के दो जाल बनाए। 18तब

उसने अलंकरण की दो पंक्तियाँ बनाई जो अनार की तरह दिखते थे। उन्होंने इन काँसे के अनारों को हर एक स्तम्भ के जालों में, स्तम्भों के सिरों के शीर्षों को ढकने के लिये रखा। 19साढ़े सात फुट ऊँचे स्तम्भों के सिरों के शीर्ष फूल के आकार के बने थे। 20शीर्ष स्तम्भों के सिरों पर थे। वे कटोरे के आकार के जाल के ऊपर थे। उस स्थान पर शीर्षों के चारों ओर पंक्तियों में बीस अनार थे। 21हीराम ने इन दोनों काँसे के स्तम्भों को मन्दिर के प्रवेश द्वार पर खड़ा किया। द्वार के दक्षिण की ओर एक स्तम्भ तथा द्वार के उत्तर की ओर दूसरा स्तम्भ खड़ा किया गया। दक्षिण के स्तम्भ का नाम याकीन रखा गया। उत्तर के स्तम्भ का नाम बोआज रखा गया। 22उन्होंने फूल के आकार के शीर्षों को स्तम्भों के ऊपर रखा। इस प्रकार दोनों स्तम्भों पर काम पूरा हुआ।

23तब हीराम ने काँसे का एक गोल हौज बनाया। उन्होंने इस हौज को "सागर" कहा। हौज लगभग पैंतालीस फुट गोलाई में था। यह आर-पार पन्द्रह फुट और साढ़े सात फुट गहरा था। 24हौज के बाहरी सिरे पर एक बारी थी। इस बारी के नीचे काँसे के कद्दुओं की दो कतारें हौज को घेरे हुए थी। काँसे के कद्दु हौज के हिस्से के रूप में एक इकाई में बने थे। 25हौज बारह काँसे के बैलों की पीठों पर टिका था। ये बारहों बैल तालाब से दूर बाहर को देख रहे थे। तीन उत्तर को, तीन पूर्व को, तीन दक्षिण को और तीन पश्चिम को देख रहे थे। 26हौज की दीवारें चार इंच मोटी थीं। तालाब के चारों ओर की किनारी एक प्याले की किनारी या फूल की पंखुड़ियों की तरह थी। तालाब की क्षमता लगभग ग्यारह हजार गैलन थी।

27तब हीराम ने दस काँसे की गाड़ियाँ बनाई। हर एक छः फुट लम्बी, छः फुट चौड़ी और साढ़े चार फुट ऊँची थी। 28गाड़ियाँ वर्गाकार तख्तों को चौखटों में मढ़कर बनायी गयी थी। 29तख्तों और चौखटों पर काँसे के सिंह, बैल और करूब (स्वर्गदूत) थे। सिंह और बैलो के ऊपर और नीचे फूलों के आकार हथौड़े से काँसे में उभारे गए थे। 30हर एक गाड़ी में चार काँसे के पहिये काँसे की धुरी के साथ थे। कानों पर विशाल कटोरे के लिए काँसे के आधार बने थे। आधारों पर हथौड़े से फूलों के आकार काँसे में उभारे गए थे। 31कटोरे के लिये ऊपरी सिरे पर एक ढाँचा बना था। यह कटोरो से ऊपर को अट्टारह इंच ऊँचा था। कटोरे का खुला हुआ गोल भाग सत्ताईस इंच व्यास वाला था। ढाँचे पर काँसे में आकार उकेरे गए थे। ढाँचा चौकोर था, गोल नहीं।

32ढाँचे के नीचे चार पहिये थे। पहिये सत्ताईस इंच व्यास वाले थे। पहिये के मध्य के धुरे गाड़ी के साथ एक इकाई के रूप में बने थे। 33पहिये रथ के पहियों

के समान थे। पहियों की हर एक चीज़-धुरे, परिधि, तीलियाँ और नाभि काँसे की बनी थी।

34हर एक गाड़ी के चारों कानों पर चार आधार थे। वे गाड़ी के साथ एक इकाई के रूप में बने थे। 35हर एक गाड़ी के ऊपरी सिरे के चारों ओर एक काँसे की पट्टी थी। यह गाड़ी के साथ एक इकाई में बनी थी। 36गाड़ी की बगल और ढाँचे पर करूब (स्वर्गदूतों), सिंहों और ताड़ के वृक्षों के चित्र काँसे में उकेरे गए थे। ये चित्र गाड़ियों पर सर्वत्र, जहाँ भी स्थान था, उकेरे गए थे और गाड़ी के चारों ओर के ढाँचे पर फूल उकेरे गए थे। 37हीराम ने दस गाड़ियाँ बनाई और वे सभी एक सी थीं। हर एक गाड़ी काँसे की बनी थी। काँसे को गलाया गया था और साँचे में ढाला गया था। अतः सभी गाड़ियाँ एक ही आकार और एक ही रूप की थीं।

38हीराम ने दस कटोरे भी बनाये। एक-एक कटोरा दस गाड़ियों में से हर एक के लिये था। हर एक कटोरा छः फुट व्यास वाला था और हर एक कटोरे में दो सौ तीस गैलन आ सकता था।

39हीराम ने पाँच गाड़ियों को मन्दिर के दक्षिण और अन्य पाँच गाड़ियों को मन्दिर के उत्तर में रखा। उसने विशाल तालाब को मन्दिर के दक्षिण पूर्व कोने में रखा। 40हीराम ने बर्तन, छोटे बेलचे, और छोटे कटोरे भी बनाए। हीराम ने उन सारी चीजों को बनाना पूरा किया जिन्हें राजा सुलैमान उससे बनवाना चाहता था। हीराम ने यहोवा के मन्दिर के लिये जो कुछ बनाया उसकी सूची यह है:

41दो स्तम्भ,

स्तम्भों के सिरों के लिये कटोरे के आकार के दो शीर्ष, शीर्षों के चारों ओर लगाए जाने वाले दो जाल।

42दो जालों के लिये चार सौ अनार स्तम्भों के सिरों पर शीर्षों के दोनों कटोरो को ढकने के लिये हर एक जाल के वास्ते अनारों की दो पंक्तियाँ थीं।

43वहाँ दस गाड़ियाँ थी, हर गाड़ी पर एक कटोरा था, 44एक विशाल तालाब जो बारह बैलों पर टिका था, 45बर्तन, छोटे बेलचे, छोटे कटोरे, और यहोवा के मन्दिर के लिये सभी तशतरियाँ।

हीराम ने वे सभी चीजें बनाई जिन्हें राजा सुलैमान चाहता था। वे सभी झलकाए हुए काँसे से बनी थीं। 46-47सुलैमान ने उस काँसे को कभी नहीं तोला जिसका उपयोग इन चीजों को बनाने के लिये हुआ था। यह इतना अधिक था कि इसका तौलना सम्भव नहीं था इसलिए सारे काँसे के तौल का कुल योग कभी मालूम नहीं हुआ। राजा ने इन चीजों को सुक्कोत और सारतान के बीच यरदन नदी के समीप बनाने का आदेश दिया। उन्होंने इन चीजों को, काँसे को गलाकर और जमीन में बने साँचों में ढालकर, बनाया।

48-50 सुलैमान ने यह भी आदेश दिया कि मन्दिर के लिये सोने की बृहत सी चीज़ें बनाई जायें। सुलैमान ने मन्दिर के लिये सोने से जो चीज़ें बनाई, वे ये हैं।

सुनहली वेदी,

सुनहली मेज (परमेश्वर को भेंट चढ़ाई गई विशेष रोटी इस मेज पर रखी जाती थी।)

शुद्ध सोने के दीपाधार (सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने ये पाँच दक्षिण की ओर, और पाँच उत्तर की ओर थे।)

सुनहले फूल, दीपक और चिमटे, प्याले,

दीपक को पूरे प्रकाश से जलता रखने के लिये औजार, कटारें, कड़ाहियाँ,

कोयला ले चलने के लिये उपयोग में आने वाली शुद्ध सोने की तश्तरियाँ और

मन्दिर के प्रवेश द्वार के दरवाजे।

51 इस प्रकार सुलैमान ने, यहोवा के मन्दिर के लिये जो काम वह करना चाहता था, पूरा किया। तब सुलैमान ने वे सभी चीज़ें ली जिन्हें उसके पिता दाऊद ने इस उद्देश्य के लिये सुरक्षित रखी थीं। वह इन चीज़ों को मन्दिर में लाया। उसने चाँदी और सोना यहोवा के मन्दिर के कोषागारों में रखा।

मन्दिर में साक्षीपत्र का सन्दूक

8 तब राजा सुलैमान ने इब्राएल के सभी अग्रजों, परिवार समूहों के प्रमुखों तथा इब्राएल के परिवारों के प्रमुखों को एक साथ यरूशलेम में बुलाया। सुलैमान चाहता था कि वे साक्षीपत्र के सन्दूक को दाऊद नगर से मन्दिर में लायें। 2 इसलिये इब्राएल के सभी लोग राजा सुलैमान के साथ आये। यह एतानीम महीने में विशेष त्यौहार (आश्रयों का त्यौहार) के समय हुआ। (यह वर्ष का सातवाँ महीना था।)

3 इब्राएल के सभी अग्रज उस स्थान पर आए। तब याजकों ने पवित्र सन्दूक उठाया। 4 वे पवित्र तम्बू और तम्बू में की सभी चीज़ों सहित यहोवा के पवित्र सन्दूक को ले आए। लेवीवंशियों ने याजकों की सहायता इन चीज़ों को ले चलने में की। 5 राजा सुलैमान और इब्राएल के सभी लोग साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने इकट्ठे हुए। उन्होंने अनेक बलि भेंट कीं। उन्होंने इतनी अधिक भेड़े और पशु मारे कि कोई व्यक्ति उन सभी को गिनने में समर्थ नहीं था।

6 तब याजकों ने यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक को उसके उचित स्थान पर रखा। यह मन्दिर के भीतर सर्वाधिक पवित्र स्थान में था। साक्षीपत्र का सन्दूक करूब (स्वर्गदूतों) के पंखों के नीचे रखा गया। 7 करूब (स्वर्गदूतों) के पंख पवित्र सन्दूक के ऊपर फैले थे। वे पवित्र सन्दूक और उसको ले चलने में सहायक बल्लियों

को ढके थे। 8 वे सहायक बल्लियों बहुत लम्बी थीं। यदि कोई व्यक्ति पवित्र स्थान में सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने खड़ा हो, तो वह बल्लियों के सिरों को देख सकता था। किन्तु बाहर का कोई भी उन्हें नहीं देख सकता था। वे बल्लियाँ आज भी वहाँ अन्दर हैं। 9 पवित्र सन्दूक के भीतर केवल दो अभिलिखित शिलायें थीं। वे दो अभिलिखित शिलायें वही थीं, जिन्हें मूसा ने होरेब नामक स्थान पर पवित्र सन्दूक में रखा था। होरेब वह स्थान था जहाँ यहोवा ने इब्राएल के लोगों के साथ उनके मित्र से बाहर आने के बाद वाचाकी।

10 याजकों ने सन्दूक को सर्वाधिक पवित्र स्थान में रखा। जब याजक पवित्र स्थान से बाहर आए तो बादल* यहोवा के मन्दिर में भर गया। 11 याजक अपना काम करते न रह सके क्योंकि मन्दिर यहोवा के प्रताप* से भर गया था। 12 तब सुलैमान ने कहा:

“यहोवा ने गगन में सूर्य को चमकाया, किन्तु उसने काले बादलों में रहना पसन्द किया।

13 मैंने तेरे लिए एक अद्भुत मन्दिर बनाया, एक निवास, जिसमें तू सदैव रहेगा।”

14 इब्राएल के सभी लोग वहाँ खड़े थे। इसलिये सुलैमान उनकी ओर मुड़ा और परमेश्वर ने उन्हें आशीर्वाद देने को कहा।

15 तब राजा सुलैमान ने यहोवा से एक लम्बी प्रार्थना की। जो उसने प्रार्थना की वह यह है:

“इब्राएल का यहोवा परमेश्वर महान है। यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से जो कुछ कहा— उन्हें उसने स्वयं पूरा किया है। यहोवा ने मेरे पिता से कहा,

16 ‘मैं अपने लोगों इब्राएलियों को मित्र से बाहर लाया। लेकिन मैंने अभी तक इब्राएल परिवार समूह से किसी नगर को नहीं चुना है, कि मुझे सम्मान देने के लिये मन्दिर—निर्माण करे। और मैंने अपने लोग, इब्राएलियों का मार्ग दर्शक कौन व्यक्ति हो, उसे नहीं चुना है। किन्तु अब मैंने यरूशलेम को चुना है जहाँ मैं सम्मानित होता रहूँगा। किन्तु अब, दाऊद को मैंने चुना है। मेरे इब्राएली लोगों पर शासन करने के लिये।’

17 ‘मेरे पिता दाऊद बहुत अधिक चाहते थे कि वे यहोवा, इब्राएल के परमेश्वर के सम्मान के लिये मन्दिर बनाएं। 18 किन्तु यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कहा, ‘मैं जानता हूँ कि तुम मेरे सम्मान के लिये मन्दिर बनाने की प्रबल इच्छा रखते हो और यह अच्छा है कि तुम मेरा मन्दिर बनाना चाहते हो। 19 किन्तु तुम वह व्यक्ति नहीं हो जिसे मैंने मन्दिर बनाने के लिये चुना है। तुम्हारा पुत्र मेरा मन्दिर बनाएगा।’

बादल विशेष दृश्य जो यह संकेत करता था कि परमेश्वर इब्राएल के लोगों के साथ है।

यहोवा के प्रताप लोगों के सामने प्रकट होते समय परमेश्वर के रूपों में से एक। यह तेज चमकीले प्रकाश की तरह था।

20"इस प्रकार यहोवा ने जो प्रतिज्ञा की थी उसे पूरी कर दी है। अब मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर राजा हूँ। अब मैं यहोवा की प्रतिज्ञा के अनुसार इज़्राएल के लोगों पर शासन कर रहा हूँ और मैंने इज़्राएल के परमेश्वर के लिये मन्दिर बनाया है। 21मैंने मन्दिर में एक स्थान पवित्र सन्दूक के लिये बनाया है। उस पवित्र सन्दूक में वह साक्षीपत्र है जो वाचा यहोवा ने हमारे पूर्वजों के साथ किया था। यहोवा ने वह वाचा तब की जब वह हमारे पूर्वजों को मिश्र से बाहर ले आया था।"

22तब सुलैमान यहोवा की वेदी के सामने खड़ा हुआ। सभी लोग उसके सामने खड़े थे। राजा सुलैमान ने अपने हाथों को फैलाया और आकाश की ओर देखा।

23उसने कहा: "हे यहोवा इज़्राएल के परमेश्वर तेरे समान धरती पर या आकाश में कोई ईश्वर नहीं है। तूने अपने लोगों के साथ वाचा की क्योंकि तू उनसे प्रेम करता है और तूने अपनी वाचा को पूरा किया। तू उन लोगों के प्रति दयालु और स्नेहपूर्ण है जो तेरा अनुसरण करते हैं। 24तूने अपने सेवक मेरे पिता दाऊद से, एक प्रतिज्ञा की थी और तूने वह पूरी की है। तूने वह प्रतिज्ञा स्वयं अपने मुँह से की थी और तूने अपनी महान शक्ति से उस प्रतिज्ञा को आज सत्य घटित होने दिया है। 25अब यहोवा इज़्राएल का परमेश्वर, उन अन्य प्रतिज्ञाओं को पूरा कर जो तूने अपने सेवक मेरे पिता दाऊद से की थीं। तूने कहा था, 'दाऊद जैसा तुमने किया वैसे ही तुम्हारी सन्तानों को मेरी आज्ञा का पालन सावधानी से करना चाहिये। यदि वे ऐसा करेंगे तो सदा कोई न कोई तुम्हारे परिवार का व्यक्ति इज़्राएल के लोगों पर शासन करेगा।'

26और हे यहोवा, इज़्राएल के परमेश्वर, मैं फिर तुझसे माँगता हूँ कि तू कृपया मेरे पिता के साथ की गई प्रतिज्ञा को पूरी करतारहे।

27"किन्तु परमेश्वर, क्या तू सचमुच इस पृथ्वी पर हम लोगों के साथ रहेगा? तुझको सारा आकाश और स्वर्ग के उच्चतम स्थान भी धारण नहीं कर सकते। निश्चय ही यह मन्दिर भी, जिसे मैंने बनाया है, तुझको धारण नहीं कर सकता। 28किन्तु तू मेरी प्रार्थना और मेरे निवेदन पर ध्यान दे। मैं तेरा सेवक हूँ और तू मेरा यहोवा परमेश्वर है। इस प्रार्थना को तू स्वीकार कर जिसे आज मैं तुझसे कर रहा हूँ। 29बीते समय में तूने कहा था, 'मेरा वहाँ सम्मान किया जायेगा।' इसलिये कृपया इस मन्दिर की देख-रेख दिन-रात कर। उस प्रार्थना को तू स्वीकार कर, जिसे मैं तुझसे इस समय मन्दिर में कह रहा हूँ। 30यहोवा, मैं और तेरे इज़्राएल के लोग इस मन्दिर में आएंगे और प्रार्थना करेंगे। कृपया इन प्रार्थनाओं पर ध्यान दे। हम जानते हैं कि तू स्वर्ग में रहता है। हम तुझसे वहाँ से अपनी प्रार्थना सुनने और हमें क्षमा करने की याचना करते हैं।

31"यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के विरुद्ध कोई अपराध करेगा तो वह यहाँ तेरी वेदी के पास लाया जायेगा। यदि वह व्यक्ति दोषी नहीं है तो वह एक शपथ लेगा। वह शपथ लेगा कि वह निर्दोष है। 32उस समय तू स्वर्ग में सुन और उस व्यक्ति के साथ न्याय कर। यदि वह व्यक्ति अपराधी है तो कृपया हमें स्पष्ट कर कि वह अपराधी है और यदि व्यक्ति निरपराध है तो हमें स्पष्ट कर कि वह अपराधी नहीं है।

33"कभी-कभी तेरे इज़्राएल के लोग तेरे विरुद्ध पाप करेंगे और उनके शत्रु उन्हें पराजित करेंगे। तब लोग तेरे पास लौटेंगे और वे लोग इस मन्दिर में तेरी प्रार्थना करेंगे। 34कृपया स्वर्ग से उनकी प्रार्थना को सुन। तब अपने इज़्राएली लोगों के पापों को क्षमा कर और उनकी भूमि उन्हें फिर से प्राप्त करने दे। तूने यह भूमि उनके पूर्वजों को दी थी।

35"कभी-कभी वे तेरे विरुद्ध पाप करेंगे, और तू उनकी भूमि पर वर्षा होना बन्द कर देगा। तब वे इस स्थान की ओर मुँह करके प्रार्थना करेंगे और तेरे नाम की स्तुति करेंगे। तू उनको कष्ट सहने देगा और वे अपने पापों के लिये पश्चाताप करेंगे। 36इसलिये कृपया स्वर्ग में उनकी प्रार्थना को सुन। तब हम लोगों को हमारे पापों के लिये क्षमा कर। लोगों को सच्चा जीवन बिताने की शिक्षा दे। हे यहोवा तब कृपया तू उस भूमि पर वर्षा कर जिसे तूने उन्हें दिया है।

37"भूमि बहुत अधिक सूख सकती है और उस पर कोई अन्न उग नहीं सकेगा या संभव है लोगों में महामारी फैले। संभव है सारा पैदा हुआ अन्न कीड़ों मकोड़ों द्वारा नष्ट कर दिया जाय या तेरे लोग अपने कुछ नगरों में अपने शत्रुओं के आक्रमण के शिकार बने या तेरे अनेक लोग बीमार पड़ जायें। 38जब इनमें से कुछ भी घटित हो, और एक भी व्यक्ति अपने पापों के लिये पश्चाताप करे, और अपने हाथों को इस मन्दिर की ओर प्रार्थना में फैलाये तो 39कृपया उसकी प्रार्थना को सुन। उसकी प्रार्थना को सुन जब तू अपने निवास स्थान स्वर्ग में है। तब लोगों को क्षमा कर और उनकी सहायता कर। केवल तू यह जानता है कि लोगों के मन में सचमुच क्या है? अतः हर एक के साथ न्याय कर और उनके प्रति न्यायशील रह। 40यह इसलिये कर कि तेरे लोग डरें और तेरा सम्मान तब तक सदैव करें जब तक वे इस भूमि पर रहें जिसे तूने हमारे पूर्वजों को दिया था।

41-42"अन्य स्थानों के लोग तेरी महानता और तेरी शक्ति के बारे में सुनेंगे। वे बहुत दूर से इस मन्दिर में प्रार्थना करने आएंगे। 43कृपया अपने निवास स्थान, स्वर्ग से उनकी प्रार्थना सुन। कृपया तू वह सब कुछ प्रदान कर जिसे अन्य स्थानों के लोग तुझसे माँगें। तब वे लोग भी इज़्राएली लोगों की तरह ही तुझसे डरेंगे और तेरा सम्मान करेंगे।

44"कभी-कभी तू अपने लोगों को अपने शत्रुओं के विरुद्ध जाने और उनसे युद्ध करने का आदेश देगा। तब तेरे लोग तेरे चुने हुए इस नगर और मेरे बनाये हुए मन्दिर की ओर अभिमुख होंगे। जिसे मैंने तेरे सम्मान में बनाया है और वे तेरी प्रार्थना करेंगे। 45उस समय तू अपने निवास स्थान स्वर्ग से उनकी प्रार्थनाओं को सुन और उनकी सहायता कर।

46"तेरे लोग तेरे विरुद्ध पाप करेंगे। मैं इसे इसलिये जानता हूँ क्योंकि हर एक व्यक्ति पाप करता है और तू अपने लोगों पर क्रोधित होगा। तू उनके शत्रुओं को उन्हें हराने देगा। उनके शत्रु उन्हें बन्दी बनाएंगे और उन्हें किसी बहुत दूर के देश में ले जाएंगे। 47उस दूर के देश में तेरे लोग समझेंगे कि क्या हो गया है। वे अपने पापों के लिये पश्चालाप करेंगे और तुझसे प्रार्थना करेंगे। वे कहेंगे, 'हमने पाप और अपराध किया है।' 48वे उस दूर के देशमें रहेंगे। किन्तु यदि वे इस देश जिसे तूने उनके पूर्वजों को दिया और तेरे चुने नगर और इस मन्दिर जिसे मैंने तेरेसम्मान में बनाया है। उसकी ओर मुख करके तुझसे प्रार्थना करेंगे। 49तो तू कृपया अपने निवास स्थान स्वर्ग से उनकी सुन। 50अपने लोगों को सभी पापों के लिये क्षमा कर दे और तू अपने विरोध में हुए पाप के लिये उन्हें क्षमा कर उनके शत्रुओं को उनके प्रति दयालु बना। 51याद रख कि वे तेरे लोग हैं, याद रख कि तू उन्हें मित्र से बाहर लाया। यह वैसा ही था जैसा तूने जलती भट्टी से उन्हें पकड़ कर खींच लिया हो!

52"यहोवा परमेश्वर, कृपया मेरी प्रार्थना और अपने इज्राएली लोगों की प्रार्थना सुन। उनकी प्रार्थना, जब कभी वे तेरी सहायता के लिये करें, सुन। 53तूने उन्हें पृथ्वी के सारे मनुष्यों में से अपना विशेष लोग होने के लिये चुना है। यहोवा तूने उसे हमारे लिये करने की प्रतिज्ञा की है। तूने हमारे पूर्वजों को मित्र से बाहर लाते समय यह प्रतिज्ञा अपने सेवक मूसा के माध्यम से की थी।"

54सुलैमान ने परमेश्वर से यह प्रार्थना की। वह वेदी के सामने अपने घुटनों के बल था। सुलैमान ने स्वर्ग की ओर भुजायें उठाकर प्रार्थना की। तब सुलैमान ने प्रार्थना पूरी की और वह उठ खड़ा हुआ। 55तब उसने उच्च स्वर में इज्राएल के सभी लोगों को आशीर्वाद देने के लिये परमेश्वर से याचना की। सुलैमान ने कहा:

56"यहोवा की स्तुति करो! उसने प्रतिज्ञा की, कि वह अपने इज्राएल के लोगों को शान्ति देगा और उसने हमें शान्ति दी है। यहोवा ने अपने सेवक मूसा का उपयोग किया और इज्राएल के लोगों के लिये बहुत सी अच्छी प्रतिज्ञायें की और यहोवा ने उन हर एक प्रतिज्ञाओं को पूरा किया है। 57मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा, हमारा परमेश्वर हम लोगों के साथ उसी तरह रहेगा जैसे वह

हमारे पूर्वजों के साथ रहा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा हमें कभी नहीं त्यागेगा। 58मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम उसकी ओर अभिमुख होंगे और उसका अनुसरण करेंगे। तब हम लोग उसके सभी नियमों, निर्णयों और आदेशों का पालन करेंगे जिन्हें उसने हमारे पूर्वजों को दिया।

59मैं आशा करता हूँ कि यहोवा हमारा परमेश्वर सदैव इस प्रार्थना को और जिन वस्तुओं की मैंने याचना की है, याद रखेगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा अपने सेवक राजा और अपने लोग इज्राएल के लिये ये सब कुछ करेगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह प्रतिदिन यह करेगा। 60यदि यहोवा इन कामों को करेगा तो संसार के सभी व्यक्ति यह जानेंगे कि मात्र यहोवा ही सत्य परमेश्वर है। 61ऐ लोगों, तुम्हें यहोवा, हमारे परमेश्वर का भक्त और उसके प्रति सच्चा होना चाहिये। तुम्हें उसके सभी नियमों और आदेशों का अनुसरण और पालन करना चाहिये। तुम्हें इस समय की तरह, भविष्य में भी उसकी आज्ञा का पालन करते रहना चाहिये।"

62तब राजा सुलैमान और उसके साथ के इज्राएल के लोगों ने यहोवा को बलि-भेंट की। 63सुलैमान ने बाईस हजार पशुओं और एक लाख बीस हजार भेड़ों को मारा। ये सहभागिता भेंटों के लिये थीं। यही पद्धति थी जिससे राजा और इज्राएल के लोगों ने मन्दिर का समर्पण किया अर्थात् उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि उन्होंने मन्दिर को यहोवा को अर्पित किया।

64उसी दिन राजा सुलैमान ने मन्दिर के सामने का आँगन समर्पित किया। उसने होमबलि, अन्नबलि और मेलबलि के रूप में काम आये जानवरों की चर्बी की भेंटें चढ़ाई। राजा सुलैमान ने ये भेंटें आँगन में चढ़ाई। उसने यह इसलिये किया कि इन सारी भेंटों को धारण करने के लिये यहोवा के सामने की काँसे की वेदी अत्याधिक छोटी थी।

65इस प्रकार मन्दिर में राजा सुलैमान और इज्राएल के सारे लोगों ने पर्व* मनाया। सारा इज्राएल, उत्तर में हमत दर्रे से लेकर दक्षिण में मित्र की सीमा तक, वहाँ था। वहाँ असंख्य लोग थे। उन्होंने खाते-पीते, सात दिन यहोवा के साथ मिलकर आनन्द मनाया। तब वे अगले सात दिनों तक वहाँ ठहरे। उन्होंने सब मिलाकर चौदह दिनों तक उत्सव मनाया। 66अगले दिन सुलैमान ने लोगों से घर जाने को कहा। सभी लोगों ने राजा को धन्यवाद दिया, विदा ली और वे घर चले गये। वे प्रसन्न थे क्योंकि यहोवा ने अपने सेवक दाऊद के लिये और इज्राएल के लोगों के लिये बहुत सारी अच्छी चीजें की थीं।

पर्व संभवतः "फसल का पर्व।"

परमेश्वर सुलैमान के पास पुनः आता है

9 इस प्रकार सुलेमान ने यहोवा के मन्दिर और अपने महल का बनाना पूरा किया। सुलैमान ने उन सभी को बनाया जिनका निर्माण वह करना चाहता था। 2तब यहोवा सुलैमान के सामने पुनः वैसे ही प्रकट हुआ जैसे वह इसके पहले गिबोन में हुआ था। 3यहोवा ने उससे कहा: "मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी। मैंने तुम्हारे निवेदन भी सुने जो तुम मुझसे करवाना चाहते हो। तुमने इस मन्दिर को बनाया और मैंने इसे एक पवित्र स्थान बनाया है। अतः यहाँ मेरा सदैव सम्मान होगा। मैं इस पर अपनी दृष्टि रखूँगा और इसके विषय में सदैव ध्यान रखूँगा। 4तुम्हें मेरी सेवा वैसे ही करनी चाहिये जैसी तुम्हारे पिता दाऊद ने की। वह निष्पक्ष और निष्कपट था और तुम्हें मेरे नियमों और उन आदेशों का पालन करना चाहिये जिन्हें मैंने तुम्हें दिया है।

5"यदि तुम यह सब कुछ करते रहोगे तो मैं यह निश्चित देखूँगा कि इज़्राएल का राजा सदैव तुम्हारे परिवार में से ही कोई हो। यही प्रतिज्ञा है जिसे मैंने तुम्हारे पिता दाऊद से की थी। मैंने उससे कहा था कि इज़्राएल पर सदैव उसके वंशजों में से एक का शासन होगा।

6-7"किन्तु यदि तुम या तुम्हारी सन्तानें मेरा अनुसरण करना छोड़ते हो, मेरे दिये गए नियमों और आदेशों का पालन नहीं करते और तुम दूसरे देवता की सेवा और पूजा करते हो तो मैं इज़्राएल को वह देश छोड़ने को विवश करूँगा जिसे मैंने उन्हें दिया है। इज़्राएल अन्य लोगों के लिये उदाहरण होगा। अन्य लोग इज़्राएल का मजाक उड़ाएंगे। मैंने मन्दिर को पवित्र किया है। यह वह स्थान है जहाँ लोग मेरा सम्मान करते हैं। किन्तु यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करते तो इसे मैं नष्ट कर दूँगा। 8यह मन्दिर नष्ट कर दिया जायेगा। हर एक व्यक्ति जो इसे देखेगा चकित होगा। वे पूछेंगे, 'यहोवा ने इस देश के प्रति और इस मन्दिर के लिये इतना भयंकर कदम क्यों उठाया?' 9अन्य लोग उत्तर देंगे, 'यह इसलिये हुआ कि उन्होंने यहोवा अपने परमेश्वर को त्याग दिया। वह उनके पूर्वजों को मित्र से बाहर लाया था। किन्तु उन्होंने अन्य देवताओं का अनुसरण करने का निश्चय किया। उन्होंने उन देवताओं की सेवा और पूजा करनी आरम्भ की। यही कारण है कि यहोवा ने उनके लिये इतना भयंकर कार्य किया।'"

10यहोवा का मन्दिर और अपना महल बनाने में सुलैमान को बीस वर्ष लगे 11और बीस वर्ष के बाद राजा सुलेमान ने सोर के राजा हीराम को गलील में बीस नगर दिये। सुलैमान ने राजा हीराम को वे नगर दिये क्योंकि हीराम ने मन्दिर और महल बनाने में सुलैमान की सहायता की। हीराम ने सुलैमान को उतने सारे देवदारु और चीड़ के वृक्ष तथा सोना दिया जितना उसने

चाहा। 12इसलिये हीराम ने सोर से इन नगरों को देखने के लिये यात्रा की, जिन्हें सुलैमान ने उसे दिये। जब हीराम ने उन नगरों को देखा तो वह प्रसन्न नहीं हुआ। 13राजा हीराम ने कहा, "मेरे भाई जो नगर तुमने मुझे दिये हैं वे हैं ही क्या?" राजा हीराम ने उस प्रदेश का नाम कबूल प्रदेश रखा और वह क्षेत्र आज भी कबूल कहा जाता है। 14हीराम ने सुलैमान के पास लगभग नौ हजार पौंड सोना मन्दिर को बनाने में उपयोग करने के लिये भेजा था।

15राजा सुलैमान ने दासों को अपने मन्दिर और महल बनाने के लिये काम करने के लिये विवश किया। तब राजा सुलैमान ने इन दासों का उपयोग बहुत सी चीज़ों को बनाने में किया। उसने मिल्लो बनाया। उसने यरूशलेम नगर के चारों ओर चहारदीवारी भी बनाई। तब उसने हसोर, मगिदो और गेजेर नगरों को पुनः बनाया।

16बीते समय में मिश्र का राजा गेजेर नगर के विरुद्ध लड़ा था और उसे जला दिया था। उसने उन कनानी लोगों को मार डाला जो वहाँ रहते थे। सुलैमान ने फिरौन की पुत्री से विवाह किया। इसलिये फिरौन ने उस नगर को सुलैमान के लिये विवाह की भेंट के रूप में दिया। 17सुलैमान ने उस नगर को पुनः बनाया। सुलैमान ने निचले बथोरेन नगर को भी बनाया। 18राजा सुलैमान ने जुदैन मरुभूमि में बालात और तामार नगरों को भी बनाया। 19राजा सुलैमान ने वे नगर भी बनाये जहाँ वह अन्य और चीज़ों का भण्डार बना सकता था और उसने अपने रथों और घोड़ों के लिये भी स्थान बनाये। सुलैमान ने अन्य बहुत सी चीज़ें भी बनाईं जिन्हें वह यरूशलेम, लबानोन और अपने शासित अन्य सभी स्थानों में चाहता था।

20देश में ऐसे लोग भी थे जो इज़्राएली नहीं थे। वे लोग एमोरी, हिती, परिजी, हिब्बी और यबूसी थे। 21इज़्राएली उन लोगों को नष्ट नहीं कर सके थे। किन्तु सुलैमान ने उन्हें दास के रूप में अपने लिये काम करने को विवश किया। वे अभी तक दास हैं। 22सुलैमान ने किसी इज़्राएली को अपना दास होने के लिये विवश नहीं किया। इज़्राएल के लोग सैनिक, राज्य कर्मचारी, अधिकारी, नायक और रथचालक थे।

23सुलैमान की योजनाओं के साठे पाँच सौ पर्यवेक्षक थे। वे उन व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी थे जो काम करते थे। 24फिरौन की पुत्री दाऊद के नगर से वहाँ गईं जहाँ सुलैमान ने उसके लिये विशाल महल बनाया। तब सुलैमान ने मिल्लों बनाया।

25हर वर्ष तीन बार सुलैमान होमबलि और मेलबलि वेदी पर चढ़ाता था। यह वही वेदी थी जिसे सुलैमान ने यहोवा के लिये बनाया था। राजा सुलैमान यहोवा के सामने सुगन्धि भी जलाता था। अतः मन्दिर के लिये आवश्यक चीज़ें दिया करता था।

26राजा सुलैमान ने एस्थोन गेबेर में जहाज भी बनाये। यह नगर एदोम प्रदेश में लाल सागर के तट पर एलोत के पास था। 27राजा हीराम के पास कुछ ऐसे व्यक्ति थे जो समुद्र के बारे में अच्छा ज्ञान रखते थे। वे व्यक्ति प्रायः जहाज से यात्रा करते थे। राजा हीराम ने उन व्यक्तियों को सुलैमान के नाविक बेड़े में सेवा करने और सुलैमान के व्यक्तियों के साथ काम करने के लिये भेजा। 28सुलैमान के जहाज ओपोर को गए। वे जहाज एकतीस हजार पाँच सौ पाँड सोना आपोर से सुलैमान के लिये लेकर लौटे।

शीबा की रानी सुलैमान से मिलने आती है

10 शीबा की रानी ने सुलैमान के बारे में सुना। अतः वह कठिन प्रश्नों से उसकी परीक्षा लेने आई। उसने सेवकों की विशाल संख्या के साथ यरूशलेम की यात्रा की। अनेक ऊँट मसाले, रत्न, और बहुत सा सोना ढो रहे थे। वह सुलैमान से मिली और उसने उन सब प्रश्नों को पूछा जिन्हें वह सोच सकती थी। 3सुलैमान ने सभी प्रश्नों के उत्तर दिये। उसका कोई भी प्रश्न उसके उत्तर देने के लिये अत्याधिक कठिन नहीं था। 4शीबा की रानी ने समझ लिया कि सुलैमान बहुत बुद्धिमान है। उसने उस सुन्दर महल को भी देखा जिसे उसने बनाया था। 5रानी ने राजा की मेज पर भोजन भी देखा। उसने उसके अधिकारियों को एक साथ मिलते देखा। उसने महल के सेवकों और जिन अच्छे वस्त्रों को उन्होंने पहन रखा था, उन्हें भी देखा। उसने उसकी दावतों और मन्दिर में चढ़ाई गई भेंटों को देखा। उन सभी चीजों ने वास्तव में उसे चकित कर दिया। 'उसकी सैंस ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गई!'

इसलिये रानी ने राजा से कहा, "मैंने अपने देश में आपकी बुद्धिमानी और बहुत सी बातों के बारे में सुना जो आपने कीं। वे सभी बातें सत्य हैं! 7मैं इन बातों में तब तक विश्वास नहीं करती थी जब तक मैं यहाँ नहीं आई और इन चीजों को अपनी आँखों से नहीं देखा। अब मैं देखती हूँ कि जितना मैंने सुन रखा था उससे भी अधिक यहाँ है। आपकी बुद्धिमत्ता और सम्पत्ति उससे बहुत अधिक है जितनी लोगों ने मुझको बताया। 8आपकी पत्नियाँ* और आपके अधिकारी बहुत भाग्यशाली हैं। वे प्रतिदिन आपकी सेवा कर सकते हैं और आपकी बुद्धिमत्तापूर्ण बातें सुन सकते हैं। 9आपका यहोवा परमेश्वर स्तुति योग्य है! आपको इज्राएल का राजा बनाने में उसे प्रसन्नता हुई। यहोवा परमेश्वर इज्राएल से प्रेम करता है। इसलिये उसने आपको राजा बनाया। आप नियमों का अनुसरण करते हैं और लोगों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करते हैं।"

10तब शीबा की रानी ने राजा को लगभग नौ हजार पाँड सोना दिया। उसने उसे अनेक मसाले और रत्न भी दिये। जितनी मात्रा में शीबा की रानी ने राजा सुलैमान को मसाले उपहार में दिये, उतनी मात्रा में मसाले फिर कभी इज्राएल देश में नहीं आए। शीबा की रानी ने उससे अधिक मसाले सुलैमान को दिये जितने पहले कभी किसी ने इज्राएल को लाकर दिये थे।

11हीराम के जहाज ओपोर से सोना ले आए। वे जहाज बहुत अधिक लकड़ी* और रत्न भी लाए। 12सुलैमान ने लकड़ी का उपयोग मन्दिर और महल को सम्भालने के लिये किया। उसने लकड़ी का उपयोग गायकों के लिये वीणा और बीन बनाने में भी किया। अन्य कोई भी व्यक्ति उस प्रकार की लकड़ी इज्राएल में कभी नहीं लाया, और किसी भी व्यक्ति ने तब से उस प्रकार की लकड़ी नहीं देखी।

13तब राजा सुलैमान ने शीबा की रानी को वे भेंटें दीं जो कोई राजा किसी अन्य देश के शासक को सदैव देता है। तब उसने उसे वह सब दिया जो कुछ भी उसने माँगा। इसके बाद रानी सेवकों सहित अपने देश को वापस लौट गई।

14राजा सुलैमान प्रति वर्ष लगभग उन्नासी हजार नौ सौ बीस पाँड सोना प्राप्त करता था।

15व्यापारिक जहाजों से सोना लाये जाने के अतिरिक्त उसने बणिक, व्यापारियों और अरब के राजाओं तथा देश के प्रशासकों से भी सोना प्राप्त किया।

16राजा सुलैमान ने दो सौ बड़ी ढालें सोने की परतों से बनाईं। हर एक ढाल में लगभग पन्द्रह पाँड सोना लगा था। 17उसने सोने के की पट्टियों की तीन सौ छोटी ढालें भी बनाईं। हर एक ढाल में लगभग चार पाँड सोना लगा था। राजा ने उन्हें उस भवन में रखा जिसे "लबानोन का वन" कहा जाता था।

18राजा सुलैमान ने एक विशाल हाथी दँत का सिंहासन भी बनाया। उसने उसे शुद्ध सोने से मढ़ा। 19सिंहासन पर पहुँचने के लिये उसमें छः पैड़ियाँ थीं। सिंहासन का पिछला भाग सिरे पर गोल था। कुर्सी के दोनों ओर हथके लगे थे और कुर्सी की बगल में दोनों हथके की नीचे सिंहों की तस्वीरें बनी थीं। 20छः पैड़ियों में से हर एक पर दो सिंह थे। हर एक के सिरे पर एक सिंह था। किसी भी अन्य राज्य में इस प्रकार का कुछ भी नहीं था। 21सुलैमान के सभी प्याले और गिलास सोने के बने थे और "लबानोन का वन" नामक भवन में सभी अस्त्र-शस्त्र शुद्ध सोने के बने थे। महल में कुछ भी चाँदी का नहीं बना था। सुलैमान के समय में सोना

लकड़ी यह विशेष प्रकार की लकड़ी थी जिसे "अल्मुग लकड़ी" कहा जाता है। कोई भी ठीकठीक नहीं जानता कि यह किस प्रकार की लकड़ी थी।

पत्नियाँ यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद में है। हिब्रू में "पुरुष" है।

इतना अधिक था कि लोग चाँदी को महत्वपूर्ण नहीं समझते थे।

22 राजा के पास बहुत से व्यापारिक जहाज भी थे जिन्हें वह अन्य देशों से वस्तुओं का व्यापार करने के लिये बाहर भेजता था। ये हीराम के जहाज थे। हर तीसरे वर्ष जहाज सोना, चाँदी, हाथी दाँत और पशु लाते थे।

23 सुलैमान पृथ्वी पर महानतम राजा था। वह सभी राजाओं से अधिक धनवान और बुद्धिमान था। 24 सर्वत्र लोग राजा सुलैमान को देखना चाहते थे। वे परमेश्वर द्वारा दी गई उसकी बुद्धिमत्ता की बात सुनना चाहते थे। 25 प्रत्येक वर्ष लोग राजा का दर्शन करने आते थे और प्रत्येक व्यक्ति भेंट लाता था। वे सोने-चाँदी के बने बर्तन, कपड़े, अस्त्र-शस्त्र, मसाले, घोड़े और खच्चर लाते थे।

26 अतः सुलैमान के पास अनेक रथ और घोड़े थे। उसके पास चौदह सौ रथ और बारह हजार घोड़े थे। सुलैमान ने इन रथों के लिये विशेष नगर बनाये। अतः रथ उन नगरों में रखे जाते थे। राजा सुलैमान ने रथों में से कुछ को अपने पास यरूशलेम में भी रखा। 27 राजा ने इब्राएल को बहुत सम्पन्न बना दिया। यरूशलेम नगर में चाँदी इतनी सामान्य थी जितनी चट्टानें, देवदारु की लकड़ी और पहाड़ों पर उगने वाले असंख्य अंजीर के पेड़ सामान्य थे। 28 सुलैमान ने मिश्र और कुए से घोड़े मँगाए। उसके व्यापारी उन्हें कुएँ से लाते थे और फिर उन्हें इब्राएल में लाते थे। 29 मिश्र के एक रथ का मूल्य लगभग पन्द्रह पौंड चाँदी था और एक घोड़े का मूल्य पौने चार पौंड चाँदी था। सुलैमान घोड़े और रथ हिली और अरामी राजाओं के हाथ बेचता था।

सुलैमान और उसकी बहुत सी पत्नियों

1 राजा सुलैमान स्त्रियों से प्रेम करता था। वह बहुत सी ऐसी स्त्रियों से प्रेम करता था जो इब्राएल राष्ट्र की नहीं थीं। इनमें फ़िरौन की पुत्री, हिली स्त्रियाँ, और मोआबी, अम्मोनी, एदोमी और सीदोनी स्त्रियाँ थीं। 2 बीते समय में यहोवा ने इब्राएल के लोगों से कहा था, "तुम्हें अन्य राष्ट्रों की स्त्रियों से विवाह नहीं करना चाहिये। यदि तुम ऐसा करोगे तो वे लोग तुम्हें अपने देवताओं का अनुसरण करने के लिये बाध्य करेंगी।" किन्तु सुलैमान उन स्त्रियों के प्रेम पाश में पड़ा। सुलैमान की सात सौ पत्नियाँ थीं। (ये सभी स्त्रियाँ अन्य राष्ट्रों के प्रमुखों की पुत्रियाँ थीं।) उसके पास तीन सौ दासियाँ भी थीं जो उसकी पत्नियों के समान थीं। उसकी पत्नियों ने उसे परमेश्वर से दूर हटाया। 4 जब सुलैमान बूढ़ा हुआ तो उसकी पत्नियाँ ने उससे अन्य देवताओं का अनुसरण कराया। सुलैमान ने उसी प्रकार पूरी तरह यहोवा का अनुसरण नहीं किया जिस प्रकार उसके पिता दाऊद ने

किया था। 5 सुलैमान ने अशतोरेत की पूजा की। यह सीदोन के लोगों की देवी थी। सुलैमान मिल्कोम की पूजा करता था। यह अम्मोनियों का घृणित देवता था। 6 इस प्रकार सुलैमान ने यहोवा के प्रति अपराध किया। सुलैमान ने यहोवा का अनुसरण पूरी तरह उस प्रकार नहीं किया जिस प्रकार उसके पिता दाऊद ने किया था।

7 सुलैमान ने कमोश की पूजा के लिये स्थान बनाया। कमोश मोआबी लोगों की घृणास्पद देवमूर्ति थी। सुलैमान ने उसके उच्चस्थान को यरूशलेम से लगी पहाड़ी पर बनाया। सुलैमान ने उसी पहाड़ी पर मोलेक का उच्चस्थान भी बनाया। मोलेक अम्मोनी लोगों की घृणास्पद देवमूर्ति थी। 8 तब सुलैमान ने अन्य देशों की अपनी सभी पत्नियों के लिये वही किया। उसकी पत्नियाँ सुगन्धि जलाती थीं और अपने देवताओं को बलि-भेंट करती थीं।

9 सुलैमान यहोवा, इब्राएल के परमेश्वर का अनुसरण करने से दूर हट गया। अतः यहोवा, सुलैमान पर क्रोधित हुआ। यहोवा सुलैमान के पास दो बार आया जब वह छोटा था। 10 यहोवा ने सुलैमान से कहा कि तुम्हें अन्य देवताओं का अनुसरण नहीं करना चाहिये। किन्तु सुलैमान ने यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया। 11 इसलिये यहोवा ने सुलैमान से कहा, "तुमने मेरे साथ की गई अपनी वाचा को तोड़ना पसन्द किया है। तुमने मेरे आदेशों का पालन नहीं किया है। अतः मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुमसे तुम्हारा राज्य छीन लूँगा। मैं इसे तुम्हारे सेवकों में से एक को दूँगा। 12 किन्तु मैं तुम्हारे पिता दाऊद से प्रेम करता था। इसलिये जब तक तुम जीवित हो तब तक मैं तुम्हारा राज्य नहीं लूँगा। मैं तब तक प्रतीक्षा करूँगा जब तक तुम्हारा पुत्र राजा नहीं बन जाता। तब मैं उससे इसे लूँगा। 13 तो भी मैं तुम्हारे पुत्र से सारा राज्य नहीं छीनूँगा। मैं उसे एक परिवार समूह पर शासन करने दूँगा। यह मैं दाऊद के लिये करूँगा। वह एक अच्छा सेवक था और यह मैं अपने चुने हुये नगर यरूशलेम के लिये भी करूँगा।"

सुलैमान के शत्रु

14 उस समय यहोवा ने एदोमी हृदय को सुलैमान का शत्रु बनाया। हृदय एदोम के राजा के परिवार से था। 15 यह इस प्रकार घटित हुआ। कुछ समय पहले दाऊद ने एदोम को हराया था। योआब दाऊद की सेना का सेनापति था। योआब एदोम में मरे व्यक्तियों को दफनाने गया। तब योआब ने वहाँ जीवित सभी व्यक्तियों को मार डाला। 16 योआब और सारे इब्राएली एदोम में छः महीने तक ठहरे। उस समय के बीच उन्होंने एदोम के सभी पुरुषों को मार डाला। 17 किन्तु उस समय हृदय अभी एक किशोर ही था। अतः हृदय मिश्र को भाग निकला। उसके पिता के कुछ सेवक उसके साथ गए। 18 उन्होंने मिद्यान को छोड़ा और वे परान को गए। वे मिश्र के

राजा फिरौन के पास गये और उससे सहायता माँगी। फिरौन ने हदद को एक घर और कुछ भूमि दी। फिरौन ने उसे सहायता भी दी और उसे खाने के लिये भोजन दिया।

19 फिरौन ने हदद को बहुत पसन्द किया। फिरौन ने हदद को एक पत्नी दी, स्त्री फिरौन की साली थी। (फिरौन की पत्नी तहपनेस थी।) 20 अतः तहपनेस की बहन हदद से ब्याही गई। उनका एक पुत्र गनबत नाम का हुआ। रानी तहपनेस ने गनबत को अपने बच्चों के साथ फिरौन के महल में बड़ा होने दिया।

21 मिश्र में हदद ने सुना कि दाऊद मर गया। उसने यह भी सुना कि सेनापति योआब मर गया। इसलिये हदद ने फिरौन से कहा, "मुझे अपने देश में अपने घर वापस लौट जाने दे।"

22 किन्तु फिरौन ने उत्तर दिया, "मैंने तुम्हें सारी चीज़, जिनकी तुम्हें यहाँ आवश्यकता है, दी है। तुम अपने देश में वापस क्यों जाना चाहते हो?"

हदद ने उत्तर दिया, "कृपया मुझे घर लौटने दें।"

23 यहोवा ने दूसरे व्यक्ति को भी सुलैमान के विरुद्ध शत्रु बनाया। यह व्यक्ति एल्यादा का पुत्र रजोन था। रजोन अपने स्वामी के यहाँ से भाग गया था। उसका स्वामी सोबा का राजा हददेजेर था। 24 दाऊद ने जब सोबा की सेना को हरा दिया तब उसके बाद रजोन ने कुछ व्यक्तियों को इकट्ठा किया और एक छोटी सेना का प्रमुख बन गया। रजोन दमिश्क गया और वहीं ठहरा। रजोन दमिश्क का राजा हो गया। 25 रजोन अराम पर शासन करता था। रजोन इम्राएल से घृणा करता था, इसलिये सुलैमान जब तक जीवित रहा वह पूरे समय इम्राएल का शत्रु बना रहा। रजोन और हदद ने इम्राएल के लिये बड़ी परेशानियाँ उत्पन्न कीं।

26 नबात का पुत्र यारोबाम सुलैमान के सेवकों में से एक था। यारोबाम एग्रैम परिवार समूह से था। वह सरेदा नगर का था। यारोबाम की माँ का नाम सरूयाह था। उसका पिता मर चुका था। वह राजा के विरुद्ध हो गया।

27 यारोबाम राजा के विरुद्ध क्यों हुआ? इसकी कहानी यह है: सुलैमान मिल्लो बना रहा था और अपने पिता दाऊद के नगर की दीवार को दृढ़ कर रहा था। 28 यारोबाम एक बलवान व्यक्ति था। सुलैमान ने देखा कि यह युवक एक अच्छा श्रमिक है। इसलिये सुलैमान ने उसे यूसुफ के परिवार समूह के श्रमिकों का अधिकारी बना दिया। 29 एक दिन यारोबाम यरूशलेम के बाहर यात्रा कर रहा था। शीलो का अहिव्याह नबी उससे सड़क पर मिला। अहिव्याह एक नया अंगरखा पहने था। ये दोनों व्यक्ति देश में अकेले थे। 30 अहिव्याह ने अपना नया अंगरखा लिया और इसे बारह टुकड़ों में फाड़ डाला।

31 तब अहिव्याह ने यारोबाम से कहा, "इस अंगरखा के दस टुकड़े तुम अपने लिये ले लो। यहोवा इम्राएल का परमेश्वर कहता है: 'मैं सुलैमान से राज्य को छीन लूँगा और मैं परिवार समूहों में से दस को, तुम्हें दूँगा। 32 और मैं दाऊद के परिवार को केवल एक परिवार समूह पर शासन करने दूँगा। मैं उन्हें केवल इस समूह को लेने दूँगा। मैं यह अपने दाऊद और यरूशलेम के लिये ऐसा करने दूँगा। यरूशलेम वह नगर है जिसे मैंने सारे इम्राएल के परिवार समूह से चुना है। 33 मैं सुलैमान से राज्य ले लूँगा क्योंकि उसने मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया। वह सीदोनी देवमूर्ती अशतोरेत की पूजा करता है। वह अशतोरेत, सीदोनी देवता, मोआबी देवता कमोश और अम्मोनी देवता मिल्कोम की पूजा करता है। सुलैमान ने सच्चे और अच्छे कामों को करना छोड़ दिया है। वह मेरे नियमों और आदेशों का पालन नहीं करता। वह उस प्रकार नहीं रहता जिस प्रकार उसका पिता दाऊद रहता था। 34 इसलिये मैं राज्य को सुलैमान के परिवार से ले लूँगा। किन्तु मैं सुलैमान को उसके शेष जीवन भर उनका शासक रहने दूँगा। यह मैं अपने सेवक दाऊद के लिये करूँगा। मैंने दाऊद को इसलिये चुना था कि वह मेरे सभी आदेशों व नियमों का पालन करता था। 35 किन्तु मैं उसके पुत्र से राज्य ले लूँगा और यारोबाम मैं तुम्हें दस परिवार समूह पर शासन करने दूँगा। 36 मैं सुलैमान के पुत्र को एक परिवार समूह पर शासन करते हुए रहने दूँगा। मैं इसे इसलिये करूँगा कि मेरे सेवक दाऊद का शासन यरूशलेम में मेरे सामने सदैव रहेगा। यरूशलेम वह नगर है जिसे मैंने अपना निजी नगर चुना है। 37 किन्तु मैं तुम्हें उन सभी पर शासन करने दूँगा जिसे तुम चाहते हो। तुम पूरे इम्राएल पर शासन करोगे। 38 मैं यह सब तुम्हारे लिये करूँगा। यदि तुम सच्चाई के साथ रहोगे और मेरे सारे आदेशों का पालन करोगे तो मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हारे परिवार को राजाओं का परिवार वैसे ही बना दूँगा जैसे मैंने दाऊद को बनाया। मैं तुमको इम्राएल दूँगा। 39 मैं दाऊद की सन्तानों को उसका दण्ड दूँगा जो सुलैमान ने किया। किन्तु मैं सदैव के लिये उन्हें दण्ड नहीं दूँगा।"

सुलैमान की मृत्यु

40 सुलैमान ने यारोबाम को मार डालने का प्रयत्न किया। किन्तु यारोबाम मिश्र भाग गया। वह मिश्र के राजा शीशक के पास गया। यारोबाम वहाँ तब तक ठहरा जब तक सुलैमान मरा नहीं।

41 सुलैमान ने अपने शासन काल में बहुत बड़े और बुद्धिमतापूर्ण काम किये। जिनका विवरण "सुलैमान के इतिहास-ग्रन्थ" में लिखा है। 42 सुलैमान ने यरूशलेम में पूरे इम्राएल पर चालीस वर्ष तक शासन किया। 43 तब सुलैमान मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया।

वह अपने पिता के दाऊद नगर में दफनाया गया, और उसका पुत्र रहूबियाम उसके स्थान पर राजा बना।

गृह युद्ध

12 1-2नबात का पुत्र यारोबाम तब भी मिश्र में था, जहाँ वह सुलैमान से भागकर पहुँचा था। जब उसने सुलैमान की मृत्यु की खबर सुनी तो वह एश्रम की पहाड़ियों में अपने जेरदा नगर में वापस लौट आया। राजा सुलैमान मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। उसके बाद उसका पुत्र रहूबियाम नया राजा बना। इज्राएल के सभी लोग शक्रेम गए। वे रहूबियाम को राजा बनाने गये। रहूबियाम भी राजा बनने के लिये शक्रेम गया। लोगों ने रहूबियाम से कहा, 4“तुम्हारे पिता ने हम लोगों को बहुत कठोर श्रम करने के लिये विवश किया। अब तुम इसे हम लोगों के लिये कुछ सरल करो। उस कठिन काम को बन्द करो जिसे करने के लिये तुम्हारे पिता ने हमें विवश किया था। तब हम तुम्हारी सेवा करेंगे।”

5रहूबियाम ने उत्तर दिया, “तीन दिन में मेरे पास वापस लौट कर आओ और मैं उत्तर दूँगा।” अतः लोग चले गये।

6कुछ अग्रज लोग थे जो सुलैमान के जीवित रहते उसके निर्णय करने में सहायता करते थे। इसलिये राजा रहूबियाम ने इन व्यक्तियों से पूछा कि उसे क्या करना चाहिये। उसने कहा, “आप लोग क्या सोचते हैं, मुझे इन लोगों को क्या उत्तर देना चाहिये?”

7अग्रजों ने उत्तर दिया, “यदि आज तुम उनके सेवक की तरह रहोगे तो वे सच्चाई से तुम्हारी सेवा करेंगे। यदि तुम दयालुता के साथ उनसे बात करोगे तब वे तुम्हारी सदा सेवा करेंगे।”

8किन्तु रहूबियाम ने उनकी यह सलाह न मानी। उसने उन नवयुवकों से सलाह ली जो उसके मित्र थे। 9रहूबियाम ने कहा, “लोग यह कहते हैं, ‘हमें उससे सरल काम दो जो तुम्हारे पिता ने दिया था।’ तुम क्या सोचते हो, मुझे लोगों को कैसे उत्तर देना चाहिये? मैं उनसे क्या कहूँ?”

10राजा के युवक मित्रों ने कहा, “वे लोग तुम्हारे पास आए और उन्होंने तुमसे कहा, ‘तुम्हारे पिता ने हमें कठिन श्रम करने के लिये विवश किया। अब हम लोगों का काम सरल करें।’ अतः तुम्हें डींग मारनी चाहिये और उनसे कहना चाहिये, ‘मेरी छोटी उंगली मेरे पिता के पूरे शरीर से अधिक शक्तिशाली है। 11मेरे पिता ने तुम्हें कठिन श्रम करने को विवश किया। किन्तु मैं उससे भी बहुत कठिन काम कराऊँगा। मेरे पिता ने तुमसे काम लेने के लिये कोड़ों का उपयोग किया था। मैं तुम्हें उन कोड़ों से पीटूँगा जिनमें धारदार लोहे के टुकड़े हैं, तुम्हें घायल करने के लिये।”

12रहूबियाम ने लोगों से कहा था, “तीन दिन में मेरे पास वापस आओ।” इसलिये तीन दिन बाद इज्राएल के सभी लोग रहूबियाम के पास लौटे। 13उस समय राजा रहूबियाम ने उनसे कठोर शब्द कहे। उसने अग्रजों की सलाह न मानी। 14उसने वही किया जो उसके मित्रों ने उसे करने को कहा। रहूबियाम ने कहा, “मेरे पिता ने तुम्हें कठिन श्रम करने को विवश किया। अतः मैं तुम्हें और अधिक काम दूँगा। मेरे पिता ने तुमको कोड़े से पीटा। किन्तु मैं तुम्हें उन कोड़ों से पीटूँगा जिनमें तुम्हें घायल करने के लिये धारदार लोहे के टुकड़े हैं।” 15अतः राजा ने वह नहीं किया जिसे लोग चाहते थे। यहोवा ने ऐसा होने दिया। यहोवा ने यह अपनी उस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिये किया जो उसने नबात के पुत्र यारोबाम के साथ की थी। यहोवा ने अहिय्याह नबी का उपयोग यह प्रतिज्ञा करने के लिये किया था। अहिय्याह शीलो का था।

16इज्राएल के सभी लोगों ने समझ लिया कि नये राजा ने उनकी बात अनसुनी कर दी है। इसलिये लोगों ने राजा से कहा, “क्या हम दाऊद के परिवार के अंग हैं? नहीं! क्या हमें यिश्शै की भूमि में से कुछ मिला है? नहीं! अतः इज्राएलियों हम अपने घर चलो। दाऊद के पुत्र को अपने लोगों पर शासन करने दो।” अतः इज्राएल के लोग अपने घर वापस गए। 17किन्तु रहूबियाम फिर भी उन इज्राएलियों पर शासन करता रहा, जो यहूदा के नगरों में रहते थे।

18अदोराम नामक एक व्यक्ति सब श्रमिकों का अधिकारी था। राजा रहूबियाम ने अदोराम को लोगों से बात चीत करने के लिये भेजा। किन्तु इज्राएल के लोगों ने उस पर तब तक पत्थर बरसाये जब तक वह मर नहीं गया। तब राजा रहूबियाम अपने रथ तक दौड़ा और यरूशलेम को भाग निकला। 19इस प्रकार इज्राएल ने दाऊद के परिवार से विद्रोह कर दिया और वे अब भी आज तक दाऊद के परिवार के विरुद्ध हैं।

20इज्राएल के सभी लोगों ने सुना कि यारोबाम वापस लौट आया है। इसलिये उन्होंने उसे एक सभा में आमन्त्रित किया और उसे पूरे इज्राएल का राजा बना दिया। केवल यहूदा का परिवार समूह ही एक मात्र परिवार समूह था जो दाऊद के परिवार का अनुसरण करता रहा।

21रहूबियाम यरूशलेम को वापस गया। उसने यहूदा के परिवार समूह और बिन्यामीन के परिवार समूह को इकट्ठा किया। यह एक लाख अस्सी हजार पुरुषों की सेना थी। रहूबियाम इज्राएल के लोगों के विरुद्ध युद्ध लड़ना चाहता था। वह अपने राज्य को वापस लेना चाहता था।

22किन्तु यहोवा ने परमेश्वर के एक व्यक्ति से बातें कीं। उसका नाम शमायाह था। परमेश्वर ने कहा, 23“यहूदा के राजा, सुलैमान के पुत्र, रहूबियाम और

यहूदा तथा बिन्यामीन के सभी लोगों से बात करो। 24उन्से कहो, 'यहोवा कहता है कि तुम्हें अपने भाईयों इम्राएल के लोगों के विरुद्ध युद्ध में नहीं जाना चाहिये। तुम सबको घर लौट जाना चाहिये। मैंने इन सभी घटनाओं को घटित होने दिया है।' अतः रहूबियाम की सेना के पुरुषों ने यहोवा का आदेश माना। वे, सभी अपने घर लौट गए।

25शकेम, एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में एक नगर था। यारोबाम ने शकेम को एक सुदृढ़ नगर बनाया और उसमें रहने लगा। इसके बाद वह पनूएल नगर को गया और उसे भी सुदृढ़ किया।

26-27यारोबाम ने अपने मन में सोचा, "यदि लोग यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर को जाते रहे तो वे दाऊद के परिवार द्वारा शासित होना चाहेंगे। लोग फिर यहूदा के राजा रहूबियाम का अनुसरण करना आरम्भ कर देंगे। तब वे मुझे मार डालेंगे।" 28इसलिये राजा ने अपने सलाहकारों से पूछा कि उसे क्या करना चाहिये? उन्होंने उसे अपनी सलाह दी। अतः यारोबाम ने दो सुनहले बछड़े बनाये। राजा यारोबाम ने लोगों से कहा, "तुम्हें उपासना करने यरूशलेम नहीं जाना चाहिये। इम्राएलियों, ये देवता हैं जो तुम्हें मित्र से बाहर ले आए।"*

29राजा यारोबाम ने एक सुनहले बछड़े को बेतेल में रखा। उसने दूसरे सुनहले बछड़े को दान में रखा। 30किन्तु यह बहुत बड़ा पाप था। इम्राएल के लोगों ने बेतेल और दान नगरों की यात्रा बछड़ों की पूजा करने के लिये की। किन्तु यह बहुत बड़ा पाप था।

31यारोबाम ने उच्च स्थानों, पर पूजागृह भी बनाए। उसने इम्राएल के विभिन्न परिवार समूहों से याजक भी चुने। (उसने केवल लेवी परिवार समूह से याजक नहीं चुने।) 32और राजा यारोबाम ने एक नया पर्व आरम्भ किया। यह पर्व यहूदा के "फसहपर्व" की तरह था। किन्तु यह पर्व आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन था—पहले महीने के पन्द्रहवें दिन नहीं। उस समय राजा बेतेल नगर की वेदी पर बलि भेंट करता था और वह बलि उन बछड़ों को भेंट करता था जिन्हें उसने बनवाया था। राजा यारोबाम ने बेतेल में उन उच्चस्थानों के लिये याजक भी चुने, जिन्हें उसने बनाया था। 33इसलिये राजा यारोबाम ने इम्राएलियों के लिये पर्व के लिये अपना ही समय चुना। यह आठवें महीने का पन्द्रहवाँ दिन था। उन दिनों वह उस वेदी पर बलि भेंट करता था और सुगन्धि जलाता था जिसे उसने बनाया था। यह बेतेल नगर में था।

मित्र से बाहर ले आए यह ठीक वही कथन है जो हारून ने तब कहा जब उसने मरुभूमि में सुनहला बछड़ा बनाया। देखें निर्गमन 32:4

परमेश्वर बेतेल के विरुद्ध घोषणा करता है

13 यहोवा ने यहूदा के निवासी परमेश्वर के एक व्यक्ति (नबी) को यहूदा से बेतेल नगर में जाने का आदेश दिया। राजा यारोबाम उस समय सुगन्धि भेंट करता हुआ वेदी के पास खड़ा था जिस समय परमेश्वर का व्यक्ति (नबी) वहाँ पहुँचा। यहोवा ने उस परमेश्वर के व्यक्ति को आदेश दिया था कि तुम वेदी के विरुद्ध बोलना। उसने कहा, "वेदी, यहोवा तुमसे कहता है: 'दाऊद के परिवार में एक पुत्र योशियाह नामक उत्पन्न होगा। ये याजक अब उच्च स्थानों पर पूजा कर रहे हैं। किन्तु वेदी, योशियाह उन याजकों को तुम पर रखेगा और वह उन्हें मार डालेगा। अब वे याजक तुम पर सुगन्धि जलाते हैं। किन्तु योशियाह तुम पर नर-अस्थियाँ जलायेगा। तब तुम्हारा उपयोग दुबारा नहीं हो सकेगा।'"

परमेश्वर के व्यक्ति ने यह सब घटित होगा, इसका प्रमाण लोगों को दिया। उसने कहा, यहोवा ने जिसके विषय में मुझसे कहा है उसका प्रमाण यह है। यहोवा ने कहा, "यह वेदी दो टुकड़े हो जायेगी और इसकी राख जमीन पर गिर पड़ेगी।"

4राजा यारोबाम ने परमेश्वर के व्यक्ति से बेतेल में वेदी के प्रति दिया सन्देश सुना। उसने वेदी से हाथ खींच लिया और व्यक्ति की ओर संकेत किया। उसने कहा, "इस व्यक्ति को बन्दी बना लो!" किन्तु राजा ने जब यह कहा तो उसके हाथ को लकवा मार गया। वह उसे हिला नहीं सका। 5वेदी के भी टुकड़े-टुकड़े हो गए। उसकी सारी राख जमीन पर गिर पड़ी। यह इसका प्रमाण था कि परमेश्वर के व्यक्ति ने जो कहा वह परमेश्वर की तरफ से था। 6तब राजा यारोबाम ने परमेश्वर के व्यक्ति से कहा, "कृपया यहोवा अपने परमेश्वर से मेरे लिये प्रार्थना करें। यहोवा से याचना करें कि वह मेरी भुजा स्वस्थ कर दे।"

अतः "परमेश्वर के व्यक्ति" ने यहोवा से प्रार्थना की और राजा की भुजा स्वस्थ हो गई। यह वैसी ही हो गई जैसी पहले थी। तब राजा ने परमेश्वर के व्यक्ति से कहा, "कृपया मेरे साथ घर चलो। आएँ और मेरे साथ भोजन करें मैं आपको एक भेंट दूँगा।"

8किन्तु परमेश्वर के व्यक्ति ने राजा से कहा, "मैं आपके साथ घर नहीं जाऊँगा। यदि आप मुझे अपना आधा राज्य भी दें तो भी मैं नहीं जाऊँगा। मैं इस स्थान पर न कुछ खाऊँगा, न ही कुछ पीऊँगा। 9यहोवा ने मुझे आदेश दिया है कि मैं कुछ न तो खाऊँ न ही पीऊँ। यहोवा ने यह भी आदेश दिया है कि मैं उस मार्ग से यात्रा न करूँ जिसका उपयोग मैंने यहाँ आते समय किया।"

10इसलिये उसने भिन्न सड़क से यात्रा की। उसने उसी सड़क का उपयोग नहीं किया जिसका उपयोग उसने बेतेल को आते समय किया था।

11बेतल नगर में एक वृद्ध नबी रहता था। उसके पुत्र आए और उन्होंने उसे बताया कि परमेश्वर के व्यक्ति ने बेतल में क्या किया। उन्होंने अपने पिता से वह भी कहा जो परमेश्वर के व्यक्ति ने राजा यारोबाम से कहा था। 12वृद्ध नबी ने कहा, “जब वह चला तो किस सड़क से गया?” अतः पुत्रों ने अपने पिता को वह सड़क दिखाई जिससे यहूदा से आने वाला परमेश्वर का व्यक्ति गया था। 13वृद्ध नबी ने अपने पुत्रों से अपने गधे पर काठी रखने के लिये कहा। अतः उन्होंने काठी गधे पर डाली। तब नबी अपने गधे पर चल पड़ा।

14वृद्ध नबी परमेश्वर के व्यक्ति के पीछे गया। वृद्ध नबी ने परमेश्वर के व्यक्ति को एक बांजवृक्ष के नीचे बैठे देखा। वृद्ध नबी ने पूछा, “क्या आप वही परमेश्वर के व्यक्ति हैं जो यहूदा से आए हैं?”

परमेश्वर के व्यक्ति ने उत्तर दिया, “हाँ, मैं ही हूँ।”

15इसलिये वृद्ध नबी ने कहा, “कृपया घर चले और मेरे साथ भोजन करें।”

16किन्तु परमेश्वर के व्यक्ति ने उत्तर दिया, “मैं तुम्हारे साथ घर नहीं जा सकता। मैं इस स्थान पर तुम्हारे साथ खा-पी भी नहीं सकता। 17यहोवा ने मुझसे कहा, ‘तुम उस स्थान पर कुछ खाना पीना नहीं और तुम्हें उसी सड़क से वापस लौटना भी नहीं है जिससे तुम वहाँ आए।’”

18तब वृद्ध नबी ने कहा, “किन्तु मैं भी तुम्हारी तरह नबी हूँ।” तब वृद्ध नबी ने एक झूठ बोला। उसने कहा, “यहोवा के यहाँ से एक स्वर्गदूत मेरे पास आया। स्वर्गदूत ने मुझसे तुम्हें अपने घर लाने और तुम्हें मेरे साथ भोजन पानी करने की स्वीकृति दी है।”

19इसलिये परमेश्वर का व्यक्ति वृद्ध नबी के घर गया और उसके साथ खाया-पीया। 20जब वे मेज पर बैठे थे, यहोवा ने वृद्ध नबी से कहा।

21और वृद्ध नबी ने यहूदा के निवासी परमेश्वर के व्यक्ति के साथ बातचीत की। उसने कहा, “यहोवा ने कहा, कि तुमने उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया। तुमने वह नहीं किया जिसके लिये यहोवा का आदेश था। 22यहोवा ने आदेश दिया था कि तुम्हें इस स्थान पर कुछ भी खाना या पीना नहीं चाहिये। किन्तु तुम वापस लौटे और तुमने खाया पीया। इसलिये तुम्हारा शव तुम्हारे परिवार की कब्रगाह में नहीं दफनाया जाएगा।”

23परमेश्वर के व्यक्ति ने भोजन करना और पीना समाप्त किया। तब वृद्ध नबी ने उसके लिये गधे पर काठी कसी और वह चला गया। 24घर की ओर यात्रा करते समय सड़क पर एक सिंह ने आक्रमण किया और परमेश्वर के व्यक्ति को मार डाला। नबी का शव सड़क पर पड़ा था। गधा और सिंह शव के पास खड़े थे। 25कुछ अन्य व्यक्ति उस सड़क से यात्रा कर रहे थे। उन्होंने शव को देखा और शव के पास सिंह को खड़ा

देखा। वे व्यक्ति उस नगर को आए जहाँ नबी रहता था और वहाँ वह बताया जो उन्होंने सड़क पर देखा था।

26वृद्ध नबी ने उस व्यक्ति को धोखा दिया था और उसे वापस ले गया था। उसने जो कुछ हुआ था वह सुना और उसने कहा, “वह परमेश्वर का व्यक्ति है जिसने यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया। इसलिये यहोवा ने उसे मारने के लिये एक सिंह भेजा। यहोवा ने कहा कि उसे यह करना चाहिये।” 27तब नबी ने अपने पुत्रों से कहा, “मेरे गधे पर काठी डालो। अतः उसके पुत्रों ने उसके गधे पर काठी डाली। 28वृद्ध नबी गया और उसके शव को सड़क पर पड़ा पाया। गधा और सिंह तब भी उसके पास खड़े थे। सिंह ने शव को नहीं खाया था और गधे को चोट नहीं पहुँचाई थी। 29वृद्ध नबी ने शव को अपने गधे पर रखा। वह शव को वापस ले गया जिससे उसके लिये रो सके और उसे दफना सके। 30वृद्ध नबी ने उसे अपने परिवार की कब्रगाह में दफनाया। वृद्ध नबी उसके लिये रोया। वृद्ध नबी ने कहा, “ऐ मेरे भाई मैं तुम्हारे लिये दुःखी हूँ।” 31इस प्रकार वृद्ध नबी ने शव को दफनाया। तब उसने अपने पुत्रों से कहा, “जब मैं मरूँ तो मुझे इसी कब्र में दफनाना। मेरी अस्थियों को उसकी अस्थियों के समीप रखना। 32जो बातें यहोवा ने उसके द्वारा कहलवाई हैं वे निश्चित ही सत्य घटित होंगी। यहोवा ने उसका उपयोग बेतल की वेदी और शोमरोन के अन्य नगरों में स्थित उच्च स्थानों के विरुद्ध बोलने के लिये किया।”

33राजा यारोबाम ने अपने को नहीं बदला। वह पाप कर्म करता रहा। वह विभिन्न परिवार समूहों से लोगों को याजक बनने के लिये चुनता रहा। वे याजक उच्च स्थानों पर सेवा करते थे। जो कोई याजक होना चाहता था याजक बन जाने दिया जाता था। 34यही पाप था जो उसके राज्य की बरबादी और विनाश का कारण बना।

यारोबाम का पुत्र मर जाता है

14 उस समय यारोबाम का पुत्र अबिव्याह बहुत बीमार पड़ा। थ्यारोबाम ने अपनी पत्नी से कहा, “शीलो जाओ। जाओ और अहिव्याह नबी से मिलो। अहिव्याह वह व्यक्ति है जिसने कहा था कि मैं झग्राएल का राजा बनूँगा। अपने वस्त्र ऐसे पहनों कि कोई न समझे कि तुम मेरी पत्नी हो। उनबी को दस रोटियाँ, कुछ पुए और शहद का एक घड़ा दो। तब उससे पूछो कि हमारे पुत्र का क्या होगा। अहिव्याह नबी तुम्हें बतायेगा।”

4इसलिये राजा की पत्नी ने वह किया जो उसने कहा। वह शीलो गई। वह अहिव्याह नबी के घर गई। अहिव्याह बहुत बूढ़ा और अन्धा हो गया था। किन्तु यहोवा ने उससे कहा, “यारोबाम की पत्नी तुमसे अपने

पुत्र के बारे में पूछने के लिये आ रही है। वह बीमार है।" यहोवा ने अहिय्याह को बताया कि उसे क्या कहना चाहिये।

यारोबाम की पत्नी अहिय्याह के घर पहुँची। वह प्रयत्न कर रही थी कि लोग न जाने कि वह कौन है। 6अहिय्याह ने उसके द्वार पर आने की आवाज सुनी। अतः अहिय्याह ने कहा, "यारोबाम की पत्नी, यहाँ आओ। तुम क्यों यह प्रयत्न कर रही हो कि लोग यह समझें कि तुम कोई अन्य हो? मेरे पास तुम्हारे लिये कुछ बुरी सूचनायें हैं। 7वापस लौटो और यारोबाम से कहो कि यहोवा इम्राएल का परमेश्वर, जो कहता है, वह यह है। यहोवा कहता है, 'यारोबाम, इम्राएल के सभी लोगों में से मैंने तुम्हें चुना। मैंने तुम्हें अपने लोगों का शासक बनाया। 8दाऊद के परिवार ने इम्राएल पर शासन किया किन्तु मैंने उनसे राज्य ले लिये और उसे तुमको दे दिया। किन्तु तुम मेरे सेवक दाऊद के समान नहीं हो। उसने मेरे आदेशों का सदा पालन किया। उसने पूरे हृदय से मेरा अनुसरण किया। उसने वे ही काम किये जिन्हें मैंने स्वीकार किया। 9किन्तु तुमने बहुत से भीषण पाप किये हैं। तुम्हारे पाप उन सभी के पापों से अधिक हैं जिन्होंने तुमसे पहले शासन किया। तुमने मेरा अनुसरण करना बन्द कर दिया है। तुमने मूर्तियाँ और अन्य देवता बनाये। इसने मुझे बहुत क्रोधित किया। इससे मैं बहुत क्रुद्ध हुआ हूँ। 10अतः यारोबाम, मैं तुम्हारे परिवार पर विपत्ति लाऊँगा। मैं तुम्हारे परिवार के सभी पुरुषों को मार डालूँगा। मैं तुम्हारे परिवार को पूरी तरह वैसे ही नष्ट कर डालूँगा जैसे आग उपलों को नष्ट करती है। 11तुम्हारे परिवार का जो कोई नगर में मरेगा उसे कुत्ते खायेंगे और तुम्हारे परिवार का जो कोई व्यक्ति मैदान में मरेगा उसे पक्षी खायेंगे। यहोवा ने यह कहा है।"

12तब अहिय्याह नबी यारोबाम की पत्नी से बात करता रहा। उसने कहा, "अब तुम घर जाओ। जैसे ही तुम अपने नगर में प्रवेश करोगे तुम्हारा पुत्र मरेगा। 13सारा इम्राएल उसके लिये रोएगा और उसे दफनाएगा। मात्र तुम्हारा पुत्र ही यारोबाम के परिवार में ऐसा होगा जिसे दफनाया जाएगा। इसका कारण यह है कि यारोबाम के परिवार में केवल वही ऐसा व्यक्ति है जिसने यहोवा, इम्राएल के परमेश्वर को प्रसन्न किया है। 14यहोवा इम्राएल का एक नया राजा बनायेगा। वह नया राजा यारोबाम के परिवार को नष्ट करेगा। यह बहुत शीघ्र होगा। 15तब यहोवा इम्राएल को चोट पहुँचायेगा। इम्राएल के लोग बहुत डर जायेंगे—वे जल की लम्बी घास की तरह काँपेंगे। यहोवा इम्राएलियों को इस अच्छे प्रदेश से उखाड़ देगा। यह वही भूमि है जिसे उसने उनके पूर्वजों को दिया था। वह उनको फरत नदी की दूसरी ओर बिखेर देगा। यह होगा, क्योंकि यहोवा लोगों पर क्रोधित है। लोगों ने उसको तब क्रोधित किया जब उन्होंने

अशेरा की पूजा के लिये विशेष स्तम्भ खड़े किये। 16यारोबाम ने पाप किया और तब यारोबाम ने इम्राएल के लोगों से पाप करवाया। अतः यहोवा इम्राएल के लोगों को पराजित होने देगा।"

17यारोबाम की पत्नी तिरजा को लौट गई। ज्यों ही वह घर में घुसी, लड़का मर गया। 18पूरे इम्राएल ने उसको दफनाया और उसके लिये वे रोये। यह ठीक वैसे ही हुआ जैसा यहोवा ने होने को कहा था। यहोवा ने अपने सेवक अहिय्याह नबी का उपयोग ये बातें कहने के लिये किया।

19राजा यारोबाम ने अन्य बहुत से काम किये। उसने युद्ध किये और लोगों पर शासन करता रहा। उसने जो कुछ किया वह सब "इम्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा हुआ है। 20यारोबाम ने बाईस वर्ष तक राजा के रूप में शासन किया। तब वह मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। उसका पुत्र नादाब उसके बाद नया राजा हुआ।

21उस समय जब सुलैमान का लड़का रहूबियाम यहूदा का राजा बना, वह इकतालीस वर्ष का था। रहूबियाम ने यरूशलम नगर में सत्रह वर्ष तक शासन किया। यह वही नगर है जिसमें यहोवा ने सम्मानित होना चुना। उसने इम्राएल के अन्य सभी नगरों में से इस नगर को चुना। रहूबियाम की नामा नामक माँ अम्मोन की थी।

22यहूदा के लोगों ने भी पाप किये और उन कामों को किया जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा था। लोगों ने अपने ऊपर यहोवा को क्रोधित करने के लिये और अधिक बुरे काम किये। वे लोग अपने उन पूर्वजों से भी बुरे थे जो उनके पहले वहाँ रहते थे। 23लोगों ने उच्च स्थान, पत्थर के स्मारक और पवित्र स्तम्भ बनाए। उन्होंने उन्हें हर एक ऊँचे पहाड़ पर एवं प्रत्येक पेड़ के नीचे बनाये।

24ऐसे भी लोग थे जिन्होंने अपने तन को शारीरिक सम्बन्धों के लिये बेचकर अन्य देवताओं की सेवा की।* इस प्रकार यहूदा के लोगों ने अनेक बुरे काम किये। जो लोग उस देश में उनसे पहले रहते थे उन्होंने भी वे ही पापपूर्ण काम किये थे और परमेश्वर ने उन लोगों से वह देश ले लिया था और इम्राएल के लोगों को दे दिया था।

25रहूबियाम के राज्य काल के पाँचवें वर्ष मिश्र का राजा शीशक यरूशलम के विरुद्ध लड़ा। 26शीशक ने यहोवा के मन्दिर और राजा के महल से खजाने ले लिये। उसने उन सुनहली ढालों को भी ले लिया जिन्हें दाऊद ने अराम के राजा हददजर के अधिकारियों से

ऐसे ... सेवा की इस प्रकार के शारीरिक सम्बन्धों के पाप कनानी देवताओं की पूजा—पद्धति के अंग थे।

लिया था। दाऊद इन ढालों को यरूशलेम ले गया था। किन्तु शीशक ने सभी सुनहली ढालें ले लीं। 27 अतः राजा रहूबियाम ने उनके स्थान पर रखने के लिये अनेक ढालें बनवाईं। किन्तु ये ढालें काँसे की थीं, सोने की नहीं। उसने ये ढालें उन पुरुषों को दीं जो महल के द्वारों की रक्षा करते थे। 28 जब कभी राजा यहोवा के मन्दिर को जाता था, द्वाररक्षक उसके साथ हर बार जाते थे। वे ढालें ले जाते थे। जब वे काम पूरा कर लेते थे तब वे रक्षक कक्ष में ढालों को लटका देते थे।

29 राजा रहूबियाम ने जो कुछ किया वह सब, “यहूदा के राजाओं के इतिहास” नामक पुस्तक में लिखा हुआ है। 30 रहूबियाम और यारोबाम सदैव एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध करते रहे।

31 रहूबियाम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। उसे उसके पूर्वजों के साथ दाऊद नगर में दफनाया गया। (उसकी माँ नामा, अम्मोन की थी।) रहूबियाम का पुत्र अबिव्याम उसके बाद नया राजा बना।

यहूदा का राजा अबिव्याम

15 नाबात का पुत्र यारोबाम इम्राएल पर शासन कर रहा था। यारोबाम के राज्यकाल के अट्ठारहवें वर्ष, अबिव्याम यहूदा का नया राजा बना। 2 अबिव्याम ने तीन वर्ष तक शासन किया। उसकी माँ का नाम माका था। वह अबशालोम की पुत्री थी।

3 उसने वे सभी पाप किये जो उसके पिता ने उसके पहले किये थे। अबिव्याम अपने पितामह दाऊद की तरह यहोवा, अपने परमेश्वर का भक्त नहीं था। यहोवा दाऊद से प्रेम करता था। अतः उसी के लिये यहोवा ने अबिव्याम को यरूशलेम में राज्य दिया और यहोवा ने उसे एक पुत्र दिया। यहोवा ने यरूशलेम को सुरक्षित भी रहने दिया। यह उसने दाऊद के लिये किया। 5 दाऊद ने सदैव ही उचित काम किये जिन्हें यहोवा चाहता था। उसने सदैव यहोवा के आदेशों का पालन किया था। केवल एक बार दाऊद ने यहोवा का आदेश नहीं माना था जब दाऊद ने हिती ऊरिव्याह के विरुद्ध पाप किया था।

6 रहूबियाम और यारोबाम हमेशा एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध लड़ते रहे। 7 जो कुछ अन्य काम अबिव्याम ने किये वह “यहूदा के राजाओं के इतिहास” नामक पुस्तक में लिखा है। उस सारे समय में जब अबिव्याम राजा था, यारोबाम और अबिव्याम के बीच युद्ध चलता रहा। 8 जब अबिव्याम मरा तो उसे दाऊद-नगर में दफनाया गया। अबिव्याम का पुत्र “आसा” उसके बाद नया राजा हुआ।

यहूदा का राजा आसा

9 इम्राएल के ऊपर यारोबाम के राजा के रूप में शासन करने के बीसवें वर्ष में आसा यहूदा का राजा

बना। 10 आसा ने यरूशलेम में इकतालीस वर्ष तक शासन किया। उसकी पितामही का नाम माका था और माका अबशालोम की पुत्री थी।

11 आसा ने अपने पूर्वज दाऊद की तरह उन कामों को किया जिन्हें यहोवा ने उचित कहा। 12 उन दिनों ऐसे लोग थे जो अपने तन को शारीरिक सम्बन्ध के लिये बेचकर अन्य देवताओं की सेवा करते थे। आसा ने उन लोगों को देश छोड़ने के लिये विवश किया। आसा ने उन देव मूर्तियों को भी दूर किया जो उसके पूर्वजों ने बनाई थीं। 13 आसा ने अपनी पितामही माका को रानी पद से हटा दिया। माका ने देवी अशोरा की उन भयंकर मूर्तियों में से एक को बनाया था। उसने इस भयंकर मूर्ति को काट डाला। उसने उसे किद्रोन की घाटी में जलाया। 14 आसा ने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया, किन्तु वह पूरे जीवन भर यहोवा का भक्त रहा। 15 आसा के पिता ने कुछ चीजें परमेश्वर को दी थीं। आसा ने भी परमेश्वर को कुछ भेटे चढ़ाई थीं। उन्होंने, सोने चाँदी और अन्य चीजों की भेटे दीं। आसा ने उन सभी चीजों को मन्दिर में जमा कर दिया।

16 जब तक राजा आसा यहूदा का राजा था, वह सदैव इम्राएल के राजा बाशा के विरुद्ध युद्ध करता रहा। 17 बाशा यहूदा के विरुद्ध लड़ता रहा। बाशा लोगों को, आसा के देश यहूदा से आने अथवा जाने से रोकना चाहता था। अतः उसने रामा नगर को बहुत सुदृढ़ बना दिया। 18 अतः आसा ने यहोवा के मन्दिर और राजमहल के खजानों से सोना और चाँदी निकाला। उसने यह सोना-चाँदी अपने सेवकों को दिया और उन्हें अराम के राजा बेन्हदद के पास भेजा। बेन्हदद हेज्जोन के पुत्र तब्रिमोन का पुत्र था। उसने दमिश्क नगर में शासन किया। 19 आसा ने यह सन्देश भेजा, “मेरे पिता और तुम्हारे पिता के मध्य एक शान्ति-सन्धि थी। अब मैं तुम्हारे और अपने बीच एक शान्ति-सन्धि करना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे पास सोना-चाँदी की भेंट भेज रहा हूँ। इम्राएल के राजा बाशा के साथ अपनी सन्धि तोड़ दौं तब बाशा मेरे देश को छोड़ देगा।”

20 राजा बेन्हदद ने आसा के सन्देश को स्वीकार किया। अतः उसने इम्राएल के नगरों के विरुद्ध लड़ने के लिये अपनी सेना भेजी। बेन्हदद ने इज्थोन, दान, आबेल्वेत्माका और गलीली झील के चारों ओर के नगरों को पराजित किया। उसने सारे नप्ताली क्षेत्र को हराया। 21 बाशा ने इन आक्रमणों के बारे में सुना। इसलिये उसने रामा को दृढ़ बनाना बन्द कर दिया। उसने उस नगर को छोड़ दिया और तिसाँ को लौट गया। 22 तब राजा आसा ने यहूदा के सभी लोगों को आदेश दिया कि हर एक व्यक्ति को सहायता देनी होगी। वे रामा को गए और उन्होंने उन पत्थरों और लकड़ियों को उठा लिया जिनका उपयोग बाशा नगर को दृढ़

बनाने के लिये कर रहा था। वे उन चीजों को बिन्यामीन प्रदेश में गेबा और मिस्रा को ले गए। तब आसा ने उन दोनों नगरों को बहुत अधिक दृढ़ बनाया।

23 आसा के बारे में अन्य बातें, व महान कार्य जो उसने किये और नगर जिन्हें उसने बनाया वह, "यहूदा के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा है। जब आसा बूढ़ा हुआ तो उसके पैर में एक रोग उत्पन्न हुआ। 24 आसा मरा और उसे उसके पूर्वज दाऊद के नगर में दफनाया गया। तब आसा का पुत्र यहोशापात उसके बाद नया राजा बना।

इज़्राएल का राजा नादाब

25 यहूदा पर आसा के राज्य काल के दूसरे वर्ष में यारोबाम का पुत्र नादाब इज़्राएल का राजा हुआ। नादाब ने इज़्राएल पर दो वर्ष तक शासन किया। 26 नादाब ने यहोवा के विरुद्ध बुरे काम किये। उसने वैसे ही पाप किये जैसे उसके पिता यारोबाम ने किये थे और यारोबाम ने इज़्राएल के लोगों से भी पाप कराये थे।

27 बाशा अहिव्याह का पुत्र था। वे इस्साकार के परिवार समूह से थे। बाशा ने राजा नादाब को मार डालने की एक योजना बनाई। यह वह समय था जब नादाब और सारा इज़्राएल गिबबतोन नगर के विरुद्ध युद्ध में लड़ रहे थे। यह एक पलिशती नगर था। उस स्थान पर बाशा ने नादाब को मार डाला। 28 यह यहूदा पर आसा के राज्यकाल के तीसरे वर्ष में हुआ और बाशा इज़्राएल का अगला राजा बना।

इज़्राएल का राजा बाशा

29 जब बाशा नया राजा हुआ तो उसने यारोबाम के परिवार के हर एक व्यक्ति को मार डाला। बाशा ने यारोबाम के परिवार में किसी व्यक्ति को जीवित नहीं छोड़ा। यह वैसे ही हुआ जैसा होने के लिये यहोवा ने कहा था। यहोवा ने शीलो के अपने सेवक अहिव्याह द्वारा यह कहा था। 30 यह हुआ, क्योंकि यारोबाम ने अनेक पाप किये थे और यारोबाम ने इज़्राएल के लोगों से अनेक पाप कराये थे। यारोबाम ने यहोवा इज़्राएल के परमेश्वर को बहुत क्रोधित कर दिया था।

31 नादाब ने जो अन्य काम किये वे "इज़्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा हुआ है। 32 पूरे समय, जब तक बाशा इज़्राएल का शासक था, वह यहूदा के राजा आसा के विरुद्ध युद्ध में लड़ता रहा।

33 अहिव्याह का पुत्र बाशा, यहूदा पर आसा के राज्य काल के तीसरे वर्ष में इज़्राएल का राजा हुआ था। बाशा तिस्रा में चौबीस वर्ष तक राजा रहा। 34 किन्तु बाशा ने वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। उसने वे ही

पाप किये जो उसके पूर्वज यारोबाम ने किये थे। यारोबाम ने इज़्राएल के लोगों से पाप कराये थे।

16 तब यहोवा ने हनान के पुत्र यहू से बातें की। यहोवा राजा बाशा के विरुद्ध बातें कह रहा था। 2 "मैंने तुमको एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बनाया। मैंने तुमको अपने इज़्राएल के लोगों के ऊपर राजा बनाया। किन्तु तुमने यारोबाम का अनुसरण किया है। तुमने मेरे लोगों, इज़्राएलियों से पाप कराया है। उन्होंने अपने पापों से मुझे क्रोधित किया है। इसलिए बाशा, मैं तुझे और तुम्हारे परिवार को नष्ट करूँगा। मैं तुम्हारे साथ वही करूँगा जो मैंने नबत के पुत्र यारोबाम के परिवार के साथ किया। 4 तुम्हारे परिवार के लोग नगर की सड़कों पर मरेंगे और उनके शवों को कुत्तें खायेंगे। तुम्हारे परिवार के कुछ लोग मैदानों में मरेंगे और उनके शवों को पक्षी खायेंगे।"

5 बाशा के विषय में अन्य बातें और जो महान कार्य उसने किये सभी "इज़्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा है। 6 बाशा मरा और तिस्रा में दफनाया गया। उसका पुत्र एला उसके बाद नया राजा बना।

7 अतः यहोवा ने यहू नबी को एक सन्देश दिया। यह सन्देश बाशा और उसके परिवार के विरुद्ध था। बाशा ने यहोवा के विरुद्ध बुरे कर्म किये थे। इससे यहोवा अत्यन्त क्रोधित हुआ। बाशा ने वही किया जो यारोबाम के परिवार ने उससे पहले किया था। यहोवा इसलिये भी क्रोधित था कि बाशा ने यारोबाम के पूरे परिवार को मार डाला था।

इज़्राएल का राजा एला

8 यहूदा पर आसा के राज्य काल के छब्बीसवें वर्ष में एला राजा हुआ। एला बाशा का पुत्र था। उसने तिस्रा में दो वर्ष तक शासन किया।

9 राजा एला के अधिकारियों में से जिम्नी एक था। जिम्नी एला के आधे रथों को आदेश देता था। किन्तु जिम्नी ने एला के विरुद्ध योजना बनाई। राजा एला तिस्रा में था। वह अर्सा के घर में दाखमधु पी रहा था और मत हो रहा था। अर्सा, तिस्रा के महल का अधिकारी था। 10 जिम्नी उस घर में गया और उसने राजा एला को मार डाला। यहूदा पर आसा के राज्य काल के सताईसवें वर्ष में यह हुआ। तब एला के बाद इज़्राएल का नया राजा जिम्नी हुआ।

इज़्राएल का राजा जिम्नी

11 जब जिम्नी राजा हुआ तो उसने बाशा के पूरे परिवार को मार डाला। उसने बाशा के परिवार में किसी व्यक्ति को जीवित नहीं रहने दिया। जिम्नी ने बाशा के मित्रों को भी मार डाला। 12 इस प्रकार जिम्नी ने बाशा के परिवार

को नष्ट किया। यह वैसे ही हुआ जैसा यहोवा ने, यहू नबी का उपयोग बाशा के विरुद्ध कहने को कहा था। 13यह, बाशा और उसके पुत्र एला के, सभी पापों के कारण हुआ। उन्होंने पाप किया था और इम्राएल के लोगों से पाप कराया था। यहोवा क्रोधित था क्योंकि उन्होंने बहुत सी देवमूर्तियाँ रखी थीं।

14"इम्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में ये अन्य सभी बातें लिखी हैं जो एला ने कीं।

15यहूदा पर आसा के राज्य काल के सत्ताईसवें वर्ष में जिम्री इम्राएल का राजा बना। जिम्री ने तिस्रा में सात दिन शासन किया। जो कुछ हुआ, यह है: इम्राएल की सेना गिबबतोन के पलिशियों के समीप डेरा डाले पड़ी थी। वे युद्ध के लिये तैयार थे। 16पड़ाव में स्थित लोगों ने सुना कि जिम्री ने राजा के विरुद्ध गुप्त षडयन्त्र रचा है। उन्होंने सुना कि उसने राजा को मार डाला। इसलिये सारे इम्राएल ने डेरे में, उस दिन ओम्री को इम्राएल का राजा बनाया। ओम्री सेनापति था। 17इसलिये ओम्री और सारे इम्राएल ने गिबबतोन को छोड़ा और तिस्रा पर आक्रमण कर दिया। 18जिम्री ने देखा कि नगर पर अधिकार कर लिया गया है। अतः वह महल के भीतर चला गया और उसने आग लगानी आरम्भ कर दी। उसने महल और अपने को जला दिया। 19इस प्रकार जिम्री मरा क्योंकि उसने पाप किया था। जिम्री ने उन कामों को किया जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा था। उसने वैसे ही पाप किये जैसे यारोबाम ने किये थे और यारोबाम ने इम्राएल के लोगों से पाप कराया था।

20"इम्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में जिम्री के गुप्त षडयन्त्र और अन्य बातें लिखी हैं और जब जिम्री राजा एला के विरुद्ध हुआ, उस समय की घटनायें भी उसमें लिखी हैं।

इम्राएल का राजा ओम्री

21इम्राएली लोग दो दलों में बँट गये थे। आधे लोग गीनत के पुत्र तिब्नी का अनुसरण करते थे और उसे राजा बनाना चाहते थे। अन्य आधे लोग ओम्री के अनुयायी थे। 22किन्तु ओम्री के अनुयायी गीनत के पुत्र तिब्नी के अनुयायियों से अधिक शक्तिशाली थे। अतः तिब्नी मारा गया और ओम्री राजा हुआ।

23यहूदा पर आसा के राज्यकाल के इकतीसवें वर्ष में ओम्री इम्राएल का राजा हुआ। ओम्री ने इम्राएल पर बारह वर्ष तक शासन किया। उन वर्षों में से छः वर्षों तक उसने तिस्रा नगर में शासन किया। 24किन्तु ओम्री ने शोमरोन की पहाड़ी को खरीद लिया। उसने इसे लगभग डेढ़ सौ पाँड चाँदी शमेर से खरीदा। ओम्री ने उस पहाड़ी पर एक नगर बसाया। उसने इसके स्वामी शमेर के नाम पर इस नगर का नाम शोमरोन रखा।

25ओम्री ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा घोषित किया था। ओम्री उन सभी राजाओं से बुरा था जो उसके पहले हो चुके थे। 26उसने वे ही पाप किये जो नबात के पुत्र यारोबाम ने किये थे। यारोबाम ने इम्राएल के लोगों से पाप कराया था। इसलिये उन्होंने यहोवा, इम्राएल के परमेश्वर को बहुत क्रोधित कर दिया था। यहोवा क्रोधित था, क्योंकि वे निरर्थक देवमूर्तियों की पूजा करते थे।

27"इम्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में ओम्री के विषय में अन्य बातें और उसके किये महान कार्य लिखे गए हैं। 28ओम्री मरा और शोमरोन में दफनाया गया। उसका पुत्र अहाब उसके बाद नया राजा बना।

इम्राएल का राजा अहाब

29यहूदा पर आसा के राज्य काल के अड़तीसवें वर्ष में ओम्री का पुत्र अहाब इम्राएल का राजा बना। 30अहाब ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था और अहाब उन सभी राजाओं से भी बुरा था जो उसके पहले हुए थे। 31अहाब के लिये इतना ही काफी नहीं था कि वह वैसे ही पाप करे जैसे नबात के पुत्र यारोबाम ने किये थे। अतः अहाब ने एतबाल की पुत्री ईजेबेल से विवाह किया। एतबाल सीदोन के लोगों का राजा था। तब अहाब ने बाल की सेवा और पूजा करनी आरम्भ की। 32अहाब ने बाल की पूजा करने के लिये शोमरोन में पूजागृह बनाया। उसने पूजागृह में एक वेदी रखी।

33अहाब ने अशेरा की पूजा के लिये एक विशेष स्तम्भ भी खड़ा किया। अहाब ने यहोवा, इम्राएल के परमेश्वर को क्रोधित करने वाले बहुत से काम, उन सभी राजाओं से अधिक किये, जो उसके पहले थे।

34अहाब के राज्य काल में बतेल के हीएल ने यरीहो नगर को दुबारा बनाया। जिस समय हीएल ने नगर बनाने का काम आरम्भ किया, उसका बड़ा पुत्र अबीराम मर गया और जब हीएल ने नगर द्वार बनाये, उसका सबसे छोटा पुत्र सगूब मर गया। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने नून के पुत्र यहोशू से बातें करते हुए कहा था।*

एलिय्याह और अनावृष्टि का समय

17 एलिय्याह गिलाद में तिशाबी नगर का एक नबी था। एलिय्याह ने राजा अहाब से कहा, "मैं यहोवा, इम्राएल के परमेश्वर की सेवा करता हूँ। उसकी शक्ति के बल पर मैं भविष्यवाणी करता हूँ कि अगले जैसे यहोवा ने ... कहा था जिस समय यहोशू ने यरीहो को नष्ट किया उसने कहा था कि जो कोई इस नगर को दुबारा बनायेगा वह अपने जेठे और छोटे पुत्र से हाथ धोएगा।

कुछ वर्षों में न तो ओस गिरेगी, और न ही वर्षा होगी। वर्षा तभी होगी जब मैं उसके होने का आदेश दूँगा।”

2तब यहोवा ने एलिय्याह से कहा, “इस स्थान को छोड़ दो और पूर्व की ओर चले जाओ। करीत नाले के पास छिप जाओ। यह नाला यरदन नदी के पूर्व में है। 4तुम नाले से पानी पी सकते हो। मैंने कौबों को आदेश दिया है कि वे तुमको उस स्थान पर भोजन पहुँचायेंगे।” 5अतः एलिय्याह ने वही किया जो यहोवा ने करने को कहा। वह यरदन नदी के पूर्व करीत नाले के समीप रहने चला गया। 6हर एक प्रातः और सन्ध्या को कौबे एलिय्याह के लिये भोजन लाते थे। एलिय्याह नाले से पानी पीता था।

7वर्षा नहीं हुई अतः कुछ समय उपरान्त नाला सूख गया। 8तब यहोवा ने एलिय्याह से कहा, “सीदोन में सारपत को जाओ। वहीं रहो। उस स्थान पर एक विधवा स्त्री रहती है। मैंने उसे तुम्हें भोजन देने का आदेश दिया है।”

10अतः एलिय्याह सारपत पहुँचा। वह नगर-द्वार पर पहुँचा और उसने एक स्त्री को देखा। उसका पति मर चुका था। वह स्त्री ईधन के लिये लकड़ियाँ इकट्ठी कर रही थी। एलिय्याह ने उससे कहा, “क्या तुम एक प्याले में थोड़ा पानी दोगी जिसे मैं पी सकूँ?” 11वह स्त्री उसके लिये पानी लाने जा रही थी, तो एलिय्याह ने कहा, “कृपया मेरे लिये एक रोटी का छोटा टुकड़ा भी लाओ।”

12उस स्त्री ने उत्तर दिया, “मैं यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर की शपथ खाकर कहती हूँ कि मेरे पास रोटी नहीं है। मेरे पास बर्तन में मुट्ठी भर आटा और पीपे में थोड़ा सा जैतून का तेल है। इस स्थान पर मैं ईधन के लिये दो चार लकड़ियाँ इकट्ठी करने आई थी। मैं इसे लेकर घर लौटूँगी और अपना आखिरी भोजन पकाऊँगी। मैं और मेरा पुत्र दोनों इसे खायेंगे और तब भूख से मर जाएंगे।”

13एलिय्याह ने स्त्री से कहा, “परेशान मत हो। घर लौटो और जैसा तुमने कहा, अपना भोजन पकाओ। किन्तु तुम्हारे पास जो आटा है उसकी पहले एक छोटी रोटी बनाना। उस रोटी को मेरे पास लाना। तब अपने और अपने पुत्र के लिये पकाना। 14इझ्राएल का परमेश्वर, यहोवा कहता है, “उस आटे का बर्तन कभी खाली नहीं होगा। पीपे में तेल सदैव रहेगा। ऐसा तब तक होता रहेगा जिस दिन तक यहोवा इस भूमि पर पानी नहीं बरसाता।”

15अतः वह स्त्री अपने घर लौटी। उसने वही किया जो एलिय्याह ने उससे करने को कहा था। एलिय्याह, वह स्त्री और उसका पुत्र बहुत दिनों तक पर्याप्त भोजन पाते रहे। 16आटे का बर्तन और तेल का पीपा दोनों कभी खाली नहीं हुआ। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने

होने को कहा था। यहोवा ने एलिय्याह के द्वारा बातें की थीं।

17कुछ समय बाद उस स्त्री का लड़का बीमार पड़ा। वह अधिक, और अधिक बीमार होता गया। अन्त में लड़के ने साँस लेना बन्द कर दिया। 18और उस स्त्री ने एलिय्याह से कहा, “तुम परमेश्वर के व्यक्ति हो। क्या तुम मुझे सहायता दे सकते हो? या क्या तुम मुझे सारे पापों को केवल याद कराने के लिये यहाँ आये हो? क्या तुम यहाँ मेरे पुत्र को केवल मरवाने आये थे?”

19एलिय्याह ने उससे कहा, “अपना पुत्र मुझे दो।” एलिय्याह ने उसके लड़के को उससे लिया और सीढ़ियों से ऊपर ले गया। उसने उसे उस कमरे में बिछौने पर लिटाया जिसमें वह रुका हुआ था। 20तब एलिय्याह ने प्रार्थना की, “हे यहोवा, मेरे परमेश्वर, यह विधवा मुझे अपने घर में ठहरा रही है। क्या तू उसके साथ यह बुरा काम करेगा? क्या तू उसके पुत्र को मरने देगा?” 21तब एलिय्याह लड़के के ऊपर तीन बार लेटा। एलिय्याह ने प्रार्थना की, “हे यहोवा, मेरे परमेश्वर! इस लड़के को पुनर्जीवित कर।”

22“यहोवा ने एलिय्याह की प्रार्थना स्वीकार की। लड़का पुनः साँस लेने लगा। वह जीवित हो गया। 23एलिय्याह बच्चे को सीढ़ियों से नीचे ले गया। एलिय्याह ने उस लड़के को उसकी माँ को दिया और कहा, “देखो, तुम्हारा पुत्र जी उठा।”

24उस स्त्री ने उत्तर दिया, “अब मुझे विश्वास हो गया कि तुम सच में परमेश्वर के यहाँ के व्यक्ति हो। मैं समझ गई हूँ कि सचमुच में यहोवा तुम्हारे माध्यम से बोलता है।”

एलिय्याह और बाल के नबी

18 अनावृष्टि के तीसरे वर्ष यहोवा ने एलिय्याह से कहा, “जाओ, और राजा अहाब से मिलो। मैं शीघ्र ही वर्षा भेजूँगा।” 2अतः एलिय्याह अहाब के पास गया।

उस समय शौमरोन में भोजन नहीं रह गया था। 3इसलिये राजा अहाब ने ओबद्याह से अपने पास आने को कहा। ओबद्याह राज महल का अधिकारी था। (ओबद्याह यहोवा का सच्चा अनुयायी था। 4एक बार ईज़ेबेल यहोवा के सभी नबियों को जान से मार रही थी। इसलिये ओबद्याह ने सौ नबियों को लिया और उन्हें दो गुफाओं में छिपाया। ओबद्याह ने एक गुफा में पचास नबी और दूसरी गुफा में पचास नबी रखे। तब ओबद्याह उनके लिये पानी और भोजन लाया।) 5राजा अहाब ने ओबद्याह से कहा, “मेरे साथ आओ। हम लोग इस प्रदेश के हर एक सोते और नाले की खोज करेंगे। हम लोग पता लगायेंगे कि क्या हम अपने घोड़ों और खच्चरों को जीवित रखने के लिये पर्याप्त घास कहीं पा सकते हैं। तब हमें अपना कोई जानवर खोना नहीं पड़ेगा।”

6हर एक व्यक्ति ने देश का एक भाग चुना जहाँ वे पानी की खोज कर सकें। तब दोनों व्यक्ति पूरे देश में घूमें। अहाब एक दिशा में अकेले गया। ओबद्याह दूसरी दिशा में अकेले गया। 7जब ओबद्याह यात्रा कर रहा था तो उस समय वह एलिय्याह से मिला। ओबद्याह ने जब उसे देखा एलिय्याह को पहचान लिया। ओबद्याह एलिय्याह के सामने प्रणाम करने झुका उसने कहा, "एलिय्याह! क्या स्वामी सचमुच आप है?"

8एलिय्याह ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं ही हूँ। जाओ और अपने स्वामी राजा से कहो कि मैं यहाँ हूँ।"

9तब ओबद्याह ने कहा, "यदि मैं अहाब से कहूँगा कि मैं जानता हूँ कि तुम कहाँ हो, तो वह मुझे मार डालेगा! मैंने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा है। तुम क्यों चाहते हो कि मैं मर जाऊँ? 10यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर की सत्ता जैसे निश्चित है, वैसे ही यह निश्चित है, कि राजा तुम्हारी खोज कर रहा है। उसने हर एक देश में तुम्हारा पता लगाने के लिये आदमी भेज रखे हैं। यदि किसी देश के राजा ने यह कहा कि तुम उसके देश में नहीं हो, तो अहाब ने उसे यह शपथ खाने को विवश किया कि तुम उसके देश में नहीं हो। 11अब तुम चाहते हो कि मैं जाऊँ और उससे कहूँ कि तुम यहाँ हो? 12यदि मैं जाऊँ और राजा अहाब से कहूँ कि तुम यहाँ हो तो यहोवा तुम्हें किसी अन्य स्थान पर पहुँचा सकता है। राजा अहाब यहाँ आयेगा और वह तुम्हें नहीं पा सकेगा। तब वह मुझे मार डालेगा। मैंने यहोवा का अनुसरण तब से किया है जब मैं एक बालक था। 13तुमने सुना है कि मैंने क्या किया था। ईज़ेबेल यहोवा के नबियों को मार रही थी और मैंने सौ नबियों को गुफाओं में छिपाया था। मैंने एक गुफा में पचास नबियों और दूसरी गुफा में पचास नबियों को रखा था। मैं उनके लिये अन्न-पानी लाया। 14अब तुम चाहते हो कि मैं जाऊँ और राजा से कहूँ कि तुम यहाँ हो। राजा मुझे मार डालेगा।"

15एलिय्याह ने उत्तर दिया, "जितनी सर्वशक्तिमान यहोवा की सत्ता निश्चित है उतना ही निश्चित यह है कि मैं आज राजा के सामने खड़ा होऊँगा।"

16इसलिये ओबद्याह राजा अहाब के पास गया। उसने बताया कि एलिय्याह वहाँ है। राजा अहाब एलिय्याह से मिलने गया।

17जब अहाब ने एलिय्याह को देखा तो उसने पूछा, "क्या एलिय्याह तुम्हीं हो? तुम्हीं वह व्यक्ति हो जो इज़्राएल पर विपत्ति लाते हो।"

18एलिय्याह ने उत्तर दिया, "मैंने इज़्राएल पर विपत्ति नहीं डाली। तुमने और तुम्हारे पिता के परिवार ने यह सारी विपत्ति डाली है। तुमने विपत्ति लानी तब आरम्भ की जब तुमने यहोवा के आदेशों का पालन करना बन्द कर दिया और असत्य देवताओं का अनुसरण आरम्भ

किया। 19अब सारे इज़्राएलियों को कर्ममल पर्वत पर मुझसे मिलने को कहो। उस स्थान पर बाल के चार सौ पचास नबियों को भी लाओ और असत्य देवी अशेरा के चार सौ नबियों को लाओ। रानी* ईज़ेबेल उन नबियों का समर्थन करती है।"

20अतः अहाब ने सभी इज़्राएलियों और उन नबियों को कर्ममल पर्वत पर बुलाया। 21एलिय्याह सभी लोगों के पास आया। उसने कहा, "आप लोग कब निर्णय करेंगे कि आपको किसका अनुसरण करना है? यदि यहोवा सच्चा परमेश्वर है तो आप लोगों को उसका अनुयायी होना चाहिये। किन्तु यदि बाल सत्य परमेश्वर है तो तुम्हें उसका अनुयायी होना चाहिये।"

लोगों ने कुछ भी नहीं कहा। 22अतः एलिय्याह ने कहा, "मैं यहाँ यहोवा का एकमात्र नबी हूँ। मैं अकेला हूँ। किन्तु यहाँ बाल के चार सौ पचास नबी हैं। 23इसलिये दो बैल लाओ। बाल के नबी को एक बैल लेने दो। उन्हें उसे मारने दो और उसके टुकड़े करने दो और तब उन्हें, माँस को लकड़ी पर रखने दो। किन्तु वे आग लगाना आरम्भ न करें। तब मैं वही काम दूसरे बैल को लेकर करूँगा और मैं आग लगाना आरम्भ नहीं करूँगा। 24बाल के नबी! बाल से प्रार्थना करेंगे और मैं यहोवा से प्रार्थना करूँगा। जो ईश्वर प्रार्थना को स्वीकार करे और अपनी लकड़ी को जलाना आरम्भ कर दे, वही सच्चा परमेश्वर है।"

सभी लोगों ने स्वीकार किया कि यह उचित विचार है।

25तब एलिय्याह ने बाल के नबियों से कहा, "तुम बड़ी संख्या में हो। अतः तुम लोग पहल करो। एक बैल को चुनो और उसे तैयार करो। किन्तु आग लगाना आरम्भ न करो।"

26अतः नबियों ने उस बैल को लिया जो उन्हें दिया गया। उन्होंने उसे तैयार किया। उन्होंने दोपहर तक बाल से प्रार्थना की। उन्होंने प्रार्थना की, "बाल, कृपया हमें उत्तर दे।" किन्तु कोई आवाज नहीं आई। किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। नबी उस वेदी के चारों ओर नाचते रहे जिसे उन्होंने बनाया था। किन्तु आग फिर भी नहीं लगी।

27दोपहर को एलिय्याह ने उनका मजाक उड़ाना आरम्भ किया। एलिय्याह ने कहा, "यदि बाल सचमुच देवता है तो कदाचित् तुम्हें और अधिक जोर से प्रार्थना करनी चाहिये। कदाचित् वह सोच रहा हो या कदाचित् वह बहुत व्यस्त हो, या कदाचित् वह किसी यात्रा पर निकल गया हो। वह सोता रह सकता है। कदाचित् तुम लोग और अधिक जोर से प्रार्थना करो और जगाओ!"

28उन्होंने और जोर से प्रार्थना की। उन्होंने अपने को

रानी ने नबी ईज़ेबेल के मेज पर भोजन करते हैं।

तलवार और भालों से काटा-छेदा। (यह उनकी पूजा-पद्धति थी।) उन्होंने अपने को इतना काटा कि उनके ऊपर खून बहने लगा। 29तीसरा पहर बीता किन्तु तब तक आग नहीं लगी। नबी उन्मत्त रहे जब तक सन्ध्या की बलि-भेंट का समय नहीं आ पहुँचा। किन्तु तब तक भी बाल ने कोई उत्तर नहीं दिया। कोई अवाज नहीं आई। कोई नहीं सुन रहा था।

30तब एलिय्याह ने सभी लोगों से कहा, "अब मेरे पास आओ।" अतः सभी लोग एलिय्याह के चारों ओर इकट्ठे हो गए। यहोवा की वेदी उखाड़ दी गई थी। अतः एलिय्याह ने इसे जमाया। 31एलिय्याह ने बारह पत्थर प्राप्त किए। हर एक बारह परिवार समूहों के लिये एक पत्थर था। इन बारह परिवारों के नाम याकूब के बारह पुत्रों के नाम पर थे। याकूब वह व्यक्ति था जिसे यहोवा ने इम्राएल नाम दिया था। 32एलिय्याह ने उन पत्थरों का उपयोग यहोवा को सम्मान देने के लिये वेदी के निर्माण में किया। एलिय्याह ने वेदी के चारों ओर एक छोटी खाई खोदी। यह इतनी चौड़ी और इतनी गहरी थी कि इसमें लगभग सात गैलन पानी आ सके। 33तब एलिय्याह ने वेदी पर लकड़ियाँ रखीं। उसने बैल को टुकड़ों में काटा। उसने टुकड़ों को लकड़ियों पर रखा। 34तब एलिय्याह ने कहा, "चार घड़ों को पानी से भरो। पानी को माँस के टुकड़ों और लकड़ियों पर डालो।" तब एलिय्याह ने कहा, "यही फिर करो।" तब उसने कहा, "इसे तीसरी बार करो।" 35पानी वेदी से बाहर बहा और उससे खाई भर गई।

36यह तीसरे पहर की बलि-भेंट का समय था। अतः एलिय्याह नबी वेदी के पास गया और प्रार्थना की, "हे यहोवा इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर! मैं तुझसे याचना करता हूँ कि तू प्रमाणित कर कि तू इम्राएल का परमेश्वर है और प्रमाणित कर कि मैं तेरा सेवक हूँ। इन लोगों के सामने यह प्रकट कर कि तुने यह सब करने का मुझे आदेश दिया है। 37यहोवा मेरी प्रार्थना का उत्तर दे। इन लोगों के सामने प्रकट कर कि हे यहोवा तू वास्तव में परमेश्वर है। तब लोग समझेंगे कि तू उन्हें अपने पास वापस ला रहा है।"

38अतः यहोवा ने नीचे आग भेजी। आग ने बलि, लकड़ी, पत्थरों और वेदी के चारों ओर की भूमि को जला दिया। आग ने खाई का सारा पानी भी सूखा दिया। 39सभी लोगों ने यह होते देखा। लोग भूमि पर प्रणाम करने लगे और कहने लगे, "यहोवा परमेश्वर है! यहोवा परमेश्वर है!"

40तब एलिय्याह ने कहा, "बाल के नबियों को पकड़ लो! उनमें से किसी को बच निकलने न दो!" अतः लोगों ने सभी नबियों को पकड़ा। तब एलिय्याह उन सभी को किशोन नाले तक ले गया। उस स्थान पर उसने सभी नबियों को मार डाला।

वर्षा पुनः होती है

41तब एलिय्याह ने राजा अहाब से कहा, "अब जाओ, खाओ, और पिओ। एक घनघोर वर्षा आ रही है।"

42अतः राजा अहाब भोजन करने गया। उसी समय एलिय्याह कर्मल पर्वत की चोटी पर चढ़ा। पर्वत की चोटी पर एलिय्याह प्रणाम करने झुका। उसने अपने सिर को अपने घुटनों के बीच में रखा। 43तब एलिय्याह ने अपने सेवक से कहा, "समुद्र की ओर देखो।"

सेवक उस स्थान तक गया जहाँ से वह समुद्र को देख सके। तब सेवक लौट कर आया और उसने कहा, "मैंने कुछ नहीं देखा।" एलिय्याह ने उसे पुनः जाने और देखने को कहा। यह सात बार हुआ। 44सातवीं बार सेवक लौट कर आया और उसने कहा, "मैंने एक छोटा बादल मनुष्य की मुट्ठी के बराबर देखा है। बादल समुद्र से आ रहा था।"

एलिय्याह ने सेवक से कहा, "राजा अहाब के पास जाओ और उससे कहो कि वह अपना रथ तैयार कर ले और अब घर वापस जाये। यदि वह अभी नहीं जायेगा तो वर्षा उसे रोक लेगी।"

45थोड़े समय के बाद आकाश काले मेघों से ढक गया। तेज हवायें चलने लगीं और घनघोर वर्षा होने लगी। अहाब अपने रथ में बैठा और यिज़्रेल को वापस यात्रा करनी आरम्भ की। 46एलिय्याह के अन्दर यहोवा की शक्ति आई। एलिय्याह ने अपने वस्त्रों को अपनी चारों ओर कसा, जिससे वह दौड़ सके। तब एलिय्याह यिज़्रेल तक के पूरे मार्ग पर राजा अहाब से आगे दौड़ता रहा।

सिनै पर्वत पर एलिय्याह

19 राजा अहाब ने ईज़ेबेल को वे सभी बातें बताईं जो एलिय्याह ने कीं। अहाब ने उसे बताया कि एलिय्याह ने कैसे सभी नबियों को एक ही तलवार से मौत के घाट उतारा। 2इसलिये ईज़ेबेल ने एलिय्याह के पास एक दूत भेजा। ईज़ेबेल ने कहा, "मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि इस समय से पहले कल मैं तुमको वैसे ही मारूँगी जैसे तुमने नबियों को मारा। यदि मैं सफल नहीं होती तो देवता मुझे मार डालें।"

3जब एलिय्याह ने यह सुना तो वह डर गया। अतः वह अपनी जान बचाने के लिये भाग गया। वह अपने साथ अपने सेवक को ले गया। वे बेशर्बा पहुँचे जो यहूदा में है। एलिय्याह ने अपने सेवक को बेशर्बा में छोड़ा। 4तब एलिय्याह पूरे दिन मरुभूमि में चला। एलिय्याह एक झाड़ी के नीचे बैठा। उसने मृत्यु की याचना की। एलिय्याह ने कहा, "यहोवा यह मेरे लिये बहुत है मुझे मरने दे। मैं अपने पूर्वजों से अधिक अच्छा नहीं हूँ।"

5तब एलिय्याह पेड़ के नीचे लेट गया और सो गया। एक स्वर्गदूत एलिय्याह के पास आया और उसने उसका

स्पर्श किया। स्वर्गदूत ने कहा, "उठो, खाओ!" 6एलिय्याह ने देखा कि उसके बहुत निकट कोयले पर पका एक पुआ और पानी भरा घड़ा है। एलिय्याह ने खाया-पीया। तब वह फिर सो गया।

7बाद में, यहोवा का स्वर्गदूत उसके पास फिर आया। स्वर्गदूत ने कहा, "उठो, खाओ!" यदि तुम ऐसा नहीं करते तो तुम इतने शक्तिशाली नहीं होगे, जिससे तुम लम्बी यात्रा कर सकोगे।" 8अतः एलिय्याह उठा। उसने खाया, पिया। भोजन ने उसे इतना शक्तिशाली बना दिया कि वह चालीस दिन और रात यात्रा कर सके। वह हारेब पर्वत तक गया जो परमेश्वर का पर्वत है। 9वहाँ एलिय्याह एक गुफा में घुसा और सारी रात ठहरा।

तब यहोवा ने एलिय्याह से बातें कीं। यहोवा ने कहा, "एलिय्याह, तुम यहाँ क्यों आए हो?"

10एलिय्याह ने उत्तर दिया, "यहोवा सर्वशक्तिमान परमेश्वर, मैंने तेरी सेवा सदैव की है। मैंने तेरी सेवा सर्वोत्तम रूप में सदैव यथासम्भव की है। किन्तु इझ्राएल के लोगों ने तेरे साथ की गई वाचा तोड़ी है। उन्होंने तेरी वेदियों को नष्ट किया है। उन्होंने तेरे नबियों को मार डाला है। मैं एकमात्र ऐसा नबी हूँ जो जीवित बचा हूँ और अब वे मुझे मार डालना चाहते हैं!"

11तब यहोवा ने एलिय्याह से कहा, "जाओ, मेरे सामने पर्वत पर खड़े होओ। मैं तुम्हारे बगल से निकलूँगा।" * तब एक प्रचंड आँधी चली। आँधी ने पर्वतों को तोड़ गिराया। इसने यहोवा के सामने विशाल चट्टानों को तोड़ डाला। किन्तु वह आँधी यहोवा नहीं था। उस आँधी के बाद भूकम्प आया। किन्तु वह भूकम्प यहोवा नहीं था। 12भूकम्प के बाद वहाँ अग्नि थी। किन्तु वह आग यहोवा नहीं थी। आग के बाद वहाँ एक शान्त और मद्धिम स्वर सुनाई पड़ा।

13जब एलिय्याह ने वह स्वर सुना तो उसने अपने अंगरखे से अपना मुँह ढक लिया। तब वह गया और गुफा के द्वार पर खड़ा हुआ। तब एक वाणी ने उससे कहा, "एलिय्याह, यहाँ तुम क्यों हो?"

14एलिय्याह ने उत्तर दिया, "यहोवा सर्वशक्तिमान परमेश्वर, मैंने सर्वोत्तम यथासम्भव तेरी सेवा की है। किन्तु इझ्राएल के लोगों ने तेरे साथ की गई अपनी वाचा तोड़ी है। उन्होंने तेरी वेदियाँ नष्ट कीं। उन्होंने तेरे नबियों को मारा। मैं एकमात्र ऐसा नबी हूँ जो अभी तक जीवित है और अब वे मुझे मार डालने का प्रयत्न कर रहे हैं।"

15यहोवा ने कहा, "दमिश्क के चारों ओर की मरुभूमि को पहुँचाने वाली सड़क से वापस लौटो। दमिश्क में

जाओ और हजाएल का अभिषेक अराम के राजा के रूप में करो। 16तब निमशी के पुत्र येहू का अभिषेक इझ्राएल के राजा के रूप में करो। उसके बाद आबेल महोला के शापात के पुत्र एलीशा का अभिषेक करो। वह तुम्हारे स्थान पर नबी बनेगा। 17हजाएल अनेक बुरे लोगों को मार डालेगा। येहू किसी को भी मार डालेगा जो हजाएल की तलवार से बच निकलता है। 18एलिय्याह! इझ्राएल में तुम ही एक मात्र विश्वासपात्र व्यक्ति नहीं हो। वे पुरुष बहुत से लोगों को मार डालेंगे, किन्तु उसके बाद भी वहाँ इझ्राएल में सात हजार लोग ऐसे होंगे जिन्होंने बाल को कभी प्रणाम नहीं किया। मैं उन सात हजार लोगों को जीवित रहने दूँगा, क्योंकि उन लोगों में से किसी ने कभी बाल को देवमूर्ति को चूमा तक नहीं।"

एलीशा एक नबी बनता है

19इसलिये एलिय्याह ने उस स्थान को छोड़ा और शापात के पुत्र एलीशा की खोज में निकला। एलीशा बारह एकड़ भूमि में हल चलाता था। एलीशा आखिरी एकड़ को जोत रहा था जब एलिय्याह वहाँ आया। एलिय्याह एलीशा के पास गया। तब एलिय्याह ने अपना अंगरखा * एलीशा को पहना दिया। 20एलीशा ने तुरन्त अपनी बैलों को छोड़ा और एलिय्याह के पीछे दौड़ गया। एलीशा ने कहा, "मुझे अपनी माँ को चूमने दो और पिता से विदा लेने दो। फिर मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।"

एलिय्याह ने उत्तर दिया, "यह अच्छा है। जाओ, मैं तुम्हें रोकूँगा नहीं।"

21तब एलीशा ने अपने परिवार के साथ विशेष भोजन किया। एलीशा गया और अपनी बैलों को मार डाला। उसने हल की लकड़ी का उपयोग आग जलाने के लिये किया। तब उसने माँस को पकाया और लोगों में बाँट दिया। लोगों ने माँस खाया। तब एलीशा गया और उसने एलिय्याह का अनुसरण किया। एलीशा एलिय्याह का सहायक बना।

बेन्हदद और अहाब युद्ध में उतरते हैं

20 बेन्हदद अराम का राजा था। उसने अपनी सारी सेना इकट्ठी की। उसके साथ बत्तीस राजा थे। उनके पास घोड़े और रथ थे। उन्होंने शोमरोन पर आक्रमण किया और उसके विरुद्ध लड़े। 2राजा ने नगर में इझ्राएल के राजा अहाब के पास दूत भेजे। 3सूचना यह थी, "बेन्हदद कहता है, 'तुम्हें अपना सोना-चाँदी मुझे देना पड़ेगा। तुम्हें अपनी पत्नियाँ और बच्चे भी मुझको देने होंगे।'"

जाओ ... निकलूँगा यह उस समय के समान है जिस समय परमेश्वर मूसा के सामने प्रकट हुआ था।

अंगरखा यह विशेष चोंगा था, जिससे यह पता चलता था कि एलिय्याह नबी है। एलीशा को इस अंगरखा को देना यह प्रकट करता था कि एलीशा एलिय्याह के स्थान पर नबी हो गया है।

4इज़्राएल के राजा ने उत्तर दिया, "ऐ मेरे स्वामी राजा! मैं स्वीकार करता हूँ कि अब मैं आपके अधीन हूँ और जो कुछ मेरा है वह आपका है।"

5तब दूत अहाब के पास वापस आया। उन्होंने कहा, "बेन्हदद कहता है, 'मैंने पहले ही तुमसे कहा था कि तुम्हें सारा सोना चाँदी तथा अपनी स्त्रियों, बच्चों को मुझको देना पड़ेगा। 6अब मैं अपने व्यक्तियों को भेजना चाहता हूँ जो महल में सर्वत्र और तुम्हारे आधीन शासन करने वाले और अधिकारियों के घरों में खोज करेंगे। मेरे व्यक्ति जो चाहेंगे लेंगे।"

7अतः राजा अहाब ने अपने देश के सभी अग्रजों (प्रमुखों) की एक बैठक बुलाई। अहाब ने कहा, "देखो बेन्हदद विपत्ति लाना चाहता है। प्रथम तो उसने मुझसे यह माँग की है कि मैं उसे अपनी पत्नियों, अपने बच्चे और अपना सोना-चाँदी दे दूँ। मैंने उसे वे चीजें देनी स्वीकार कर ली और अब वह सब कुछ लेना चाहता है।"

8किन्तु अग्रजों (प्रमुखों) और सभी लोगों ने कहा, "उसका आदेश न मानो। वह न करो जिसे करने को वह कहता है।"

9इसलिये अहाब ने बेन्हदद को सन्देश भेजा। अहाब ने कहा, "मैं वह कर दूँगा जो तुमने पहले कहा था। किन्तु मैं तुम्हारे दूसरे आदेश का पालन नहीं कर सकता।"

राजा बेन्हदद के दूत सन्देश राजा तक ले गये। 10तब वे बेन्हदद के अन्य सन्देश के साथ लौटे। सन्देश यह था, "मैं शोमरोन को पूरी तरह नष्ट करूँगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि उस नगर का कुछ भी नहीं बचेगा। उस नगर को इतना कुछ भी नहीं बचेगा कि वह हमारे व्यक्तियों के लिये नगर की यादगार के रूप में अपने घर ले जाने को पर्याप्त हो। परमेश्वर मुझे नष्ट कर दे यदि मैं ऐसा न करूँ।"

11राजा अहाब ने उत्तर दिया, "बेन्हदद से कहो कि उस व्यक्ति को, जिसने अपना कवच धारण किया हो, उस व्यक्ति की तरह डींग नहीं हॉकनी चाहिये जो उसे उतारने के लिये लम्बा जीवन जीता है।"

12राजा बेन्हदद ने अपने अन्य प्रशासकों के साथ अपने तम्बू में मदिरा पान कर रहा था। उसी समय दूत आया और उसने राजा अहाब का सन्देश दिया। राजा बेन्हदद ने अपने व्यक्तियों को नगर पर आक्रमण करने के लिये तैयार होने को कहा। अतः सैनिक युद्ध के लिये अपना स्थान लेने बड़े।

13इसी समय, एक नबी, राजा अहाब के पास पहुँचा। नबी ने कहा, "राजा अहाब यहोवा तुमसे कहता है, 'क्या तुम उस बड़ी सेना को देखते हो! मैं यहोवा, आज तुम्हें उस सेना को हराने दूँगा। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।'"

14अहाब ने कहा, "उन्हें पराजित करने के लिये तुम किसका उपयोग करोगे?"

नबी ने उत्तर दिया, "यहोवा कहता है, 'सरकारी अधिकारियों के युवक सहायक।' तब राजा ने पूछा, "मुख्य सेना का सेनापतिवत् कौन सम्भालेगा?"

नबी ने उत्तर दिया, "तुम सम्भालोगे।"

15अतः अहाब ने सरकारी अधिकारियों के युवक सहायकों को इकट्ठा किया। सब मिलाकर ये दो सौ बत्तीस युवक थे। तब राजा ने इज़्राएल की सेना को एक साथ बुलाया। सारी संख्या सात हजार थी।

16दोपहर को, राजा बेन्हदद और उसके सहायक बत्तीस राजा अपने डेरे में मदिरा पान कर रहे थे और मद मत हो रहे थे। इसी समय राजा अहाब का आक्रमण आरम्भ हुआ। 17युवक सहायकों ने प्रथम आक्रमण किया। बेन्हदद के व्यक्तियों ने उससे कहा कि सैनिक शोमरोन से बाहर निकल आये हैं। 18अतः बेन्हदद ने कहा, "वे युद्ध करने के लिये आ रहे होंगे या वे शान्ति-सन्धि करने आ रहे होंगे। उन्हें जीवित पकड़ लो।"

19राजा अहाब के युवक आक्रमण की पहल कर रहे थे। इज़्राएल की सेना उनके पीछे चल रही थी। 20किन्तु इज़्राएल के हर एक व्यक्ति ने उस पुरुष को मार डाला जो उसके विरुद्ध आया। अतः अराम के सैनिकों ने भागना आरम्भ किया। इज़्राएल की सेना ने उनका पीछा किया। राजा बेन्हदद अपने रथों के एक घोड़े पर बैठकर भाग निकला। 21राजा अहाब सेना को लेकर आगे बढ़ा और उसने अराम की सेना के सारे घोड़ों और रथों को ले लिया। इस प्रकार राजा अहाब ने अरामी सेना को भारी पराजय दी।

22तब नबी राजा अहाब के पास पहुँचा और कहा, "अराम का राजा बेन्हदद अगले बसन्त में तुमसे युद्ध करने के लिये फिर आयेगा। अतः तुम्हें अब घर लौट जाना चाहिये और अपनी सेना को पहले से अधिक शक्तिशाली बनाना चाहिये और उसके विरुद्ध सुरक्षा की सुनियोजित योजना बनानी चाहिये।"

बेन्हदद पुनः आक्रमण करता है

23राजा बेन्हदद के अधिकारियों ने उससे कहा, "इज़्राएल के देवता पर्वतीय देवता हैं। हम लोग पर्वतीय क्षेत्र में लड़े थे। इसलिये इज़्राएल के लोग विजयी हुए। अतः हम लोग उनसे समतल मैदान में युद्ध करें। तब हम विजय पाएँगे। 24तुम्हें यही करना चाहिए। बत्तीस राजाओं को सेना का सेनापतिवत् करने को अनुमति न दो। सेनापतियों को ही अपनी सेना का संचालन करने दो।

25"अब तुम वैसी ही सेना बनाओ जो नष्ट हुई सेना की तरह हो। उसी सेना की तरह घोड़े और रथ इकट्ठे करो। तब हम लोग इज़्राएलियों से समतल मैदान में युद्ध

करें। तब हम विजय प्राप्त करेंगे।” बेहदद ने उनकी सलाह मान ली। उसने वही किया जो उन्होंने कहा।

26अतः बसन्त में बेहदद ने अराम के लोगों को इकट्ठा किया। वह इम्राएल के विरुद्ध युद्ध करने अपेक्षित गया।

27इम्राएलियों ने भी युद्ध की तैयारी की। इम्राएल के लोग अराम की सेना से लड़ने गये। उन्होंने अपने डेरे अराम के डेरे के सामने डाले। शत्रु की तुलना में इम्राएली बकरियों के दो छोटे झुण्डों के समान दिखाई पड़ते थे किन्तु अराम की सेना सारे क्षेत्र को ढकी थी।

28परमेश्वर का एक व्यक्ति इस सन्देश के साथ इम्राएल के राजा के पास आया: “यहोवा ने कहा है, ‘अराम के लोगों ने कहा है कि मैं अर्थात् यहोवा पर्वतों का परमेश्वर हूँ। वे समझते हैं कि घाटियों का परमेश्वर मैं नहीं हूँ। इसलिए मैं तुम्हें इस विशाल सेना को पराजित करने दूँगा। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा सर्वत्र हूँ।”

29सेनायें सात दिन तक एक दूसरे के आमने सामने डेरा डाले रहीं। सातवें दिन युद्ध आरम्भ हुआ। इम्राएलियों ने एक दिन में अराम के एक लाख सैनिकों को मार डाला। 30बचे हुए सैनिक अपेक्षित नगर को भाग गए। नगर प्राचीर उन सताईस हजार सैनिकों पर गिर पड़ी। बेहदद भी नगर को भाग गया। वह एक कमरे में छिप गया। 31उसके सेवकों ने उससे कहा, “हम लोगों ने सुना है कि इम्राएल कुल के राजा लोग दयालु हैं। हम लोग मोटे

बस्त्र पहने और सिर पर रस्सी डाले।* तब हम लोग इम्राएल के राजा के पास चले। संभव है, वह हमें जीवित रहने दे।”

32उन्होंने मोटे बस्त्र पहने और रस्सी सिर पर डाली। वे इम्राएल के राजा के पास आए। उन्होंने कहा, “तुम्हारा सेवक बेहदद कहता है, ‘कृपया मुझे जीवित रहने दें।”

अहाब ने उत्तर दिया, “क्या वह अभी तक जीवित है? वह मेरा भाई है।”*

33बेहदद के व्यक्ति राजा अहाब से ऐसा कुछ कहलवाना चाहते थे, जिससे यह पता चले कि वह बेहदद को नहीं मारेगा। जब अहाब ने बेहदद को भाई कहा तो सलाहकारों ने पुरन्त कहा, “हाँ! बेहदद आपका भाई है।”

अहाब ने कहा, “उसे मेरे पास लाओ।” अतः बेहदद राजा अहाब के पास आया। राजा अहाब ने अपने साथ उसे अपने रथ में बैठने को कहा।

34बेहदद ने उससे कहा, “अहाब मैं उन नगरों को तुम्हें दे दूँगा जिन्हें मेरे पिता ने तुम्हारे पिता से ले लिये थे

और तुम दमिश्क में वैसे ही दुकाने रख सकते हो जैसे मेरे पिता ने शोमरोन में रखी थीं।”

अहाब ने उत्तर दिया, “यदि तुम इसे स्वीकार करते हो तो मैं तुम्हें जाने के लिये स्वतन्त्र करता हूँ।” अतः दोनों राजाओं ने एक शान्ति-सन्धि की। तब राजा अहाब ने बेहदद को जाने के लिये स्वतन्त्र कर दिया।

एक नबी अहाब के विरुद्ध भविष्यवाणी करता है

35नबियों में से एक ने दूसरे नबी से कहा, “मुझ पर चोट करो!” उसने उससे यह करने के लिये कहा क्योंकि यहोवा ने ऐसा आदेश दिया था। किन्तु दूसरे नबी ने उस पर चोट करने से इन्कार कर दिया। 36इसलिये पहले नबी ने कहा, “तुमने यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया। अतः जब तुम इस स्थान को छोड़ोगे, एक सिंह तुम्हें मार डालेगा।” दूसरे नबी ने उस स्थान को छोड़ा और उसे एक सिंह ने मार डाला।

37प्रथम नबी दूसरे व्यक्ति के पास गया और कहा, “मुझ पर चोट करो।” उस व्यक्ति ने उस पर चोट की। नबी को चोट आई। 38अतः नबी ने अपने चेहरे पर एक वस्त्र लपेट लिया। इस प्रकार कोई यह नहीं समझ सकता था कि वह कौन है। वह नबी गया और उसने सड़क के किनारे राजा की प्रतीक्षा आरम्भ की। 39राजा उधर से निकला और नबी ने उससे कहा, “मैं युद्ध में लड़ने गया था। हमारे व्यक्तियों में से मेरे पास शत्रु सैनिक को लाया। उस व्यक्ति ने कहा, ‘इस व्यक्ति की पहरेदारी करो। यदि यह भाग गया तो इसके स्थान पर तुम्हें अपना जीवन देना होगा या तुम्हें पचहत्तर पौंड चाँदी जुमाने में देनी होगी।’ 40किन्तु मैं अन्य कामों में व्यस्त हो गया। अतः वह व्यक्ति भाग निकला।”

इम्राएल के राजा ने कहा, “तुमने कहा है कि तुम सैनिक को भाग जाने देने के अपराधी हो। अतः तुमको उत्तर मालूम है। तुम्हें वही करना चाहिये जिसे करने को उस व्यक्ति ने कहा है।”

41तब नबी ने अपने मुख से कपड़े को हटाया। इम्राएल के राजा ने देखा और यह जान लिया कि वह नबियों में से एक है। 42तब नबी ने राजा से कहा, “यहोवा तुमसे यह कहता है, ‘तुमने उस व्यक्ति को स्वतन्त्र किया जिसे मैंने मर जाने को कहा। अतः उसका स्थान तुम लोगे, तुम मर जाओगे और तुम्हारे लोग दुश्मनों का स्थान लेंगे, तुम्हारे लोग मरेंगे।”

43तब राजा अपने घर शोमरोन लौट गया। वह बहुत परेशान और घबराया हुआ था।

नाबोत के अंगूर का बाग

21 राजा अहाब का महल शोमरोन में था। महल के पास एक अंगूरों का बाग था। थिज़ेल नाबोत नामक व्यक्ति इस फलों के बाग का स्वामी था। 2एक

हम लोग ... रस्सी डालें यह इस बात को प्रकट करता था कि वे अधीनता स्वीकार करते हैं और आत्मसमर्पण चाहते हैं।

भाई है शान्ति-सन्धि करने वाले लोग प्रायः एक दूसरे को भाई कहते थे। वे मानों एक परिवार के हो।

दिन अहाब ने नाबोत से कहा, “अपना यह फलों का बाग मुझे दे दो। मैं इसे सब्जियों का बाग बनाना चाहता हूँ। तुम्हारा बाग मेरे महल के पास है। मैं इसके बदले तुम्हें इससे अच्छा अंगूर का बाग दूँगा या, यदि तुम पसन्द करोगे तो इसका मूल्य मैं सिक्कों में चुकाऊँगा।”

3 नाबोत ने उत्तर दिया, “मैं अपनी भूमि तुम्हें कभी नहीं दूँगा। यह भूमि मेरे परिवार की है।”

4 अतः अहाब अपने घर गया। वह नाबोत पर क्रोधित और बिगड़ा हुआ था। उसने उस बात को पसन्द नहीं किया जो यिज़्रेल के व्यक्ति ने कही थी। (नाबोत ने कहा था, “मैं अपने परिवार की भूमि तुम्हें नहीं दूँगा।”) अहाब अपने बिस्तर पर लेट गया। उसने अपना मुख मोड़ लिया और खाने से इन्कार कर दिया।

5 अहाब की पत्नी ईज़ेबेल उसके पास गई। ईज़ेबेल ने उससे कहा, “तुम घबराये क्यों हो? तुमने खाने से इन्कार क्यों किया है?”

6 अहाब ने उत्तर दिया, “मैंने यिज़्रेल के नाबोत से उसकी भूमि माँगी। मैंने उससे कहा कि मैं उसकी पूरी कीमत चुकाऊँगा, या, यदि वह चाहेगा तो मैं उसे दूसरा बाग दूँगा। किन्तु नाबोत ने अपना बाग देने से इन्कार कर दिया।”

7 ईज़ेबेल ने उत्तर दिया, “किन्तु तुम तो पूरे इज़्राएल के राजा हो अपने बिस्तर से उठो। कुछ भोजन करो, तुम अपने को स्वस्थ अनुभव करोगे। मैं नाबोत का बाग तुम्हारे लिये ले लूँगी।”

8 तब ईज़ेबेल ने कुछ पत्र लिखे। उसने पत्रों पर अहाब के हस्ताक्षर बनाये। उसने अहाब की मुहर पत्रों को बन्द करने के लिये उन पर लगाई। तब उसने उन्हें अग्रजों (प्रमुखों) और विशेष व्यक्तियों के पास भेजे जो उसी नगर में रहते थे जिसमें नाबोत रहता था। 9 पत्र में यह लिखा था:

यह घोषणा करो कि एक ऐसा दिन होगा जिस दिन लोग कुछ भी भोजन नहीं करेंगे। तब नगर के सभी लोगों की एक साथ एक बैठक बुलाओ। बैठक में हम नाबोत के बारे में बात करेंगे। 10 किसी ऐसे व्यक्ति का पता करो जो नाबोत के विषय में झूठ बोले। वे लोग यह कहें कि उन्होंने सुना कि नाबोत ने राजा और परमेश्वर के विरुद्ध कुछ बातें कहीं। तब नाबोत को नगर के बाहर ले जाओ और उसे पत्थरों से मार डालो।

11 अतः यिज़्रेल के अग्रजों (प्रमुखों) और विशेष व्यक्तियों ने उस आदेश का पालन किया। 12 प्रमुखों ने घोषणा की कि एक दिन ऐसा होगा जब सभी व्यक्ति कुछ भी भोजन नहीं करेंगे। उस दिन उन्होंने सभी लोगों की बैठक एक साथ बुलाई। उन्होंने नाबोत को विशेष स्थान पर लोगों के सामने रखा।

13 तब दो व्यक्तियों ने लोगों से कहा कि उन्होंने नाबोत को परमेश्वर और राजा के विरुद्ध बातें करते सुना है।

अतः लोग नाबोत को नगर के बाहर ले गए। तब उन्होंने उसे पत्थरों से मार डाला। 14 तब प्रमुखों ने एक सन्देश ईज़ेबेल को भेजा। सन्देश था: “नाबोत पत्थरों से मार डाला गया।”

15 जब ईज़ेबेल ने यह सुना तो उसने अहाब से कहा, “नाबोत मर गया। अब तुम जा सकते हो और उस बाग को ले सकते हो जिसे तुम चाहते थे।” 16 अतः अहाब अंगूरों के बाग में गया और उसे अपना बना लिया।

17 इस समय यहोवा ने एलिय्याह से बातें की। (एलिय्याह तिशबी का नबी था।) 18 यहोवा ने कहा, “राजा अहाब के पास शोमरोन को जाओ। अहाब नाबोत के अंगूरों के बाग में होगा। वह वहाँ पर उस बाग को अपना बनाने के लिये होगा। 19 अहाब से कहो, मैं यहोवा उससे कहता हूँ, ‘अहाब! तुमने नाबोत नामक व्यक्ति को मार डाला है। अब तुम उसकी भूमि ले रहे हो। अतः मैं तुमसे कहता हूँ, तुम भी उसी स्थान पर मरोगे जिस स्थान पर नाबोत मरा। जिन कुतों ने नाबोत के खून को चाटा, वे ही तुम्हारा खून उस स्थान पर चटेंगे।”

20 अतः एलिय्याह अहाब के पास गया। अहाब ने एलिय्याह को देखा और कहा, “तुमने मुझे फिर पा लिया है। तुम सदा मेरे विरुद्ध हो।”

एलिय्याह ने उत्तर दिया, “हाँ, मैंने तुम्हें पुनः पा लिया है। तुमने सदा अपने जीवन का उपयोग यहोवा के विरुद्ध पाप करने में किया। 21 अतः यहोवा तुमसे कहता है, ‘मैं तुम्हें नष्ट कर दूँगा। 22 मैं तुम्हें और तुम्हारे परिवार के हर एक पुरुष सदस्य को मार डालूँगा। तुम्हारे परिवार की वही दशा होगी जो दशा नाबोत के पुत्र यारोबाम के परिवार की हुई और तुम्हारा परिवार बाशा के परिवार की तरह होगा। ये दोनों पूरी तरह नष्ट कर दिये गये थे। मैं तुम्हारे साथ यही करूँगा क्योंकि तुमने मुझे क्रोधित किया है। तुमने इज़्राएल के लोगों से पाप कराया है’ 23 और यहोवा यह भी कहता है, ‘तुम्हारी पत्नी ईज़ेबेल का शव यिज़्रेल नगर में कुत्ते खायेंगे। 24 तुम्हारे परिवार के किसी भी सदस्य को जो नगर में मरेगा, कुत्ते खायेंगे। जो व्यक्ति मैदानों में मरेगा वह पक्षियों द्वारा खाया जाएगा।”

25 कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं जिसने उतने बुरे काम या पाप किये हों जितने अहाब ने किये। उसकी पत्नी ईज़ेबेल ने उससे ये काम कराये। 26 अहाब ने बहुत बुरा पाप किया और उसने उन काष्ठ के कुंदों (देव-मूर्तियों) को पूजा। यह वही काम था जिसे एमोरी लोग करते थे और यहोवा ने उनसे प्रवेश छीन लिया था और इज़्राएल के लोगों को दे दिया था।

27 एलिय्याह के कथन के पूरा होने पर अहाब बहुत दुःखी हुआ। उसने अपने वस्त्रों को यह दिखाने के लिये फाड़ डाला कि उसे दुःख है। तब उसने शोक के विशेष वस्त्र पहन लिये। अहाब ने खाने से इन्कार कर दिया।

वह उन्हीं विशेष वस्त्रों को पहने हुए सोया। अहाब बहुत दुःखी और उदास था।

28यहोवा ने एलियाह नबी से कहा, 29“मैं देखता हूँ कि अहाब मेरे सामने विनम्र हो गया है। अतः उसके जीवन काल में मैं उस पर विपत्ति नहीं आने दूँगा। मैं तब तक प्रतीक्षा करूँगा जब तक उसका पुत्र राजा नहीं बन जाता। तब मैं अहाब के परिवार पर विपत्ति आने दूँगा।”

मीकायाह अहाब को चेतावनी देता है

22 अगले दो वर्षों के भीतर इज़्राएल और अराम के बीच शान्ति रही। 2तब तीसरे वर्ष यहूदा का राजा यहोशापात इज़्राएल के राजा अहाब से मिल-नगया।

3इस समय अहाब ने अपने अधिकारियों से पूछा, “तुम जानते हो कि अराम के राजा ने गिलाद में रामोत को हम से ले लिया था। हम लोगों ने रामोत वापस लेने का कुछ भी प्रयत्न क्यों नहीं किया? यह हम लोगों का नगर होना चाहिये।”

4इसलिये अहाब ने यहोशापात से पूछा, “क्या आप हमारे साथ होंगे और रामोत में अराम की सेना के विरुद्ध युद्ध करेंगे?”

यहोशापात ने उत्तर दिया, “हाँ, मैं तुम्हारा साथ दूँगा। मेरे सैनिक और मेरे घोड़े तुम्हारी सेना के साथ मिलने के लिये तैयार हैं। किन्तु पहले हम लोगों को यहोवा से सलाह ले लेनी चाहिये।”

6अतः अहाब ने नबियों की एक बैठक बुलाई। उस समय लगभग चार सौ नबी थे। अहाब ने नबियों से पूछा, “क्या मैं जाऊँ और रामोत में अराम की सेना के विरुद्ध युद्ध करूँ? या मैं किसी अन्य अवसर की प्रतीक्षा करूँ?” नबियों ने उत्तर दिया, “तुम्हें अभी युद्ध करना चाहिये। यहोवा तुम्हें विजय पाने देगा।”

7किन्तु यहोशापात ने कहा, “क्या यहाँ यहोवा के नबियों में से कोई अन्य नबी है? यदि कोई है तो हमें उससे पूछना चाहिये कि परमेश्वर क्या कहता है।”

8राजा अहाब ने उत्तर दिया, “एक अन्य नबी है। वह यिम्ला का पुत्र मीकायाह है। किन्तु उससे मैं घृणा करता हूँ। जब कभी वह यहोवा का माध्यम बनता है तब वह मेरे लिये कुछ भी अच्छा नहीं कहता। वह सदैव वही कहता है जिसे मैं पसन्द नहीं करता।”

यहोशापात ने कहा, “राजा अहाब, तुम्हें ये बातें नहीं कहनी चाहिये।”

9अतः राजा अहाब ने अपने अधिकारियों में से एक से जाने और मीकायाह को खोज निकालने को कहा।

10उस समय दोनों राजा अपना राजसी पोशाक पहने थे। वे सिंहासन पर बैठे थे। यह शोमरोन के द्वार के पास खुले स्थान पर था। सभी नबी उनके सामने खड़े थे। नबी भविष्यवाणी कर रहे थे।

11नबियों में से एक सिदकियाह नामक व्यक्ति था। वह कनाना का पुत्र था। सिदकियाह ने कुछ लोहे की सींगें* बनाईं। तब उसने अहाब से कहा, “यहोवा कहता है, ‘तुम लोहे की इन सींगों का उपयोग अराम की सेना के विरुद्ध लड़ने में करोगे। तुम उन्हें हराओगे और उन्हें नष्ट करोगे।’”

12सभी अन्य नबियों ने उसका समर्थन किया जो कुछ सिदकियाह ने कहा। नबियों ने कहा, “तुम्हारी सेना अभी कूच करे। उन्हें रामोत में अराम की सेना के साथ युद्ध करना चाहिये। तुम युद्ध जीतोगे। यहोवा तुम्हें विजय पाने देगा।”

13जब यह हो रहा था तभी अधिकारी मीकायाह को खोजने गया। अधिकारी ने मीकायाह को खोज निकाला और उससे कहा, “सभी अन्य नबियों ने कहा है कि राजा को सफलता मिलेगी। अतः मैं यह कहता हूँ कि यही कहना तुम्हारे लिये सर्वाधिक अनुकूल होगा।”

14किन्तु मीकायाह ने उत्तर दिया, “नहीं! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि यहोवा की शक्ति से वही कहूँगा जो कहने के लिये यहोवा कहेगा।”

15तब मीकायाह राजा अहाब के सामने खड़ा हुआ। राजा ने उससे पूछा, “मीकायाह, क्या मुझे और राजा यहोशापात को अपनी सेनायें एक कर लेनी चाहिये? और क्या हमें अराम की सेना से रामोत में युद्ध करने के लिये अभी कुछ करना चाहिये या नहीं?”

मीकायाह ने उत्तर दिया, “हाँ! तुम्हें जाना चाहिये और उनसे अभी युद्ध करना चाहिये। यहोवा तुम्हें विजय देगा।”

16किन्तु अहाब ने पूछा, “तुम यहोवा की शक्ति से नहीं बता रहे हो। तुम अपनी निजी बात कह रहे हो। अतः मुझसे सत्य कहो। कितनी बार मुझे तुमसे कहना पड़ेगा? मुझसे वह कहो जो यहोवा कहता है।”

17अतः मीकायाह ने उत्तर दिया, “मैं जो कुछ होगा, देख सकता हूँ। इज़्राएल की सेना पहाड़ियों में बिखर जायेगी। वे उन भेड़ों की तरह होंगी जिनका कोई भी संचालक न हो। यही यहोवा कहता है, ‘इन व्यक्तियों का दिशा निर्देशक कोई नहीं है। उन्हें घर जाना चाहिये और युद्ध नहीं करना चाहिये।’”

18तब अहाब ने यहोशापात से कहा, “देख लो! मैंने तुम्हें बताया था। यह नबी मेरे बारे में कभी कोई अच्छी बात नहीं कहता। यह सदा वही बात कहता है जिसे मैं सुनना नहीं चाहता।”

19किन्तु मीकायाह यहोवा का माध्यम बना कहता ही रहा। उसने कहा, “सुनो! ये वे शब्द हैं जिन्हें यहोवा ने कहा है। मैंने यहोवा को स्वर्ग में अपने सिंहासन पर बैठे देखा। उसके दूत उसके समीप खड़े थे। 20यहोवा ने कहा, ‘क्या तुममें से कोई राजा अहाब को चकमा दे लोहे की सींगें ये बड़ी शक्ति का प्रतीक थीं।’

सकता है? मैं उसे रामोत में अराम की सेना के विरुद्ध युद्ध करने के लिये जाने देना चाहता हूँ। तब वह मारा जाएगा।' स्वर्गदूतों को क्या करना चाहिये, इस पर वे सहमत न हो सके। 21तब एक स्वर्गदूत यहोवा के पास गया और उसने कहा, 'मैं उसे चकमा दूँगा।' 22यहोवा ने पूछा, 'तुम राजा अहाब को चकमा कैसे दोगे?' स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, 'मैं अहाब के सभी नबियों को भ्रमित कर दूँगा। मैं नबियों को अहाब से झूठ बोलने के लिये कहूँगा। नबियों के संदेश झूठे होंगे।' अतः यहोवा ने कहा, 'बहुत अच्छा! जाओ और राजा अहाब को चकमा दो। तुम सफल होंगे।'"

23मीकायाह ने अपनी कथा पूरी की। तब उसने कहा, "अतः यहाँ यह सब हुआ। यहोवा ने तुम्हारे नबियों से तुम्हें झूठ बलवा दिया है। यहोवा ने स्वयं निर्णय लिया है कि तुम पर बड़ी भारी विपत्ति लाए।"

24तब सिदकिय्याह नबी मीकायाह के पास गया। सिदकिय्याह ने मीकायाह के मुँह पर मारा। सिदकिय्याह ने कहा, "क्या तुम सचमुच विश्वास करते हो कि यहोवा की शक्ति ने मुझे छोड़ दिया है और वह तुम्हारे माध्यम से बात कर रहा है।"

25मीकायाह ने उत्तर दिया, "शीघ्र ही विपत्ति आएगी। उस समय तुम भागोगे और एक छोटे कमरे में छिपोगे और तब तुम समझोगे कि मैं सत्य कह रहा हूँ।"

26तब राजा अहाब ने अपने अधिकारियों में से एक को मीकायाह को बन्दी बनाने का आदेश दिया। राजा अहाब ने कहा, "इसे बन्दी बना लो और इसे नगर के प्रसाशक आमोन और राजकुमार योआश के पास ले जाओ। 27उनसे कहो कि मीकायाह को बन्दीगृह में डाल दो। उसे खाने को केवल रोटी और पानी दो। उसे वहाँ तब तक रखो जब तक मैं युद्ध से घर न आ जाऊँ।"

28मीकायाह ने जोर से कहा, "आप सभी लोग सुने जो मैं कहता हूँ। राजा अहाब, यदि तुम युद्ध से घर जीवित लौट आओगे, तो समझना कि यहोवा ने मेरे मुँह से अपना वचन नहीं कहा था।"

29तब राजा अहाब और राजा यहोशापात रामोत में अराम की सेना से युद्ध करने गए। यह गिलाद नामक क्षेत्र में था।

30अहाब ने यहोशापात से कहा, "हम युद्ध की तैयारी करेंगे। मैं ऐसे वस्त्र पहनूँगा जो मुझे ऐसा रूप देंगे कि मैं ऐसा लगूँगा कि मैं राजा नहीं हूँ। किन्तु तुम अपने विशेष वस्त्र पहनो जिससे तुम ऐसे लगो कि तुम राजा हो।" इस प्रकार इम्राएल के राजा ने युद्ध का आरम्भ उस व्यक्ति की तरह वस्त्र पहनकर किया जो राजा न हो।

31अराम के राजा के पास बत्तीस रथ-सेनापति थे। उस राजा ने इन बत्तीस रथ सेनापतियों को आदेश दिया कि वे इम्राएल के राजा को खोज निकालें। अराम के

राजा ने सेनापतियों से कहा कि उन्हें राजा को अवश्य मार डालना चाहिये। 32अतः युद्ध के बीच इन सेनापतियों ने राजा यहोशापात को देखा। सेनापतियों ने समझा कि वही इम्राएल का राजा है। अतः वे उसे मारने गए। यहोशापात ने चिल्लाना आरम्भ किया। 33सेनापतियों ने समझ लिया कि वह राजा अहाब नहीं है। अतः उन्होंने उसे नहीं मारा। 34किन्तु एक सैनिक ने हवा में बाण छोड़ा, वह किसी विशेष व्यक्ति को अपना लक्ष्य नहीं बना रहा था। किन्तु उसका बाण इम्राएल के राजा अहाब को जा लगा। बाण ने राजा को उस छोटी जगह में बेधा, जो शरीर का भाग उसके कवच से ढका नहीं था। अतः राजा अहाब ने अपने सारथी से कहा, "मुझे एक बाण ने बेध दिया है! इस क्षेत्र से रथ को बाहर ले चलो। हमें युद्ध से दूर निकल जाना चाहिये।"

35सेनायें युद्ध में लड़ती रहीं। राजा अहाब अपने रथ में ठहरा रहा। वह रथ के सहारे एक ओर झुका हुआ था। वह अराम की सेना को देख रहा था। उसका खून नीचे बहता रहा और उसने रथ के तले को ढक लिया। बाद में, शाम को राजा मर गया। 36सन्ध्या के समय इम्राएल की सेना के सभी पुरुषों को अपने नगर और प्रदेश वापस लौटने का आदेश दिया गया।

37अतः राजा अहाब इस प्रकार मरा। कुछ व्यक्ति उसके शव को शोमरोन ले आए। उन्होंने उसे वहीं दफना दिया। 38लोगों ने अहाब के रथ को शोमरोन में जल के कुंड में धोया। राजा अहाब के खून को रथ से, कुत्तों ने चाटा और वेश्याओं ने पानी का उपयोग नहाने के लिये किया। ये बातें वैसे ही हुईं जैसा यहोवा ने होने को कहा था।

39अपने राज्यकाल में अहाब ने जो कुछ किया वह "इम्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा है। उसी पुस्तक में राजा ने अपने महल को अधिक सुन्दर बनाने के लिये जिस हाथी-दाँत का उपयोग किया था, उसके बारे में कहा गया है और उस पुस्तक में उन नगरों के बारे में भी लिखा गया है जिसे उसने बनाया था। 40अहाब मरा, और अपने पूर्वजों के पास दफना दिया गया। उसका पुत्र अहव्याह राजा बना।

यहूदा का राजा यहोशापात

41इम्राएल के राजा अहाब के राज्यकाल के चौथे वर्ष यहोशापात यहूदा का राजा हुआ। यहोशापात आसा का पुत्र था। 42यहोशापात जब राजा हुआ तब वह पैंतीस वर्ष का था। यहोशापात ने यरूशलेम में पच्चीस वर्ष तक राज्य किया। यहोशापात की माँ का नाम अजूबा था। अजूबा शिल्ही की पुत्री थी। 43यहोशापात अच्छा व्यक्ति था। उसने अपने पूर्व अपने पिता के जैसे ही काम किये। वह उन सबका पालन करता था जो यहोवा चाहता था। किन्तु यहोशापात ने उच्च स्थानों को नष्ट

नहीं किया। लोगों ने उन स्थानों पर बलि-भेंट करना और सुगन्धि जलाना जारी रखा।

44यहोशापात ने इज़्राएल के राजा के साथ एक शान्ति-सन्धि की। 45यहोशापात बहुत वीर था और उसने कई युद्ध लड़े। जो कुछ उसने किया वह, “यहूदा के राजाओं के इतिहास” नामक पुस्तक में लिखा है। 46यहोशापात ने उन स्त्री पुरुषों को, जो शारीरिक सम्बन्ध के लिये अपने शरीर को बेचते थे, पूजास्थानों को छोड़ने के लिये विवश किया। उन व्यक्तियों ने उन पूजास्थानों पर तब सेवा की थी जब उसका पिता आसा राजा था।

47इस समय के बीच एदोम देश का कोई राजा न था। वह देश एक प्रशासक द्वारा शासित होता था। प्रशासक यहूदा के राजा द्वारा चुना जाता था।

यहोशापात का समुद्री बेड़ा

48राजा यहोशापात ने ऐसे जहाज बनाए जो महासागर में चल सकते थे। यहोशापात ने ओपीर प्रदेश में जहाजों को भेजा। वह चाहता था कि जहाज सोना लाएँ। किन्तु जहाज एशयोनगेबेर में नष्ट हो गए। जहाज कभी सोना प्राप्त करने में सफल न हो सके। 49इज़्राएल का राजा अहज्याह यहोशापात को सहायता देने गया। अहज्याह

ने यहोशापात से कहा था कि वह कुछ ऐसे व्यक्तियों को उनके लिये प्राप्त करेगा जो जहाजी काम में कुशल हों। किन्तु यहोशापात ने अहज्याह के व्यक्तियों को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया।

50यहोशापात मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। वह दाऊद नगर में अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। तब उसका पुत्र यहोराम राजा बना।

इज़्राएल का राजा अहज्याह

51अहज्याह अहाब का पुत्र था। वह राजा यहोशापात के यहूदा पर राज्यकाल के सत्रहवें वर्ष में राजा बना। अहज्याह ने शोमरोन में दो वर्ष तक राज्य किया। 52अहज्याह ने यहोवा के विरुद्ध पाप किये। उसने वे ही पाप किये जो उसके पिता अहाब उसकी माँ ईज़ेबेल और नबात के पुत्र यारोबाम ने किये थे। ये सभी शासक इज़्राएल के लोगों को और अधिक पाप की ओर ले गए। 53अहज्याह ने अपने से पूर्व अपने पिता के समान असत्य देवता बाल की पूजा और सेवा की। अतः अहज्याह ने यहोवा, इज़्राएल के परमेश्वर को बहुत अधिक क्रोधित किया। यहोवा अहज्याह पर वैसा ही क्रोधित हुआ जैसा उसके पहले वह उसके पिता पर क्रोधित हुआ था।

Bible League International and its Global Partners provide Scriptures for millions of people who still do not have the life-giving hope found in God's Word. Every purchase of an Easy-to-Read Translation™ enables the printing of a Bible for a person who needs God's Word somewhere in the world. To provide even more Scriptures for more people, please make a donation at www.bibleleague.org/donate or contact us at Bible League International, 1 Bible League Plaza, Crete, IL 60417, USA. Bible League International exists to develop and provide Easy-to-Read Bible translations and Scripture resources for churches and partners as they help people meet Jesus.

Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™)

© 1995 Bible League International

Maps, Illustrations © Bible League International

Additional materials © Bible League International

All rights reserved.

This copyrighted material may be quoted up to 1000 verses without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. This copyright notice must appear on the title or copyright page:

Taken from the Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™) © 1995 Bible League International and used by permission.

When quotations from the ERV are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials (ERV) must appear at the end of each quotation. Requests for permission to use quotations or reprints in excess of 1000 verses or more than 50% of the work in which they are quoted, or other permission requests, must be directed to and approved in writing by Bible League International.



Bible League International

1 Bible League Plaza

Crete, IL 60417, USA

Phone: 866-825-4636

Email: permissions@bibleleague.org

Web: www.bibleleague.org

B-HIN-89800: ISBN: 978-1-935189-80-0

B-HIN-89992: ISBN: 978-1-935189-99-2

B-HIN-07536: ISBN: 978-1-61870-753-6

B-HIN-61738-POD: ISBN: 978-1-62826-173-8

Free downloads: www.bibleleague.org/downloads

